ज्ञानाञ्जलि

2018-19

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय

बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर (उ.प्र.)

नैक द्वारा 'बी'- ग्रेड प्रमाणित

ISO 9001 - 2015 Certified

सम्बद्ध : चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

महाविद्यालय परिवार

प्रथम पंक्ति में दांए से बांए : डॉ. शिवानी वर्मा, डॉ. रतन सिंह, डॉ. अनीता सिंह, डॉ. निधि रायजादा, डॉ. किशोर कुमार, डॉ. दिनेश चन्द शर्मा, डॉ. रश्मि कुमारी, डॉ. दिव्या नाथ (प्राचार्या), डॉ. अर्चना सिंह, डॉ. दीप्ति वाजपेयी, डॉ. जीत सिंह डॉ. हरिन्द्र कुमार, डॉ. धीरज कुमार, डॉ. संजीव कुमार, डॉ. अरविन्द सिंह

द्वितीय पंक्ति में दांए से बांए : डॉ. सतीश चन्द, डॉ. सत्यन्त कुमार, डॉ. कनक कुमार, डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार, डॉ. बलराम सिंह डॉ ऋचा, डॉ. भावना यादव, श्रीमती नेहा त्रिपाठी, डॉ. शालिनी तिवारी, डॉ. मणि अरोड़ा, डॉ. सुशीला, श्रीमती पवन, डॉ. माधुरी पाल, डॉ. श्वेता सिंह, डॉ. मीनाक्षी लोहनी, श्रीमती शिल्पी, डॉ. मिन्तु बंसल, डॉ. प्रतिभा तोमर, डॉ. विनीता सिंह, डॉ. नीलम शर्मा, मो. वकार रजा, डॉ. सीमा देवी, डॉ. जूही विरला, श्रीमती दीक्षा, डॉ. बबली अरूण

शिक्षणेत्तर कर्मचारी वर्ग

प्रथम पंक्ति में दांए से बांए : श्री मुकेश शर्मा, डॉ. दिव्या नाथ (प्राचार्या), श्री महेश भाटी

द्वितीय पंक्ति में दांए से बांए : श्री माधव श्याम केसरवानी, श्री अभिषेक कुमार, श्री चन्द प्रकाश

ज्ञानाञ्जलि

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय

बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर (उ.प्र.)

नैक द्वारा 'बी'–ग्रेड प्रमाणित

अंक – द्वादश

वर्ष – 2019

प्रधान सम्पादक
डॉ. दीप्ति वाजपेयी

संरक्षक
डॉ. दिव्या नाथ
प्राचार्या

:: सम्पादक मण्डल ::

डॉ. निधि रायज़ादा
श्रीमती नेहा त्रिपाठी
डॉ. अरविन्द यादव
डॉ. मीनाक्षी लोहनी
श्रीमती दीक्षा
डॉ. मिन्तु बंसल
डॉ. विजेता गौतम
डॉ. नीलम शर्मा

:: छात्रा सम्पादक मण्डल ::

कला संकाय
कु. सुदेश शर्मा, एम.ए. हिन्दी
कु. अपूर्वा, एम.ए. संस्कृत

वाणिज्य संकाय
कु. काजोल गर्ग, बी. कॉम द्वितीय
कु. नेहा नागर, बी. कॉम द्वितीय

विज्ञान संकाय
कु. संचिता चौहान, बी.एस.सी. द्वितीय
कु. खुशबू जादौन, बी.एस.सी. तृतीय

शिक्षा संकाय
कु. श्वेता त्रिपाठी, बी.एड. प्रथम
कु. भावना पाण्डे, बी.एड. द्वितीय

चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्ध

कुल गीत

शस्य श्यामला बादलपुर की हरी भरी उर्वर धरती पर
जन - गण मंगल करने के हित, विद्या दीप जलाया है।

गंगा यमुना की धारायें इसके तट पावन करती
मुक्त प्रदूषण शीतल छाया, तन मन को पुलकित करती
शान्ति समन्वय नैतिकता हित ज्ञान का दीप जलाया है।
शस्य श्यामला.....

खेत-खेत क्यारी-क्यारी में, नित्य नया जीवन भरती
श्रम सीकर सिंचित यह माटी चन्दन सा जग महकाती
बाल पुष्प का सौरभ माटी चन्दन अगरु जलाया है
शस्य श्यामला.....

इसका है इतिहास निराला गाथा गायन अलबेला
मिहिर भोज की कीर्ति कथा से इसका मस्तक गर्वीला
आगत भी है परम्परागत विद्या दुर्ग सजाया है।
शस्य श्यामला.....

आजादी के प्रथम युद्ध की साक्षी है पावन धरती
बुद्ध तथागत की करुणा भी ममता का संचय करती
समरस की सुन्दर संध्या में रंजन द्वीप जलाया है।
शस्य श्यामला.....

भव्य भारती के पदतल में करें अर्चना करें नमन
रमा विजय श्री मिले सभी को, जितेन्द्रिय सब बने युवा जन
ज्ञान सूर्य से मिटे तिमिर सब, ज्योतिर्पुंज जलाया है।
शस्य श्यामला.....

ऊर्जा बौद्धिकता मानवता शुचिता पावनता और सृजन
विद्या मन्दिर बादलपुर का आओ कर लें अभिनन्दन
विद्या हर घर-घर तक पहुँचे ज्ञान का शंख बजाया है।
शस्य श्यामला.....

अनुक्रमणिका

गद्याञ्जलि

सैलानियों ने बदली सोच	कल्पना कुमारी, बी.ए. तृतीय	8
तीन लोग	शीतल रानी, बी.ए. प्रथम	9
उड़ान	कोमल नागर, बी.ए. द्वितीय	10
बेटियाँ	राखी नागर, बी.कॉम तृतीय	12
राहुल की कहानी	राखी नागर, बी.कॉम तृतीय	14
जहरीला पौधा	अंशु शर्मा, बी.कॉम तृतीय	15
गलती का एहसास	आरती रानी, बी.ए. द्वितीय	15
मयूरी-तड़प से तपस्या तक	कविता नागर, बी.ए. प्रथम	16
दूसरों के दुख	रिंकी, बी.कॉम तृतीय	17
बेटे की चाह	निशा शर्मा, बी.कॉम तृतीय	18
भूख मिटाने में डूबता बचपन	मधु कुमारी, बी.एड. प्रथम वर्ष	19
काव्येषु नाटकं रम्यम्	मोनिका सिंघल, बी.ए. द्वितीय	21
वृक्षारोपण	काजल नागर, बी.ए. द्वितीय	24
वेदानां महत्त्वम्	शीतल, एम.ए.द्वितीय सेमेस्टर	25
भारतीय संस्कृति	अंजली नागर, बी.ए. तृतीय	26
वेदाङ्गानि	सीमा, बी.ए. तृतीय	29
वर्णा श्रमव्यवस्था	प्रीति, एम.ए. द्वितीय	33
मानवजीवनस्योद्देश्यम्	वैशाली, बी.ए. द्वितीय	34
आचार्यदेवो भव!	आकांक्षा नागर, बी.ए. प्रथम	35
मानो हि महतां धनम्	शिल्पा नागर, बी.ए. द्वितीय	36
भाग्यं फलति सर्वत्र	लक्ष्मी, बी.ए. तृतीय	37
शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्	अंशू, बी.ए. प्रथम	38
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्	कविता, बी.ए. द्वितीय	39
Contribution of Women	**Shalu, M.A. IV Sem.**	**42**
Female Foeticide in India	**Sana Parveen**	**43**
How to Make Mind Sharp	**Nisha Rani M.A. IV Sem.**	**44**
The Weight of the Glass	**Priyanka B.A. II Year**	**46**
The Needs and Desires	**Rajni M.A. II Sem.**	**46**

Save Water	**Priyanka M.A. II Sem.**	**47**
Time to Laugh	**Bharti M.A. II Sem.**	**48**
25 Interesting Facts on India	**Priya M.A. II Sem.**	**49**

काव्याञ्जलि

कहाँ गये वो दिन	कोमल, बी.ए. तृतीय	54
गजल	अंजली नागर, बी.ए. तृतीय वर्ष	54
क्या खूब कहा	नेहा राघव, बी.ए. द्वितीय वर्ष	55
मुझे भी हक है	रीना, बी.ए. तृतीय	55
दुनिया का बोझ	प्रियंका, बी.ए. तृतीय	56
बेटियाँ	निशा राघव, बी.ए. तृतीय	56
दुनिया रही न गोल	कु. निशा खान, एम.एम. प्रथम	56
जीवन दर्शन	सुदेश शर्मा, एम.ए. प्रथम	57
एक सुझाव	ज्योति नागर, बी.ए. प्रथम	57
हँसना पड़ता है	शिवानी, बी.कॉम प्रथम	57
संस्कृतस्य सेवनम्	अपूर्वी (संकलनकर्ती) एम.ए. प्रथम	57
भूमिरियं बलिदानस्य	सरिता (संकलनकर्ती) एम.ए. द्वितीय	58
कृत्वा नवदृढसङ्कल्पम्	अपूर्वा (संकलनकर्ती) एम.ए. प्रथम	58
वर्णमालां पठ बाला	कोमल नागर (संकलनकर्ती) बी.ए. प्रथम	59
ऐक्यमन्त्रः	अन्नपूर्णा (संकलनकर्ती) बी.ए. द्वितीय	59
अक्षरमाला	काजल नागर (संकलनकर्ती) बी.ए. द्वितीय	60
देशगीतिका	कल्पना (संकलनकर्ती) बी.ए. तृतीय	60
Poem-Thinking of the World	**Munifa Saifi, B.A. Ist Year**	**61**
Thought for Friendship	**Anshika Sharma, B.A. Ist Year**	**61**
Earth in Danger	**Kanchan Rousa, B.A. Ist Year**	**61**
Jokes Thoughts	**Komal, B.A. Ist Year**	**61**
Value of Time	**Kanchan Rousa, B.A. Ist Year**	**62**

विविधाञ्जलि

वार्षिक आख्या	डॉ. दीप्ति वाजपेयी, एसो.प्रो. संस्कृत	64
हिन्दी परिषद्	डॉ. मिन्तु, असि. प्रो. हिन्दी	67
संस्कृत परिषद्	डॉ. दीप्ति वाजपेयी, परिषद् प्रभारी	67
अंग्रेजी परिषद्	जूही बिरला, परिषद् प्रभारी	69

गृहविज्ञान-परिषद्	श्रीमती शिल्पी, असि. प्रो. गृह-विज्ञान	70
शारीरिक शिक्षा परिषद्	श्री धीरज कुमार, परिषद् प्रभारी	71
इतिहास परिषद्	डॉ. निधि रायजादा, परिषद् प्रभारी	73
अर्थशास्त्र परिषद्	श्रीमती भावना यादव, परिषद् प्रभारी	74
भूगोल परिषद्	डॉ. मीनाक्षी लोहनी, परिषद् प्रभारी	75
राजनीति विज्ञान परिषद्	डॉ. ममता उपाध्याय, एसो.प्रो. राजनीति विज्ञान	76
समाजशास्त्र परिषद्	डॉ. सुशीला, परिषद् प्रभारी	77
शिक्षाशास्त्र परिषद्	डॉ. सोनम शर्मा, प्रभारी परिषद्	78
संगीत परिषद्	डॉ. बबली अरूण, परिषद् प्रभारी	79
चित्रकला परिषद्	श्रीमती शालिनी तिवारी, परिषद् प्रभारी	80
वाणिज्य परिषद्	डॉ. अरविन्द यादव, परिषद् प्रभारी	81
विज्ञान परिषद्	श्रीमती नेहा त्रिपाठी	82
बी.एड. परिषद्	डॉ. रतन सिंह, परिषद् प्रभारी	85
राष्ट्रीय सेवा योजना (प्रथम इकाई)	श्रीमती शिल्पी, कार्यक्रम अधिकारी	86
राष्ट्रीय सेवा योजना (द्वितीय इकाई)	श्रीमती नेहा त्रिपाठी, कार्यक्रम अधिकारी	88
रेंजर्स	डॉ. सुशीला, प्रभारी रेंजर	91
एन. सी. सी.	डॉ. विनीता सिंह, डॉ. मीनाक्षी लोहनी	92
महिला प्रकोष्ठ	डॉ. अर्चना सिंह, प्रभारी	93
पुरातन छात्रा सम्मेलन	डॉ. मिन्तु, प्रभारी	96
निःशुल्क प्रतियोगिता परीक्षा कोचिंग	कनक कुमार, प्रभारी	96
छात्रवृत्ति	डॉ. हरिन्द्र कुमार, सहायक नोडल अधिकारी	96
राष्ट्रीय सेमिनार	डॉ. शिवानी वर्मा, सेमिनार संयोजिका	97
प्रसार व्याख्यान	डॉ. सीमा देवी, प्रभारी	98
इकोरेस्टोरेशन एवं ग्रीन आडिट	डॉ. प्रतिभा तोमर, प्रभारी	98
कैरियर काउन्सलिंग एवं रोजगार प्रकोष्ठ	डॉ. आशा रानी, प्रभारी, श्रीमती शिल्पी, सह-प्रभारी	99
साहित्यिक-सांस्कृतिक परिषद्	डॉ. दीप्ति वाजपेयी, प्रभारी	100
Internal Quality Assurance Cell	**Dr. Kishor Kumar, Co-Convener-IQAC**	**101**
स्वामी विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र	डॉ. किशोर कुमार, समन्वयक	104
राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (रुसा)	डॉ. दिनेश चन्द शर्मा, समन्वयक	105

Vision

To provide low cost quality higher education to the girls students of socio-economically weaker sections of the area, in order to bridge the rural-urban divide and thus bring about holistic national development.

परिकल्पना

इस क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग की छात्राओं को कम लागत पर गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान कर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विभेदों को दूर करते हुए समग्र राष्ट्र का विकास करना।

Mission

As a unit of Uttar Pradesh Government Higher Education, "Kumari Mayawati Govt. Girls Post Graduate College, Badalpur" is engaged in pursuit of academic excellence, in order to achieve the empowerment of women in the adjoining rural area by :

- ***the development of leadership skills, inner strength and self-reliance,***
- ***inculcate moral values and tolerance and***
- ***making new technological innovations available to the target group, in order to prepare them to face national and global challenges.***

संकल्प

उ. प्र. राज्य उच्च शिक्षा की इकाई के रूप में ''कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर'' ग्रामीण अंचल की छात्राओं को गुणवत्तायुक्त उच्च शिक्षा प्रदान कर निम्न बिन्दुओं के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को यथार्थ स्वरूप प्रदान करने हेतु कृत संकल्प है–

- **छात्राओं में मनोबल, आत्मनिर्भरता एवं नेतृत्व क्षमता का विकास करना।**
- **उनमें नैतिक मूल्यों का विकास कर सहिष्णुता की भावना विकसित करना।**
- **नवीन तकनीकी एवं नवाचारों के माध्यम से छात्राओं में राष्ट्रीय एवं वैश्विक चुनौतियों का सामना करने की क्षमता विकसित करना।**

राम नाईक
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

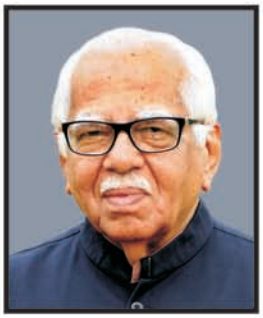

सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ – 226 027

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि कु. मायावती गवर्नमेन्ट गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, बादलपुर, गौतमबुद्धनगर द्वारा वार्षिक पत्रिका **'ज्ञानाञ्जलि'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय की पत्रिकाएं विद्यार्थियों की प्रतिभा एवं कौशल की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम होती हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित पाठ्य सामग्री विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्द्धक, प्रेरक, रोचक एवं उपयोगी होगी।

पत्रिका **'ज्ञानाञ्जलि'** के सफल प्रकाशन के लिये मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(राम नाईक)

डॉ. दिनेश शर्मा

उप मुख्यमंत्री एवं
नेता, सदन, विधान परिषद् उ.प्र.

99–100, विधान भवन,
लखनऊ

सन्देश

यह हर्ष का विषय है कि कु. मायावती गवर्नमेन्ट गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, बादलपुर, गौतमबुद्धनगर द्वारा वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। ऐसी पत्रिकाएं न केवल विद्यालयों की शैक्षिक, सांस्कृतिक, खेलकूद आदि गतिविधियों का प्रतिबिम्ब होती है बल्कि जन–जागरण एवं विचारों के माध्यम से सामाजिक समरसता के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका का निवर्हन भी करती है।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि उक्त पत्रिका के प्रकाशन से छात्राओं की वैचारिक क्षमता एवं रचनाशीलता को गति प्राप्त होगी साथ ही उनकी विशिष्ट प्रतिभाओं को उभारने तथा सर्वांगीण विकास के लिए उपयोगी भी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

(डॉ. दिनेश शर्मा)

डॉ. दिव्या नाथ जी
प्राचार्य
कु. मायावती गवर्नमेन्ट गर्ल्स
पी.जी. कॉलेज, बादलपुर, गौतमबुद्धनगर।

डॉ. प्रीति गौतम
निदेशक, उच्च शिक्षा

उच्च शिक्षा निदेशालय
उ. प्र. इलाहाबाद
0532–2623874 (का.)
0532–2423919 (फैक्स)
0532–2256785 (आ.)
9411036685 (मो.)

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर गौतम बुद्ध नगर द्वारा वार्षिक पत्रिका **"ज्ञानाञ्जलि"** का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय की पत्रिका के प्रकाशन से छात्र–छात्राओं के नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के विकास तथा रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने का अवसर प्राप्त होता हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि महाविद्यालय की छात्र–छात्राएँ अपने लेखों, कविताओं, कहानियों आदि के माध्यम से अपने देश की स्वस्थ परम्पराओं से जुड़ने का प्रयास करेंगी।

आशा है कि सार्थक लेखों के संग्रह के द्वारा वार्षिक पत्रिका छात्र–छात्राओं के लिये प्रेरणा स्रोत के रूप में स्थापित होगी तथा उनके लिये पथ–प्रदर्शक का कार्य करेगी। साथ ही, मैं इस अवसर पर वार्षिक पत्रिका **"ज्ञानाञ्जलि"** को प्रकाशित करने के लिए महाविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ।

डॉ. (प्रीति गौतम)

प्राचार्य,
कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बादलपुर (गौतमबुद्ध नगर)

राजेन्द्र कुमार तिवारी
आई. ए. एस.
अपर मुख्य सचिव

उत्तर प्रदेश शासन
माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग
29, नवीन भवन, उ.प्र. सचिवालय
लखनऊ–226001
दूरभाष : 0522–2238020 (का.)
दिनांक 17–03–2018

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि कु. मायावती राजकीय महिला (पी.जी.) कॉलेज, बादलपुर, गौतमबुद्धनगर द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी एक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

शिक्षक विद्यार्थियों को एक कुशल मार्गदर्शक की तरह सर्वोत्तम शिक्षा देकर उन्हें एक अच्छा डॉक्टर, इंजीनियर, न्यायिक एवं प्रशासनिक अधिकारी बनाने के साथ-साथ एक अच्छा नागरिक भी बनने की प्रेरणा देता है ताकि वह समाज को सही दिशा में ले जाने हेतु अग्रसर हो। उत्तम शिक्षा के माध्यम से ही प्रदेश एवं देश का सुनियोजित विकास एवं भविष्य निर्धारित होता है।

मैं कु. मायावती राजकीय महिला (पी.जी.) कॉलेज, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर की प्रबन्ध समिति सहित समस्त शिक्षक एवं छात्राओं को बधाई देते हुए वार्षिक पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

राजेन्द्र कुमार तिवारी
अपर मुख्य सचिव

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय

मेरठ - 250 004 (उ.प्र.)

प्रो. नरेन्द्र कुमार तनेजा
पी–एच.डी. (अर्थशास्त्र)
कुलपति

सन्देश

जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर (गौतमबुद्ध नगर) द्वारा महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **"ज्ञानाञ्जलि"** का प्रकाशन किया जा रहा है। विश्वास है कि यह पत्रिका छात्राओं को सृजनात्मक प्रतिभा के निखार का अवसर प्रदान करने के साथ–साथ ज्ञानोपयोगी लेखों को प्रकाशित करेगी। महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की दिशा में किया जा रहा यह प्रयास सराहनीय है।

महाविद्यालय परिवार को पत्रिका प्रकाशन करने हेतु शुभकामनायें।

नरेन्द्र तनेजा

(एन. के. तनेजा)

प्राचार्या - डॉ. दिव्या नाथ

समन्वेषी, कर्मठ एवं सौम्य व्यक्तित्व की धनी

प्राचार्या की कलम से

"भीड़ हमेशा आसान रास्ते पर चलती है, पर जरूरी नहीं वो सही है। अपने रास्ते खुद चुनिए, आपको आपसे बेहतर कोई नहीं जानता।"

आज समस्त विश्व एक भूमण्डलीय गाँव में परिवर्तित हो चुका है, जिससे अलग-अलग संस्कृतियों का एक मिश्रित स्वरूप प्राय: हर देश में दिखाई देने लगा है। एक ओर तकनीकी शिक्षा, नौकरियों तथा पर्यटन के क्षेत्र में लाभदायक है, वही समाज में तेजी से भौतिकवाद के पनपने से आज की युवा पीढ़ी में सच्चाई, ईमानदारी, व देशभक्ति की भावना का लोप हो रहा है। यह सत्य है कि जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हमें निरन्तर प्रयास करते रहने की आवश्यकता है। परन्तु यही हमारा अंतिम लक्ष्य हो जाये तो जीवन को सही अर्थ में जीने एवं उसे सफल बनाने की प्रक्रिया बाधित हो जाती है। अत: आज हर भारतीय और विशेषकर युवा वर्ग को अपने जीवन के उद्देश्य को समझने नैतिक मूल्यों को अक्षुण्ण रखने, चरित्र निर्माण करने एवं सहिष्णुता की भावना को विकसित करने की आवश्यकता है। जिससे वह भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों पहलुओं के बीच सही सांमजस्य स्थापित कर सकें।

कु. मायावती राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर के आस-पास की छात्राओं को न केवल गुणवत्ता युक्त उच्च शिक्षा प्रदान करने के क्षेत्र में पिछले 22 वर्षो से निरन्तर नए पाठ्यक्रम आरम्भ करता आ रहा है, वरन् सर्वागीण विकास सुनिश्चित करने के क्षेत्र में नई शिक्षा पद्धतियाँ एवं सुविधाओं में नवाचार लाने हेतु कृत संकल्प रहा है। वर्तमान सत्र से एम.एस.सी जन्तु विज्ञान, तथा यू.जी.सी. द्वारा अनुदानित दो नए बी. वॉक पाठ्यक्रम, मल्टीपरपस हॉल का नवीनीकरण, मेन्टरिंग की पद्धति, डे-केयर की स्थापना, सेनेट्री पैड वेडिंग मशीन, ग्रीन आडिट तथा अनेकों संस्थाओं से एमओयू पर हस्ताक्षर, उपर्युक्त कथन का साक्षात प्रमाण है। अगला लक्ष्य नैक द्वारा मूल्याकंन के द्वितीय चक्र में महाविद्यालय का श्रेष्ठ प्रदर्शन करने का है।

महाविद्यालय को निरन्तर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर करने में विद्यार्थियों, प्राध्यापकों, अभिभावकों, एवं प्रशासन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, तथा सबके सम्मिलित एवं सतत् प्रयास से ही अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति संभव है। महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्य अपने-अपने दायित्वों का ससमय अनुपालन करते रहेंगे तो सुपरिवर्तन शीघ्र ही परिलक्षित होने लगेगा।

महाविद्यालय की अभी तक की यात्रा निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर रही है और आशा करती हूँ कि समस्त विद्वान प्राध्यापकों, कुशल कर्मचारियों, अनुशासित छात्राओं एवं क्षेत्रीय नागरिकों के जिस सहयोग से यह सम्भव हो सका है, वह सहयोग हमें भविष्य में भी प्राप्त होता रहेगा।

शैक्षिक संस्थाओं की पत्रिका छात्राओं की अभिव्यक्ति क्षमता को परिभाषित करने का साधन होती है तथा वर्ष भर की उपलब्धियों का भी संकलित स्वरूप होती है। इस साहित्यिक अनुष्ठान में प्रधान सम्पादक डॉ. दीप्ति वाजपेयी एवं उनके सम्पादक मण्डल की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सराहनीय है। मैं समस्त महाविद्यालय परिवार को शुभकामनाएँ एवं बधाई देते हुये, आप सबके उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

–डॉ. दिव्या नाथ
प्राचार्या

सम्पादकीय

"विश्वदानी सुमनसः स्याम, पश्येत तु सूर्यमुच्चरन्तम्"

अर्थात् **"हम प्रसन्नचित्त होकर उदीयमान सूर्य को देखे"**। भारतीय संस्कृति वस्तुतः आशावादी, आध्यात्मिकता से परिपूर्ण एवं उच्चादर्शो से युक्त संस्कृति है। भारत अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए विश्व प्रसिद्ध रहा है। हमारी संस्कृति ही हमारी पहचान है किन्तु सूचना-प्रौद्योगिकी के युग में ज्ञान के विस्फोट ने मानव समाज एवं राष्ट्र के सम्मुख अनेक चुनौतियों को उत्पन्न किया है। भारतीय संस्कृति भी इससे अस्पृश्य नहीं है।

भूमण्डलीकरण के वर्तमान परिदृश्य में हमारे सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यों, आस्थाओं एवं मान्यताओं में अभूतपूर्व परिवर्तन किया है। इन परिवर्तनों का प्रभाव शिक्षा जगत पर स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो रहा है। शिक्षा मानव व्यक्तित्व के निर्माण में विनियोजन तथा व्यक्ति के माध्यम से समाज व राष्ट्र के निर्माण एवं विकास की आधारशिला है। यह सर्वमान्य सत्य है कि ज्ञान-विज्ञान तथा वैश्वीकरण के इस दौर में एक शक्तिशाली एवं सर्वांग विकसित राष्ट्र के निर्माण में सर्वाधिक निर्णायक भूमिका शिक्षा जगत की ही है।

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर उपर्युक्त चुनौतियों का सामना करते हुए अपनी संस्कृति एवं मूल्यों के पुनर्स्थापन एवं राष्ट्र की प्रगति में अपना योगदान सुनिश्चित करने हेतु कृत संकल्प है। महाविद्यालय नवोन्मेष एवं नवाचारों को अध्यापन में समाहित करते हुए गुणवत्तायुक्त उच्च शिक्षा प्रदान कर विभिन्न पाठ्यसहगामी क्रियाओं के माध्यम से छात्राओं में मूल्यों के आरोपण, उनकी रचनात्मकता एवं प्रतिभा के संवर्धन तथा उन्हें समाज व राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यों के निर्वहन योग्य बनाने हेतु विभिन्न माध्यम प्रदान करता है। महाविद्यालय पत्रिका ज्ञानाञ्जलि ऐसा ही एक माध्यम है, जिसके द्वारा छात्रायें अपनी प्रच्छन्न प्रतिभाओं, क्षमताओं एवं कौशलों में अभिवृद्धि कर पाने में समर्थ होती है।

ज्ञानाञ्जलि का यह द्वादश अंक सन् 2018-19 की विभिन्न गतिविधियों की इन्द्रधनुषी आभा अपने अन्दर समेटे हुए है।

मैं महामहिम राज्यपाल, श्री राम नाईक, माननीय उच्च शिक्षा मंत्री, डॉ. दिनेश चन्द शर्मा, अपर मुख्य सचिव, श्री राजेन्द्र कुमार तिवारी, आदरणीय शिक्षा निदेशक, उच्चशिक्षा डॉ. प्रीति गौतम एवं सम्मानित कुलपति महोदय, प्रो.एन.के. तनेजा का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके शुभकामना संदेशों ने पत्रिका का मानवर्धन करने के साथ-साथ हमारे मनोबल में द्विगुणित वृद्धि की है।

महाविद्यालय को उन्नति के पथ पर ले जाने हेतु हर छोटे-बड़े कार्य में जिनकी लगनशीलता एवं दूर दृष्टि महाविद्यालय की यश-सुरभि में दिनोदिन वृद्धि करने की सामर्थ्य रखती है, ऐसी कर्मठ, लगनशील एवं बहुमुखी प्रतिभा की धनी प्राचार्या महोदया के प्रति असीम कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। आपकी लगनशीलता हम सभी के अन्दर निःसंदेह एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है।

अपने सम्पादक मंडल के सभी साथी सदस्यों की हार्दिक आभारी हूँ, पत्रिका सम्पादन जैसे दुरूह कार्य में जिनके सर्वोत्तम योगदान ने पत्रिका की गुणवत्ता को बनाये रखा है। साथ ही महाविद्यालय परिवार के अन्य सभी सदस्यों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके अमूल्य सुझावों द्वारा पत्रिका को उत्कृष्ट स्वरूप प्रदान किया जा सका।

ज्ञानाञ्जलि को अपनी रचनात्मकता से परिपूर्ण करने वाली छात्रायें शुभाशीष की पात्र है। आगामी सत्रों में रचनात्मकता का यह क्रम अपने श्रेष्ठ स्वरूप में आकार ले सके एवं हमारा अध्ययन-अध्यापन तेजस्विता से पूर्ण हो **"तेजस्विनावधीतमस्तु"** इति शुभेच्छा।

–डॉ. दीप्ति वाजपेयी
प्रधान सम्पादिका

गद्याञ्जलि

सैलानियों ने बदली सोच

कल्पना कुमारी
बी.ए. तृतीय

मैं बनारस से लखनऊ जा रहा था साफ-सुथरी ट्रेन निर्धारित समय पर चली। काफी अच्छा लग रहा था कि ट्रेन में सफाई है, उससे ऐसा प्रतीत हो रहा था, कि मोदी जी का स्वच्छ भारत अभियान सफल हो रहा है। लोग जागरूक हो रहे हैं, मैं ये सोच ही रहा था कि एक सज्जन ने मूँगफली निकाली और खाना चालू कर दिया। ट्रेन का डिब्बा मूँगफली के बिखरे छिलके से गंदा हो गया। मेरे मना करने पर कि अंकल छिलके फेंक कर डिब्बे को गंदा मत कीजिए वे सज्जन मुझ पर क्रोधित हुए और बोले मैं तुम जैसे को रोज ज्ञान देता हूँ।

वह सज्जन इण्टर कॉलेज में अध्यापक थे अभी ट्रेन मुश्किल से 3-4 स्टेशन ही आगे बढ़ी थी कि पूरी ट्रेन पॉलीथिन खाद्य सामग्री के पाँऊच फल और मूँगफली के छिलकों व गुटखों के रैपर्स से कचरामय हो गई। मुझे लगा कि स्वच्छता की मेरी सोच और प्रधानमंत्री जी का प्रयास सब व्यर्थ है!

कब सुधरेंगे हम और सुधरेगा हमारा देश! मेरे मन में यह उधेड़बुन चल रही थी। कि ट्रेन अयोध्या स्टेशन पहुँच गयी उस स्टेशन से एक अंग्रेज जोड़ा अपने 5-6 साल के बच्चे के साथ ट्रेन पर चढ़ा ट्रेन ने रफ्तार पकड़ी कि थोड़ी देर बाद उस बच्चे की माँ ने उसे एक चॉकलेट खाने को दी! उस छोटे बच्चे ने चॉकलेट खाने के बाद रैपर को माँ को दिया। माँ ने चॉकलेट खाने के बाद रैपर को इधर-उधर न फेंक कर अपनी जेब में रख लिया। यह देखकर वहाँ बैठे सभी यात्रियों की आँखें खुली की खुली रह गई। यहाँ तक कि अंग्रेज जोड़े ने भी चाय पी और चाय के गिलासों और नमकीन के खाली पाउच को भी ट्रेन में या ट्रेन के बाहर न फेंक कर अपने बैग में रख लिया।

यह घटना मूँगफली के छिलके फैलाने वाले सज्जन के लिए बड़ा सबक थी। अंग्रेज जोड़े की सफाई के प्रति सजगता देखकर वे शिक्षक महोदय शर्म से पानी पानी हो गए। मुझे लगा कि शायद यह घटना उनके लिए बहुत बड़ी सीख हो सकती है, और ऐसा हुआ था। अगले स्टेशन पर उन्होंने भी चाय पीने के बाद चाय के गिलास को अपने झोले में थोड़ा सकुचाते हुए रखा। अब वे मुझसे नजर नहीं मिला पा रहे थे। यह बदलाव उनमें एक विदेशी नागरिक की सफाई के प्रति सजगता से आया था। अब शायद उनके मन में भी यह विचार चल रहा होगा कि जब एक दूसरे देश का नागरिक भी सफाई के प्रति सजगता से आकर देश आकार स्वच्छता का ख्याल रख सकता है तो हम क्यों नहीं।

हम सब पढ़े लिखे होने के बावजूद अपनी शिक्षा को अपने दैनिक जीवन में क्यों नहीं उपयोग करते हैं। क्या कठिन परिश्रम से अर्जित की गई शिक्षा केवल नौकरी पाकर पैसा कमाने तक ही सीमित है। देश के प्रति आखिर हम कब अपना नजरिया बदलेगे। कब तक केवल अपने नौकरी पाकर पैसा कमाने तक ही सीमित है! आखिर हम कब अपना नजरिया बदलेगे। कब तक केवल अपने बारे में ही सोचते रहेगे। अपने देश के प्रति हमारा कोई कर्त्तव्य नहीं है मैं सभी से कहना चाहती हूँ कि पहले हमें अपने नैतिक मूल्यों और देश के प्रति फर्ज अदा करने होंगे और सब जब मिलकर इस सोच को स्वीकार करेंगे तब ही कोई बदलाव आएगा। सिर्फ स्वच्छता अभियान ही नहीं, देश हित में कोई भी सकारात्मक बदलाव तब ही हो सकता है, जब हम सब मिलकर प्रयत्न करेगे, सरकार अकेले कोई सुधार या बदलाव कभी नहीं ला सकती।

तीन लोग

शीतल रानी
बी.ए. प्रथम

एक बार एक लड़की अपने दफ्तर का काम खत्म कर घर को जा रही थी। वह अपने काम में इतना लीन हो गयी कि उसे ध्यान ही नहीं रहा वह कितना लेट हो गयी है। वह लड़की लगभग 10:30 बजे रात के बाद वहाँ से घर को चली। वह लड़की रास्ते पर पहुँची और वहाँ फुटपाथ पर खड़ी होकर ऑटो का इन्तजार कर रही थी। 15 या 20 मिनट इंतजार करते करते उसने एक लड़के को वहाँ देखा! वह लड़का उस लड़की से लगभग 100 मीटर की दूरी पर खड़ा था। उस लड़की ने देखा की वह लड़का उसकी तरफ आ रहा है। अचानक उस लड़के की नजर उस लड़की पर पड़ी। लड़की को बड़ा ही डर लगने लगा। उस सुनसान रास्ते पर और कोई भी नहीं था। कुछ देर देखते-देखते वह लड़का उस लड़की की तरफ को आने लगा। वह लड़की और भी ज्यादा डरने लगी जैसे ही वह लड़का उस लड़की के समीप आया तो लड़की पीछे को होने लगी। तभी वह लड़का उस लड़की से बोला "बहन! आप डरो नहीं! आप मेरे लिए एक मौका नहीं बल्कि मेरी अमानत हो। मैं यहाँ से आपको छोड़कर तब तक नहीं जाऊंगा जब तक आपको सुरक्षित ऑटो में न बैठा दूँ!"

दोनों साथ खड़े रहे! कुछ समय बाद उन्होंने देखा कि एक आटो वाला उनकी तरफ आ रहा है। लड़के ने उस ऑटो वाले को रोका और कहा "भाई जी! आप इन्हें वहाँ छोड़ देंगे जहाँ ये जाना चाहती हैं!" आटो वाले ने कहा ठीक है।

वह लड़की ऑटो में बैठ गयी और वह ऑटो वाले का चेहरा देखकर थोड़ा डर सी गई क्योंकि ऑटो वाले कि थोड़ी मूछ दाढ़ी बढ़ी हुई थी जिससे वह थोड़ा अजीब सा लग रहा था। उसे देख वह लड़की फिर से डरने लगी। उस ऑटो वाले ने शीशे में देख उस लड़की से कहा कि "बेटी क्या हुआ? तुम इतना काँप क्यों रही हो? बेटी तुम डरो मत मैं तुम्हारे पिता के समान हूँ और मैं अपनी इस बेटी को सुरक्षित पहुँचाऊगा" उस लड़की को थोड़ी राहत मिली। वह अपने घर की गली तक पहुँच गयी परंतु गली पतली होने के कारण ऑटो उसके घर तक नहीं जा सकता था वह अपने घर से लगभग 200 मीटर दूर ही ऑटो से उतर गयी। ऑटो वाले को पैसे दिये और अपने घर को चल दी। गली इतनी सुनसान थी कि वह लड़की फिर से डरने लगी। तभी उस लड़की को एक गोल गप्पे वाला उस लड़की के पास को चला। लड़की फिर थोड़ा डरने लगी तभी गोल गप्पे वाला बोला "बेटी! तुम कहाँ रहती हो? मेरे साथ चलो मैं तुम्हें तुम्हारे घर तक छोड़ दूँगा। तुम शायद थोड़ा डर सी रही हो" लड़की को राहत मिली और वह गोल गप्पे वाले के साथ चल दी।

ऐसे एक लड़की अपने घर सुरक्षित पहुँच गयी। हमारे देश को आज जरूरत है इन तीनों लोगों की जिन्होंने इस लड़की की सहायता की। जिस दिन देश को ये तीन लोग मिल जायेगे उस समय दिन हमारा देश एक बहुत अच्छा देश बन जायेगा।

उड़ान

कोमल नागर

बी.ए. द्वितीय

"उड़ान" नामक शीर्षक की कहानी एक ऐसी लड़की की कहानी है, जो गम्भीर परिस्थितियों का सामना करके अपने लक्ष्य तक पहुँचती है।

ये विपरीत स्थितियाँ हम आम लोगों के लिये पार करना आसान है लेकिन एक ऐसी लड़की जिसे हम Acid victim के नाम से जानते हैं उनके लिए इन विपरीत परिस्थितियों का सामना करके अपने लक्ष्य तक पहुँचना इतना आसान काम नहीं है, फिर भी ये लड़की हिम्मत ना हारते हुए अपने लक्ष्य को पाती है।

चेहरा जिसे देखकर हम खुश होते हैं। समाज में लड़कियों की जो खूबसूरती बताई जाती है वो है चेहरे की। लड़कियों को ज्यादातर इसी खूबसूरती को सजाने सँवारने पर ध्यान देने के लिये कहा जाता है लेकिन लड़कियों की खूबसूरती को कई बार एक ऐसे कुण्ठित मानव की नजर लग जाती है, जिससे वो अपने आपको उससे बचाने में असफल हो जाती है। इस कहानी का मुद्दा एक ऐसे कुण्ठित मानव की सोच को भी प्रदर्शित करता है, जिसके अन्दर सभी मानवीय मूल्यों की समाप्ति हो जाये जो किसी भी लड़की की जिन्दगी मौत से भी बदतर बनाने में जरा सा भी नहीं झिझकता। और एक लड़की को जिन्दगी भर एक ऐसा दर्द देता है जो शायद जिन्दगी भर ठीक न हो।

पात्र

लक्ष्मी अग्रवाल	:	नायिका
पिता	:	रमेश अग्रवाल काल्पनिक नाम
माता	:	सरिता अग्रवाल
मुकेश	:	खलनायक

लक्ष्मी कक्षा 10 की छात्रा थी। उस समय लक्ष्मी एक होनहार लड़की थी। लक्ष्मी थोड़े शर्मीले स्वभाव की लड़की थी। हर लड़की की तरह लक्ष्मी के कुछ सपने थे। वह अपने उन्हीं सपनों को साकार करने के लिये कड़ी मेहनत करती थी। घर में सब उसे बहुत प्यार करते थे। लक्ष्मी रोज घर से स्कूल और स्कूल से घर जाती। लक्ष्मी की एक सहेली थी नीता। लक्ष्मी नीता के घर कभी-कभी जाया करती थी। दोनों में काफी मेल-जोल था। वहीं नीता का एक भाई मुकेश था जो मन ही मन लक्ष्मी को पसन्द करता था। रोज लक्ष्मी को देखकर मन ही मन खुश होता रहता था। एक दिन मुकेश ने इस बात को लक्ष्मी को बताने की सोची कि वह लक्ष्मी को बतायेगा कि वह उससे कितना प्रेम करता है। अपनी सोच के अनुसार उसने ऐसा ही किया। एक दिन लक्ष्मी जब स्कूल से घर जा रही थी तो मुकेश ने लक्ष्मी को रोककर अपने प्रेम का प्रस्ताव लक्ष्मी के सामने रखा, लेकिन लक्ष्मी ने मुकेश के प्रेम प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया क्योंकि लक्ष्मी को अपने सपने पूरे करने थे और वैसे भी मुकेश लक्ष्मी से 15 साल बड़ा था और लक्ष्मी सिर्फ 16 की थी उस समय। मुकेश को यह बात सुनकर थोड़ा आघात पहुँचा। लक्ष्मी जब घर आई तो उसने इस बारे में किसी से कोई बात नहीं की। क्योंकि लक्ष्मी यह अच्छी तरह जानती थी कि यदि वह कुछ बतायेगी तो उसका स्कूल छुड़वा दिया जायेगा क्योंकि हमारे समाज की सोच कुछ ऐसी ही है। हमारे समाज का ताना बाना ही कुछ ऐसा ही बुना

हुआ है। अब मुकेश का प्रेम उसका जुनून बन गया था। लक्ष्मी द्वारा उसके प्रेम का प्रस्ताव अस्वीकार करना मुकेश अपना तिरस्कार समझने लगा था। अब मुकेश रोज लक्ष्मी को स्कूल आते-जाते समय रोककर डराने धमकाने लगता और अपने झूठे प्रेम को लक्ष्मी पर थोपने की कोशिश करता और लक्ष्मी चुप-चाप उसकी बातें सुनकर घर चली आती थी। यही डर मुकेश की ताकत बन गया। अब मुकेश उसे फोन पर भी मैसेज करने लगा जिसमें वह उससे कहता कि तुम मुझसे ही शादी करोगी। लक्ष्मी बस खामोशी से उसकी ये सब बातें सुनती रहती थी। मुकेश में अब ईर्ष्या, द्वेष अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया। मुकेश ने अब सोचा कि वह उसके साथ ऐसा करेगा कि अगर वो उसकी ना हो सकी तो किसी की भी नहीं। तभी मुकेश ने लक्ष्मी के चेहरे पर तेजाब डालने की सोची वो बस एक मौके का इन्तजार करने लगा। आखिरकार वो दिन आ ही गया है जिसका मुकेश को इन्तजार था।

एक दिन लक्ष्मी अकेले बाजार किसी काम से गयी तभी मुकेश अपने साथ तेजाब की बोतल साथ लिये बाईक से उसका पीछा कर रहा था। जैसे ही लक्ष्मी भीड़ वाली जगह से थोड़ा दूर हुयी तभी मुकेश ने अपनी बाईक रोककर उसके चेहरे पर एसिड फेंक दिया और ये करते हुये उस इन्सान ने जरा सा भी नहीं सोचा। यहाँ दृश्य यह दिखाता है कि यदि किसी मनुष्य के मानवीय मूल्यों की समाप्ति हो जाये तो वह किस तरह से दूसरों को तकलीफ पहुँचा देते हैं। जैसे ही लक्ष्मी पर तेजाब डाला गया वह दर्द से तड़पती हुई जमीन पर लेट गयी और उसके पास एक ऐसे तमाशबीन का झुण्ड खड़ा हो गया जो इस दृश्य को सिर्फ एक तमाशे की तरह देख रहे थे तभी एक वृद्ध पुरूष जो शायद उस भीड़ में उसके दर्द को महसूस कर रहा था उसने फौरन ऐम्बुलेंस को फोन करके बुलाया और लक्ष्मी को हॉस्पिटल पहुँचाया और इसकी सूचना लक्ष्मी के माता-पिता को दी जब यह सूचना लक्ष्मी के माता-पिता को मिली तो उनके पैरों तले से जमीन सरक गयी। तब वे हॉस्पिटल गये और अपनी बच्ची को दर्द में तड़पता देख उन्होंने अपने गले से लगा लिया। लक्ष्मी को ठीक होने में 3 महीने लग गये। इस दौरान लक्ष्मी की प्लास्टिक सर्जरी हुयी। ठीक होने के बाद जब लक्ष्मी घर आयी तो लक्ष्मी के माता-पिता ने अपने सारे घर के शीशे कहीं छुपा दिये। लक्ष्मी इससे अन्जान थी कि अब उसका चेहरा किस कदर खराब हो गया है। वो तो खुश थी कि अब कई सारे ऑपरेशन हो गये है तो मेरा चेहरा और सुन्दर हो गया होगा। एक दिन उसने कही से शीशा ढूँढ़कर अपना चेहरा देखा तो मानो लक्ष्मी के वक्त जैसे ठहर सा गया हो। लक्ष्मी के लिये जीना अब और मुश्किल हो गया था। उसने आत्महत्या करने की सोची कि वह अब और नहीं जीयेगी लेकिन फिर उसने सोचा वो ऐसा कुछ नहीं करेगी उसने सोचा उसने उसके तन की सुन्दरता पर एसिड डाला है, मन की सुन्दरता पर नहीं, तभी उसमें एक ऐसी नयी शक्ति का जन्म हुआ जो साहस से परिपूर्ण थी।

लक्ष्मी ने अपने माता-पिता से कहा उसने मेरा चेहरा बदला है, दिल नहीं, उसने मेरे चेहरे पर एसिड डाला है मेरे सपनों पर नहीं। ये मेरी लाईफ है मुझे दोबारा एक नयी लाईफ मिली है उसे क्यों खराब करूँ। लक्ष्मी ने मुकेश को उसके गुनाहों की सजा दिलाई लेकिन फाँसी की नहीं क्योंकि लक्ष्मी चाहती थी कि जब-जब वो उसे खुलकर जीता देखें तो उसे अपने गुनाहों का एहसास हो, और उसकी शैतानी सोच कि लड़की के साथ ऐसा करने पर वो सिर्फ अब चार दीवारों में कैद रहेगी इस सोच को भी लक्ष्मी को तोड़ना था।

लक्ष्मी ने फिर अपने सपनों को देखना शुरू किया और अपने लक्ष्य की तरफ एक-एक कदम आगे बढ़ाती रही, अपने लक्ष्य को पाने में कभी-2 उसे असफलता भी हाथ लगी लेकिन वो इन सबकी परवाह किये बिना अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश करती रही। आज लक्ष्मी एक सफल फैशन डिजाइनर है और अब वो एक शादीशुदा भी है। लक्ष्मी अपनी जैसी लड़कियों को कामयाब करने के लिये उनकी मदद करती है, साथ ही साथ उनके लिये एक प्रेरणा का स्त्रोत बन गयी है। इस तरह लक्ष्मी ने फिर से कामयाबी की एक नई उड़ान भरी।

बेटियाँ

राखी नागर
बी.कॉम तृतीय

सुरचना अपने परिवार के साथ अलीगढ़ में रहती है। सुरचना पढ़ने-लिखने में काफी होशियार थी, वह स्वभाव में सीधी-साधी थी, वह हर बार क्लास में प्रथम आती थी। सुरचना का सपना था कि वो अपने पैरों पर खड़ी हो कर भविष्य में कुछ बने। पर उसने अपना लक्ष्य निर्धारित नहीं किया था कि उसे क्या बनना है लेकिन जब उसने लक्ष्य निर्धारित किया तब उसकी शादी तय हो गई। फरवरी में उसकी शादी थी और उसके 12वीं बोर्ड की परीक्षा भी उसी समय थी उसे बहुत गुस्सा आया वह अपनी माँ के पास गयी उसने अपनी माँ से पूछा कि माँ मेरी शादी फरवरी में क्यों? उसमें तो मेरी परीक्षा शुरू है। उसकी माँ ने उसे समझाने की बजाय उस पर गुस्सा निकाला और बोली पढ़-लिखकर क्या करेगी। पढ़-लिखकर भी रोटी पकानी है और पढ़-लिखकर ना तुम क्लेक्टर बनोगी। कल से तेरा स्कूल जाना बंद। वैसे-भी तेरी सास को लड़कियों को स्कूल में पढ़ना पसन्द नहीं है। सुरचना ने अपने परिवार को खूब समझाने की कोशिश की लेकिन सब बेकार रह गयी। जब सुरचना ने अपने पिता से कहा की पापा मुझे आगे पढ़ना है और भविष्य में कुछ बनना है। उसके पिता ने कहा कि तू पढ़-लिखकर क्या करेगी तुम्हारे ससुराल वालों के पास बहुत जमीन और पैसा है क्या फायदा तेरा पढ़ने का अपने पति से ज्यादा पढ़ोगी तो वो बेचारा 8 वीं पास है और तू 11वीं पास है। सुरचना को यह सुनकर बहुत गुस्सा आया कि बापू जी आप मेरी शादी कैसे कर सकते हो। सुरचना बोली पापा पैसे से जिन्दगी नहीं चलती। उसके पिता उसे डाँटकर बाहर चले गये। सुरचना ने हार मान ली और इसे भगवान का फैसला मानकर शादी कर ली। उसकी शादी भोला के साथ हो गयी। भोला अपने नाम की तरह भोला था। लेकिन उसकी माँ पुराने विचारों वाली थी। उसकी सोच थी की बेटियों को तो घर का काम अच्छा लगता है। पढ़ना-लिखना नहीं। सुरचना की सास बड़ी बहु पर बहुत से अत्याचार करती थी। उसकी सास सुरचना की बहुत लम्बा घूंघट करवाती थी और उसे रोटी प्याज के साथ देती थी। अगर उससे कोई कार्य गलत होता तो उस पर हाथ उठा देती थी। सुरचना के एक पुत्री हुई थी लेकिन सास उसकी बेटी से बात नहीं करने देती थी। यह सब भोला को नहीं पता था। क्योंकि भोला सारा दिन खेती का काम करता था। एक दिन उसके खेत की सारी फसल में आग लग गई और बहुत ज्यादा नुकसान उठाना पड़ा। उसने जिस व्यक्ति से उधार लिया था उन्होंने उसकी जमीन का कुछ भाग ले लिया। सुरचना औरतों के कपड़े सिला करती थी कि उसकी बेटी की पढ़ाई ना रूके। पर सास उसे हमेशा रोकती थी कि स्कूल मत जाओ और स्कूल जाकर क्या करोगी पर दादी की बात उसकी पोती नहीं मानती थी। एक बार तुलसी बीमार पड़ गई। वह अपने बड़े बेटे रमेश के पास रहने लगी लेकिन उसकी बड़ी बहू उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करती थी। भोला व सुरचना बोली की आप हमारे साथ हमारे घर चलो पर तुलसी तैयार नहीं हुई क्योंकि भोला और सुरचना की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। एक दिन सुरचना से आकर बोली जितना खाना खाओगे उतना मुझे देना। प्याज से रोटी मैं नहीं खाऊगी। मैं तुम्हारे साथ रहूँगी। जब वह भोला के साथ रहने लगी तो सुरचना ने खूब सेवा की। उसकी बेटी पहले अपनी दादी को खाना देती थी। थोड़ी दिनों में तुलसी की हालत में सुधार आ गया। तुलसी सुरचना और उसकी बेटियों से बहुत प्यार करने लगी और तुलसी की जो पेन्शन मिलती थी वह अपनी पोतियों की फीस भर देती थी। जब उसकी पोती स्कूल की छुट्टी करती तो वह उन्हें डाँटकर स्कूल भेजती थी। और कहती कि शिक्षा की कदर करना सीखो, तुलसी ने अपनी जमीन का बँटवारा कर दिया। भोला की भी उसने जमीन में हिस्सा दे दिया। तुलसी के पास थोड़ी जमीन बची। भोला अपनी जमीन से अपने घर का पालन पोषण कर रहा था। सुरचना के चार बेटियाँ थी, उसके बेटा नहीं था। इस बात पर उसकी सास खूब ताने देती थी कि जब उसके बड़ी लड़की हुई थी तो उसकी सास खूब रोई और गाँव में कोई खुश नहीं हुआ। कुछ समय बाद सुरचना के तीन बेटिया हुई तब भी कोई खुश नहीं हुआ।

वक्त के साथ बच्चियाँ बड़ी होने लगी। उन्होंने अपनी बच्चियों का नाम लक्ष्मी, सरस्वती, राधा तथा गंगा रखा।, बड़ी बेटी बिल्कुल अपनी माँ कि जैसे स्वभाव की थी दूसरे नम्बर की सरस्वती जिसकी अक्ल का सब लोहा मानते थे। वह थोड़ी-सी माँ पर गयी। उनकी दादी उनके चाचा के साथ रहती थी। क्योंकि सुरचना की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी, इनकी दादी इन्हें छोटी-छोटी बात पर ताने मारती थी, वह बच्चियों की पढ़ाना भी नहीं चाहती थी, पर सुरचना अपनी बच्चियों के साथ अपना जैसा नहीं कराना चाहती थी इसलिए सुरचना औरतों के कपड़े सिलती थी ताकि बच्चियों की पढ़ाई न रूके। एक बार तुलसी बीमार पड़ी तो उसके छोटे बेटे ने उसकी सेवा करने से मना कर दिया। पर सुरचना को अपनी सास पर दया आ गयी तो वह उसे अपने घर लेकर गयी। और भोला व सुचरना ने उसकी खूब सेवा की। सुरचना की सेवा को देखकर तुलसी मन बदल गया। और वह अपनी पोतियों की पढ़ाई की फीस अपनी पेंशन से देने लगी और वह शिक्षा की कीमत समझ गयी।

सुरचना अपनी सास तुलसी का यह रूप देख खुश थी। वह सोच रही थी कि शायद यह बदलाव उनमें पहले आ गया होता तो आज मैं भी अपने पैरों पर खड़ी होती, क्लेक्टर होती। पर मैं ना सही तो मेरी बेटियाँ ही अपने पैरों पर खड़ी तो होंगी। पर सुरचना अपनी सास के इस अवतार से खुश थी और वह अपनी सास की खूब सेवा करती थी। एक दिन भोला की बहन सोनम का बड़ा बेटा अपनी नानी से मिलने आया तो उसने बताया नानी में सिविल सर्विस की तैयारी कर रहा हूँ। तुलसी बोली यह सविल सर्विस क्या होता है तो राघव बोला नानी, यह सरकारी नौकरी की परीक्षा होती है। जिसमें यदि चयन हो जाये तो मौज-ही मौज है। इसमें नौकर-चाकर, मकान गाड़ी लाल बत्ती मिलती, राजा-महाराजा का सुख मिलता है। 90 हजार आय भी मिलती है तुलसी बोली इसके लिए क्या करना पड़ता है राघव बहुत ज्यादा पढ़ना पड़ता है 18-से 19 घण्टे।

लक्ष्मी बहुत खुश होकर, बोली-भाई मैं भी क्लेक्टर बनूँगी तो राघव ने उसे डाँटते हुए कहा तूने अपनी शक्ल भी देखी, तू बनेगी क्लेक्टर पता है कितना पढ़ना पड़ता है। लक्ष्मी रोते हुए अपनी माँ सुरचना के पास गयी और बोली माँ राघव भाई मुझे डाँट रहे है। तो सुरचना ने पूछा कि आखिर क्या हुआ। तो लक्ष्मी बोली माँ क्लेक्टर क्या होता है। सुरचना बोली कि क्लेक्टर अर्थात डी.एम होता है जो एक जिले का कार्यभार सँभालता है और यह एक सरकारी नौकरी होती है। इसमें राष्ट्र सेवा का मौका मिलता है। वह बुजुर्ग की रूकी पेंशन को बुजुर्ग को दिला सकता है, स्कूल की शिक्षा प्रणाली की जांच कर सकता है। पौधारोपण करा सकता है जिले का विकास कर सकता है। लक्ष्मी बोली पर माँ राघव भाई तो कह रहे थे कि यह बड़ी मौज की नौकरी है आराम ही आराम है। सुरचना बोली इस प्रकार की सोच रखने वाले का सविल सर्विस में चयन नहीं होता। इसमें तो रैंक के हिसाब से स्थान मिलता है इसमें अनेक प्रकार के सम्मान जनक स्थान या पद होते हैं। जैसे आई.ए.एस., आई.पी.एस. आई.एफ.एस. आदि। लक्ष्मी माँ आई.ए.एस. कैसे बना जाता है। सुरचना बेटा इसके लिए खुब मेहनत करनी पड़ती है। आगे मुझे नहीं पता तुम राघव से जाकर पूछो वो तुम्हे बतायेगा। लक्ष्मी वो बता नहीं रहे। डाँटे लगा रहे है। सुरचना बोली-इसके लिए कोचिंग लेनी पड़ती है, लक्ष्मी तुम्हें आई.ए.एस. बनना है। लक्ष्मी बोली-हाँ माँ मुझे आई.ए.एस. ऑफिसर बनना है। सरस्वती बोली माँ मुझे भी सर्विल सर्विस में जाना है। सरस्वती बोली माँ राघव भईया से में बात करूँ। लक्ष्मी बोली-सरस्वती भईया तुम्हे भी डाँट देगे। सरस्वती बोली-नहीं लक्ष्मी मेरे पास एक सुझाव कि मैं उनकी तारीफ करूगी और तुम्हारी बुराई करूगी जिससे भाई खुश होकर सब सच बता देगे, वो भी बिना डाँटे। जैसे सरस्वती ने सोचा वैसा ही हुआ राघव को जितना पता था उसने बता दिया। कि कुछ लोग कोचिंग मे जाकर तैयारी करते हैं तो कुछ लोग खुद तैयारी करते हैं किसी की मदद से। पर ज्यादा मेहनत करने वाला प्रथम प्रयास में सफल हो जाते हैं तो कुछ 2, 3, 4, 5 प्रयास में सफल हो जाते हैं पर इसको तैयारी काफी लम्बी होती है। इसके लिए एन.सी.ई.आर.टी. करेंट अफेयर्स, अखबार, न्यूज आदि कि मदद से सफलता मिलती है। सरस्वती और लक्ष्मी को सिविल-सर्विस की तैयारी कराने के लिए सुरचना ने पैसा जोड़ना शुरू कर दिया। क्योंकि अभी-अभी लक्ष्मी व सरस्वती 12वी में हैं और इसके लिए बी.ए. फाईनल, बी.कॉम फाईनल बी.एस. फाईनल करना

जरूरी तथा 21 वर्ष की आयु होनी चाहिए। एक साल में सुरचना ने दोनों की कोचिंग के लिए पैसा जोड़ लिया था तथा जब दोनों बीए. द्वितीय में थी तो सुरचना ने पास में ही उन्हें सिविल सर्विस की कोचिंग दिलवा दी। तथा लक्ष्मी व सरस्वती ने भी खूब मेहनत की तथा रातों को जागकर पढ़ाई की। और बी.ए. फाईनल करने के बाद दोनों ने सिविल सर्विस की परीक्षा दी तथा प्रथम प्रयास में लक्ष्मी का चुनाव नहीं हुआ व सरस्वती का चुनाव हो गया उसकी रैंक 50 थी। और उसे पंजाब का कैडर मिला। तथा लक्ष्मी का तीसरे प्रयास में आई.पी.एस. में चयन हो गया तथा उसे केरल का कैडर मिला।

जब दोनों बहनो को तुलसी ने अपने पैरों पर खड़ा देखा तो उसे अपनी गलती पर दु:ख हुआ की। जब इनका जन्म हुआ था तो मैं बहुत दु:खी हुई तथा रोई। यह मेरी भूल थी कि मैंने बेटियों को बेटों से कम समझा। और यह सोचा की बेटियो को पढ़ना शोभा नहीं देता। मैं गलत थी। आज लक्ष्मी व सरस्वती की जैसी किसी भी लड़के की नौकरी नहीं है। बेटियाँ किसी से कम नहीं।

राहुल की कहानी

राखी नागर

बी.कॉम तृतीय

राहुल स्कूल का हीरो था। जब भी कोई समस्या आती वह स्कूल का नेतृत्व करता लेकिन अब सवाल कॉलेज का था। कॉलेज में राहुल जैसे कई हीरो थे। ऐसे में हर कोई नेता बनने के लिए मुकाबला कर रहा था। कॉलेज का कैप्टन बनाने के लिए कॉलेज ने फैसला किया कि हर उम्मीदवार को एक कसौटी दी जाएगी। जो इस कसौटी पर खरा उतरेगा, उसी को नेता चुना जाएगा। लेकिन प्रोफेसर प्रभाकर राहुल को करीब से जानते थे और चाहते थे कि राहुल ही कैप्टन बने। प्रोफेसर ने तय किया कि वह राहुल की बाहर से मदद करेंगे। कुछ दिन बीत गए, पर राहुल को सफलता नहीं मिल रही थी। उसकी हर किसी से बहस होने लगी। अपने भी उसे दुश्मन नजर आने लगे। लोगों के उकसाने पर वह आसानी से भड़क जाता। देखते-देखते पूरा माहौल उसके खिलाफ होने लगा। एक दिन प्रोफेसर उसे एक कमरे में ले गए और वहाँ उन्होंने उसे चार बातें समझाई। प्रोफेसर बोले, पहली बात यह कि हर बात का जबाव तुरंत दिया जाए या मिल सके, यह जरूरी नहीं। अगर परिस्थितियां अपने अनुकूल न हो, तो बेहतर है कि चुप होकर परिस्थितियों को अनुकूल बनाने के प्रयास किए जाए।

दूसरी बात यह पहचानना जरूरी है कि तुम्हे कब बोलना है और कब नहीं। हम बातों में भले हार जाए, हमारे कर्म हमें सफलता तक पहुँचा ही देगें। पर यह जरूरी है कि हम अपनी लड़ाई का चुनाव ध्यान से करे। हर लड़ाई लड़कर जीती नहीं जाती।

तीसरी बात-हर प्रतियोगिता के अपने नियम होते है। नियम तोड़े बगैर सफलता के लिए जरूरी है कि हम अपने विवेक से बीच का रास्ता निकालें। हममें कोई तो ऐसी बात होनी चाहिए, जो किसी और में न हो।

चौथी बात-सफलता किसी को हराकर नहीं, बल्कि सबकी जीत से मिलती है। जिस सफलता में सबकी जीत हो, उससे बड़ी सफलता कुछ नहीं। इस बातचीत के बाद राहुल ने खुद को बदला। वह अगले दो साल तक कॉलेज का कैप्टन बना रहा।

शिक्षा-अगर आपकी सोच सही है तो सफलता खुद चलकर आपके पास आएगी।

जहरीला पौधा

अंशु शर्मा
बी.कॉम तृतीय

एक व्यक्ति बहुत परेशान था। वह अच्छा बनना चाहता था, पर उसकी आदतें उसे बुराई की ओर धकेल रही थी। परेशान होकर वह अपने गुरू के पास गया और बोला, "गुरू जी, जिन बातों को आप न करने की सलाह देते हैं, वही काम करने का मेरा मन करता है। मेरे अन्दर उन चीजों को पाने की लालसा जगी रहती है जो मेरे लिये वर्जित हैं। मैं उन कामों को करने की योजनाएँ बनाता रहता हूँ, जो मुझे नुकसान पहुँचा सकते हैं। गुरु जी मुस्कराएँ। उन्होंने सामने लगे पौधे की ओर इशारा किया और कहा-जानते हो इस पौधे की विशेषता, उसने 'न' में सिर हिलाया। गुरु जी बोले, यह जहरीला पौधा है। इसके पत्तों का अधिक सेवन जानलेवा बन जाता है, लेकिन इसे देखते रहने या इसके बारे में सोचते रहने में यह कोई नुकसान नहीं पहुँचाता। इसी तरह तुम्हारा मन जिन गलत बातों को देख या सोच रहा है, वे तुम पर दुष्प्रभाव नहीं, डालेंगी, हाँ तुम उनका उपयोग करना मत शुरू करना। 'और हाँ.....' गुरु जी आगे बोले, "यह जहरीला पौधा बहुत काम का है। इससे अर्क लेकर उन्हें दवाइयों में रूपांतरित कर दिया जाता है।, जो लोगों की जान बचाती है। इसलिये जो बुराइयाँ हैं, उन्हें तुम अच्छाइयों में रूपांतरित कर सकते हो और सभी के लिये कल्याणकारी बन सकते हो।

"बुराइयों से भागने के बजाय अपनी अच्छाइयों को प्रभावी बनाइए।"

गलती का एहसास

आरती रानी
बी.ए. द्वितीय

रवि स्कूल से आता है और चुपचाप अपने कमरे में बंद हो जाता। उस छोटे से घर में सभी का अलग-अलग संसार बसा था वह हमेशा मम्मी को मोबाईल पर व्यस्त देखता। रवि उनके पास जाता, तो वो उसे झटक देती। उन्हें देखकर रवि को भी मोबाईल पाने की ललक जग गई। पापा भी किसी न किसी से मोबाईल से बात करते रहते थे। घरेलू भैया राजू भी ईयर फोन लगा कर कुछ न कुछ सुन रहे होते। पूरे घर में खामोशी पसरी रहती।

एक दिन रवि मम्मी के पास जाकर फट पड़ा-आप लोग दिन भर मोबाईल पर लगे रहते है। मेरी बात सुनते ही नहीं है। मुझे भी मोबाईल चाहिए। बस मुझे उससे पढ़ाई करने की सहूलियत मिलेगी।

'अरे बाबा फिर ग्रुप में कुछ हार्ड डिस्कशन चल रही है। रूक जाओ थोड़ी देर-इसे निपटा कर तुमसे बात करती हूँ, फिर मम्मी ने वही से आवाज लगाई-राजू रवि को संभालो जरा थोड़ी देर।

रवि हैरान रहकर मम्मी का मुँह देखता रह गया। राजू उसकी बाँह पकड़ कर उसके कमरे तक ले गया।

थोड़ी देर बाद मम्मी पापा के बीच बहस शुरू हो गई। दोनों एक-दूसरे को इल्जाम लगा रहे थे कि उसकी देखभाल सही तरीके से नहीं कर रहे। रवि उन दोनों की बात सुनकर सिहर उठा। उदासी बाहर भीतर पसरने लगी थी कि अचानक उन दोनों के बीच हुई एक बातचीत ने उसे खुश कर दिया।

एक तो जमाना बहुत खराब है। बच्चों की किडनैपिंग भी इन दिनों बढ़ गई हैं। बच्चों यदि मुसीबत में हो तो कम से कम वह मोबाइल से बता तो सकता है, मम्मी ने दलील दी।

पापा ने मम्मी को बहुत समझने की कोशिश की मगर वे नहीं मानी। कुछ दिनों बाद उसके हाथ में एक चमचमाता स्मार्ट फोन था मम्मी पापा को उसने तंग करना बंद कर दिया। स्कूल से आते ही मोबाइल लेकर जम जाता न कोई रोक न कोई टोक एक दिन एक दोस्त अनिकेत ने गेम का एक लिंक भेजा। उस गेम में एक टास्क था, हर रोज एक चैलेंज। जो आखिरी एक दिन के चैलेज को पूरा कर देगा। उसे एक शानदार इनाम मिलेगा। इधर गेम शुरू हुआ और उधर रवि अपने में डूबा रहने लगा। वह जैसे ही स्कूल से घर आता, जैसे-तैसे बेमन से खाना खाता और अपने कमरे में मोबाईल लेकर बंद हो जाता और एक दिन शाम को अचानक विजय मामा रवि के कमरे में चले गए। रवि तो अपने गेम के चैलेंज को पूरा करने के लिए मगन था मामा का बिन बताए आना खल गया। मामा उसके पास जाकर बैठे और कुछ पूछना चाहा कि रवि ने जम्हाई ली-मामा प्लीज अभी नींद आ रही है। मगर उसके मामा कुछ तय करके आए थे। राजू ने तो फोन पर उन्हें सब कुछ बता दिया था फिर भी वे रवि से खुल कर सारी बात जानना चाहते थे। उसके बाद ही अपने बहन-बहनोई से दो टूक बात कहते।

डरा हुआ रवि कैसे बताए मामा को कि वह एक गेम में बहुत बुरी तरह फंस चुका था गेम के नेक्स्ट टाक्स में उसे किसी बच्चे की नकली किडनैपिंग करनी थी। उसे दो दिन छिपाकर भी रखना था, नहीं तो गेम खेलने वाले की किडनैपिंग हो जाती है। वह यह सब सोचकर रोने लगा। मामा ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा-रोओ मत-चुप हो जाओ। मुझे एक दो दिन के लिए अपना मोबाईल दे दो कुछ नहीं होगा। मै हूँ ना सब ठीक हो जाएगा मैं इस तरह गेम बंद करवा सकता हूँ। मामा ने अपने तरीके से गेम को हैंडल किया और गेम से वे सफलतापूर्वक बाहर आ गए। फिर उन्होंने मोबाईल से उस गेम को डी-एक्टिवेट कर दिया दो दिन के बाद उन्होनें मोबाईल रवि के हाथों में दे दिया। उन्होंने रवि के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, बेटा, हम अपनी सहूलियत के लिए मोबाईल का इस्तेमाल करते हैं न कि उसका गुलाम बनने के लिए। मोबाईल पर उल्टे-सीधे गेम खेलने के बजाए दोस्तों के साथ बातचीत करो। आउटडोर गेम खेलो हाँ, किसी महत्वपूर्ण जानकारी के लिए गूगल सर्च कर सकते हैं। इसके बाद मामा ने अपने बहन-बहनोई को झिड़कते हुए कहा कि तुम लोगों को रवि को भी समय देना चाहिए। उसकी बातें सुननी चाहिए, अन्यथा मोबाईल लत के कारण तुम दोनों को बाद में पछताना भी पड़ सकता है। उनकी बातें सुनकर रवि के मम्मी पापा को भी अपनी गलती का एहसास हो गया था।

मयूरी-तड़प से तपस्या तक

कविता नागर
बी.ए. प्रथम

हजारों की संख्या में एकत्रित लोग, भव्य मंच और उस पर एक-के बाद-एक बेहतरीन नृत्य प्रदर्शन जिससे तालियों की गड़गड़ाहट रूकने का नाम ही नहीं ले रही थी और अब बारी थी निर्णायकों द्वारा चुने गए उस नाम के घोषणा की जिसे वर्ष की सर्वश्रेष्ठ नृत्यांगना का खिताब मिलने वाला था। जैसे ही घोषणा होती है 'मयूरी राजवंशी' उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं होता और सब कुछ स्वप्न सा प्रतीत होता है।

पुरस्कृत होने के तुरंत बाद वह तेजी से अपने काले रंग की बी.एम.डब्लू. में जाकर बैठती है और ड्राइवर से कहती

है "माँ के घर चलो"। रात काफी हो चली थी, तालियों की गड़गड़ाहट कानों में वैसे ही गूंज रही थी कि तभी रेडियों पर गाना बजा "नाचे मन मोरा मगन विग धा दिगी दिगी" और आवाज बढ़ाने को कहा। यही तो वह गाना था जिसपर उसे पहली बार पुरस्कार मिला था पर एक नृत्यांगना बनना इतना आसान नहीं था और खुली किताब के पन्नों की तरह उसे अपने जीवन का वह सफर दिखने लगा।

उसे याद आया कि बचपन में वह जब नृत्य करती तो सब हँसते और कहते "बस नाम मयूरी है, नाचता तो कौआ भी इससे बेहतर है" किसी समारोह में जब बाकी बच्चे नाचते तो उसे कहा जाता कि बेटा तुम कविता सुना दो। विद्यालय के वार्षिक सामारोह में भी उसने हिस्सा लेना चाहा, काफी कोशिश की पर उसे निकाल दिया गया और खिल्ली अलग से उड़ी। कितना रोई थी वह उस दिन सबसे छुपकर, शायद पूरी रात। पर जैसा कहते हैं हर हार में एक जीत छुपी होती है वैसे ही अगले दिन नए सवेरे के साथ उसने दृढ़ संकल्प लिया कि अब मयूरी नाच कर ही रहेगी।

विद्यालय में अतिरिक्त गतिविधियों के तहत कथक सिखाया जाता था माँ से मिन्नतें कर उसमें नाम लिखवाया जिसकी फीस आटे के कनस्तर में छुपाये हुए पैसों से दिया गया जो माँ ने अपने कंगन के लिए जोड़ रही थीं क्योंकि पिताजी को तो नाच-गाना समय की बर्बादी लगती थी। दिक्कतें तो वहाँ भी आई किन्तु मयूरी के अथक प्रयास पर गुरूजी को शायद दया आ गई और सांस्कृतिक कार्यक्रम में सामूहिक नृत्य में हिस्सा लेने दिया। भले स्थान पीछे की पंक्ति था पर पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। कहते हैं न

"करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान

रसरी आवत जात, सिल पर पड़त निशान।"

फिर वह दिन आया जब नृत्यशाला के वार्षिक परीक्षा में उसे अव्वल स्थान मिला जिससे विश्वास-आत्मविश्वास में बदल गया। समय का पहिया घूमा और इस बार के वार्षिक समारोह में उसने एकल नृत्य की प्रस्तुति की और प्रथम स्थान प्राप्त किया। फिर क्या था पैरों ने थिरकना बंद ही नहीं किया, विद्यालय हो या राज्य स्तर या राष्ट्रीय स्तर "मयूरी तो बस नाचती गई" बॉलीवुड में भी कोरियोग्राफर के लिये प्रस्ताव मिला पर वहाँ के तौर-तरीके उसे पसंद नहीं आये। पर प्रतिभा कहाँ किसी पर आश्रित होती है और सफलता कदम चूमती गई।

तभी ड्राइवर ने कहा "मैडम घर आ गया"। आँखें नम थी तो दरवाजे पर खड़ी माँ भी धुंधली नजर आ रही थी। मयूरी एक नन्हें बालक की तरह माँ से लिपट गई और बोली "धन्यवाद माँ अगर आप न होती...." और गला भर गया। माँ ने पुचकारते हुए कहा "तुम्हारी आँखों में तड़प देखी थी मैंने और यह सब तुम्हारी तपस्या का परिणाम है"। यह सुन मयूरी फिर से लिपट गई और निश्चय किया कि माँ के नाम से नृत्यशाला खोलेगी जिसमें हर वह लड़की जो नृत्य सीखना चाहती है... उसके जीवन को नई दिशा देगी।

दूसरों के दुख

रिंकी

बी.कॉम. तृतीय

हिमालय पर एक महात्मा रहते थे। पहले वह मैदानी इलाके में रहते थे पर वहाँ अनुयायियों और श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता था, इसलिए तंग आकर उन्होंने पर्वत पर एकाकी जीवन बिताना बेहतर समझा। फिर भी लोग नदियां

और घाटियां पार करके चले आते। उन्हें लगता था कि महात्मा उन्हें दुखों से छुटकारा दिला सकते हैं। ऐसे ही कुछ श्रद्धालुओं को महात्मा ने तीन दिन तक इंतजार कराया। चौथे दिन महात्मा ने कहा, आज मैं तुम सभी को कष्टों से मुक्ति दिलाऊँगा। पर तुम्हें वायदा करना होगा कि तुम किसी को नहीं बताओंगे कि मैं यहाँ रहता हूँ। लोगों ने हामी भरी तो महात्मा ने उनसे एक एक कर अपनी समस्या बताने को कहा। किसी ने बोलना शुरू किया, पर उसे किसी और ने टोक दिया। बहुत शोरगुल होने पर महात्मा ने कहा, आप अपनी-अपनी तकलीफें पर्ची में लिख दें। जब सभी लोग लिख चुके, तो महात्मा ने एक टोकरी में सारे पर्चों को गड्ड़-गड्ड़ कर दिया और कहा यह टोकरी एक दूसरे को देते जाओ। हर व्यक्ति इसमें से एक पर्चा उठाए, पढ़े फिर तय करे कि वह अपने दुख अपने पास रखना चाहेगा या किसी और के दुख लेना पसंद करेगा। लोगों ने पर्चे उठाकर पढ़े और इस नतीजे तक पहुँचे कि उनके दुख औरों के दुख-दर्द के सामने कुछ नहीं थे। दूसरों के दुखों की झलक पाकर उन्हें अपने दुख हल्के लगने लगे थे, फिर वे सभी अपने-अपने घर चले गए।

उनके दुख कायम थे, पर उनका बोझ अब उतना नहीं लग रहा था।

बेटे की चाह

निशा शर्मा
बी.कॉम तृतीय

यह कहानी एक सविता नामक लड़की की है जो अभी केवल 19 वर्ष की हैं सविता 12वीं पढ़ी हुई है। कॉलेज की शिक्षा प्राप्त न कर पाने का मुख्य कारण कॉलेज का गाँव से दूर होना है।

सविता के ब्याह की तैयारियाँ चल रही हैं। एक माह बाद उसका ब्याह है। सविता घर में बड़ी बहू बनकर गई है क्योंकि पति महेश घर में अपने तीनों भाईयों में सबसे बड़ा है। ब्याह के कुछ ही माह बाद सविता गर्भवती हो जाती है। इस बात से घर में सभी बहुत खुश है तथा सभी को लड़का होने की कामना है। सविता की सास ने भी कई मन्नतें माँग ली हैं कि पहले बालक के रूप में पोते का ही मुँह देखे। सविता के ससुराल में एक परम्परा है कि पहले बच्चे की लिंग जाँच नहीं कराई जाती तथा यह माना जाता है कि जो भी पहल का फल होगा सभी को स्वीकार्य होगा किन्तु यह परम्परा केवल पहले बच्चे के लिए है। चूँकि सविता पहली बार गर्भवती हुई है अतः उसके बच्चे की लिंग जाँच नहीं कराई जाती।

नौंवे माह में सविता एक लड़की को जन्म देती है जिससे घर के सभी सदस्यों की इच्छाओं पर पानी फिर जाता है। सभी अपने चेहरे लटकाए हुए हैं। घर में मातम सा छाया हुआ है। सविता को यह सब देखकर बहुत दुःख पहुँचता है। अब सविता की सास अपनी बहु से सीधे मुँह बात नहीं करती तथा लड़ाई झगड़ों में ताने देने से भी नहीं चूकती। सविता की लड़की का नाम रमा रखा जाता है। रमा अभी 6 माह की भी नहीं हुई है कि सविता दोबारा गर्भवती हो जाती है। घर में फिर से खुशी का माहौल है व लड़का होने की आस है। घर में जब भी चर्चा छिड़ती है, उसमें लड़का होने की बात को शामिल अवश्य किया जाता है। सविता भयभीत है। उसे डर है कि यदि फिर से लड़की हुई तो अवश्य ही उसकी हत्या करा दी जाएगी। सविता का पति भी लड़का ही चाहता है। घबराई हुई सविता जब इस बात का विरोध करती है तो उसे बलपूर्वक चुप करा दिया जाता है।

तृतीय माह में सविता को बच्चे की लिंग जाँच के लिए अस्पताल ले जाया जाता है सविता जाने से इन्कार करती

है किंतु उसकी एक नहीं सुनी जाती। उधर परिवार वालों ने पहले ही तय कर लिया है यदि गर्भ में लड़की हुई तो गर्भपात करा दिया जायगा। सविता बहुत डरी हुई है।

लिंग जाँच के पश्चात् सविता को पता चलता है कि दुर्भाग्यवश उसके गर्भ में लड़की ही है। सविता घबरा जाती है वह गर्भपात कराने के लिए बिल्कुल भी सहमत नहीं है तभी उसे एक उपाय सूझता है वह डॉक्टर नहीं मानता तो वह उसे लालच देती है कि यदि तुम मेरे घरवालों से लड़का होने की बात कह दो तो मैं तुम्हें अपनी यह सोने की चैन दे दूंगी। डॉक्टर भी लालच में आकर सहमत हो जाता है तथा वैसा ही करता है जैसा सविता उससे कहती है। इस तरह से वह अपनी बच्ची को बचा लेती है। किंतु 9वें माह में जब सविता को दोबारा लड़की होती है तो देखकर सब हक्के बक्के रह जाते हैं। किसी को समझ नहीं आ रहा कि ऐसा कैसे हो गया परन्तु सभी यह जानते है कि कभी-कभी रिपोर्ट गलत भी हो जाती है इसलिए कोई ज्यादा जाँच पड़ताल नहीं करता परन्तु अब दूसरी भी लड़की हो जाने के बाद सविता का घर में रहना मुश्किल हो गया है। उसे बात बात पर ताने व गालियाँ सुनने को मिलती हैं। सविता यह सब सहती हुई अपनी लड़कियों को बराबर प्यार व दुलार देने की कोशिश करती है।

कुछ समय पश्चात् सविता को तीसरा बच्चा एक लड़का होता है। लड़का होने ने घर में हालात थोड़े सुधरे है किंतु स्थिति अभी भी इतनी अच्छी नहीं है। अब एक नई समस्या जन्म लेती है। वह है-भेदभाव। दो लड़कियों के पश्चात् लड़का होने के कारण वह सभी का प्रिय है लड़कियों को वह प्यार व सम्मान नहीं मिलता जो उनके भाई को मिलता है। लड़ाई हो जाने पर लड़कियों को हमेशा डाँट मिलती है व लड़के को दुलार। यह सब उन दोनों बच्चियों के लिए असहनीय व कष्टदायक है किन्तु सविता अपनी बच्चियों का पूरा साथ देती है।

परिणामस्वरूप लड़का अत्यधिक लाड़-प्यार के कारण बिगड़ जाता है व दोनों लड़कियाँ अपनी मेहनत से व लगन से पढ़-लिखकर क्रमशः शिक्षिका व डॉक्टर बन जाती है।

भूख मिटाने में डूबता बचपन

मधु कुमारी
बी.एड. प्रथम वर्ष

संध्या का समय था। मैं दफ्तर से घर की ओर जा रहा था। जाड़े का मौसम था, ठण्डी-ठण्डी हवाएँ चल रही थी। मैं तेज कदमों से घर की ओर जाने वाली सड़क पार करने वाला ही था, तभी अचानक मुझे मेरा बचपन का मित्र गोपाल दिखाई दिया। मैने उसको देखते ही बोला, अरे गोपाल इधर कहाँ से, उसने बोला मेरा भी तबादला इसी शहर में हो गया है और मैं भी अपने घर जा रहा हूँ। एक-दूसरे का हाल-चाल पूछने के बाद मैने उससे कहा, चलो यार चाय की चुस्की लेते है, तो गोपाल ने तपाक से कहा अरे हा यार! तूने तो मेरी मन की बात छीन ली। भला जाड़े की शाम चाय किसे नहीं भाती। फिर हम दोनों बगल के एक होटल में गयें। वहाँ जाकर जैसे ही बैठे बेटर ने आकर पूछाँ-साहब क्या लोगे? मैने बोला-भाई चाय पिला दों। वह जैसे ही चाय लेने गया तभी मैने देखा एक छोटा बच्चा जिसकी उम्र लगभग 10 वर्ष की होगी वहाँ, बैठकर बर्तन धो रहा था। मालिक ने आवाज लगाई, जल्दी-जल्दी हाथ चला शाम हो रही है, घर जाने का समय हो गया है। वह बच्चा जल्दी-जल्दी बर्तन धोने लगा तभी अचानक उसके हाथ से चीनी मिट्टी की बनी ट्रे छूटकर गिर गई और वह टूट गई। होटल का मालिक आग बबूला हो गया और उसके गाल पर जोरदार थप्पड़ मार दिया वह सिसक-सिसक कर रोने लगा। होटल का मालिक बोला, आज भी तूने मेरी इतनी मँहगी

ट्रे तोड़ दी, तुम्हे आज का वेतन नहीं मिलेगा। वह बच्चा सिसकते हुए बोला, नहीं साहब ऐसा मत कीजिए, अगर आप मुझे आज पैसा नहीं देंगे तो कल मेरी माँ जो कि बीमार है, उनको भोजन नहीं मिल पायेगा। मेरे छोटे-छोटे भाई बहन है, वो कल क्या खायेंगे? नहीं साहब नहीं वो भूख से तड़प-तड़प कर मर जायेंगे। आप बदले में मुझसे और काम करवा लीजिए लेकिन मुझे पैसे दे दीजिए, लेकिन होटल के मालिक को जरा सा भी उस मासूम पर दया नहीं आई। उसने उस मासूम की एक ना सुनी। वह बेचारा गिड़-गिड़ाकर अपने नन्हे कदमों से होटल से बाहर निकलने लगा। तभी मैने उसको आवाज दी, अरे ओ बालक, इधर आओ।

उसने बोला,-"जी साहब"

मैने पूछा,-"तुम्हारा नाम क्या है?"

उसने बोला,-"जी रामू"

मैने पूछा-"ये तो तुम्हारी खेलने-पढ़ने की उम्र है, तुम यहाँ काम क्यों करते हों।

उसने बोला-"साहब ये मेरी मजबूरी है। अगर मैं काम नहीं करूँगा तो मेरी माँ और भाई बहन क्या खायेंगे?"

मैने पूछा-"तुम्हारे घर में कौन-कौन रहते है?"

उसने बोला-"जी, माँ बाबूजी और मुझसे छोटे मेरे तीन भाई-बहन।"

मैने पूछा-"तुम्हारे बाबूजी काम नहीं करते? मेरा मतलब पैसा नहीं कमाते?"

उसने बोला-"जी कमाते है साहब, लेकिन सारे पैसे की शराब पी जाते है। माँ जब पैसे माँगती थी तो माँ को पिटने लगते थे। ये सब मुझसे नहीं देखा जाता था और मैं इस होटल में काम करने लगा।"

मैने पूछाँ-"तुम्हें पढ़ने का मन नहीं करता?"

उसने चेहरे को मायूस करते हुए जबाब दिया-"बहुत मन करता है साहब। पहले मैं विद्यालय में पढ़ने जाता था। मेरी माँ दूसरे के घर में काम करके हमें पढ़ाती थी। हमारे लिए भोजन भी जुटाती थी लेकिन माँ अचानक बीमार पड़ गई। हमारे पास इतने भी पैसे नहीं हैं कि हम अपनी माँ का इलाज शहर जाकर अच्छे अस्पताल में करवा सकें। साहब हमारे बाबूजी जो भी कमाते है वो पूरा का पूरा शराब पर खर्च कर देते हैं। माँ के बीमार पड़ने पर भी वह हमारे लिए खाने का सामान लेकर नहीं आते थे। धीरे-धीरे हमारे घर में भुखमरी प्रकट होने लगी। मेरी माँ खाना के अभाव में और बीमार पड़ती गई। मेरे भाई-बहन, भूख से रोते थे। ये सब मेरे आँखो के सामने ही रहा था- साहब। अब आप ही बताइए मैं कैसे पढ़ाई करता? क्या ये मेरी मजबूरी नहीं बन गयी कि मैं अपने इन मासूम हाथो से अपनी माँ और अपने भाई-बहन का पेट भर सकूँ। इसे आप मेरा कर्त्तव्य समझिए या मेरी मजबूरी ये कहते-कहते उसके आँखो में आँसू आ गये।

मैं और मेरा मित्र एक दूसरे को देखने लगे। हम दोनों के आँखो से उस मासूम मासूमियत की भरी कहानी सुनकर आँसू निकल रहे थे। मैने मन ही मन सोचा क्या हम इस मासूम को उसके बंधनो से मुक्त नहीं करा सकते? क्या हमारा ये फर्ज नहीं कि हम इस मासूम के लिए कुछ करे? मेरी अंतरात्मा ने मुझे झकझोर कर रख दिया। मैने अपनी जेब से एक 500 रूपये का नोट निकाला और उसे देने के लिए उसकी तरफ हाथ बढ़ाया, तभी वह तपाक से बोला नहीं साहब हम इसे नहीं ले सकते। मैने बोला-बेटा ये मैं तुझे ईनाम नहीं दे रहा हूँ। तुम इस पैसे से अपनी माँ का ईलाज शहर के अच्छे अस्पताल में करवा लो। इससे तुम्हारी माँ ठीक जायेगी फिर वो तुम्हारे लिए भोजन का व्यवस्था कर

देगी। तब तुम अपनी पढ़ाई पूरी कर लेना। फिर मैं अपने जेब से 10 रूपये का नोट निकाला और बोला, ये लो तुम्हारे परिवार के लिए कल का भोजन का पैसा। उसने धीरे-धीरे अपने हाथ बढ़ाकर पैसा लिया तथा बोला अब मेरी माँ ठीक हो जायेगी साहब। फिर उसने अचानक बोला-अब मेरे भाई-बहन कल भूखे नहीं रहेगें। साहब आप धन्य हो कहते हुए अपने नन्हे-नन्हे पाँवो से वह अपनी घर की ओर चला गया।

मैं और मेरे मित्र हम दोनों उसकी मासूमियत को देखकर सोचने लगे, क्या भूख इतनी बड़ी मजबूरी है, जो एक मासूम के हाथों में खिलौना के बजाए इतनी बड़ी-बड़ी काम थमा देती है, उससे उसका बचपन छीन लेती है। क्या इन मासूमो को अपना बचपन खुशी पूर्वक बिताने का अधिकार नहीं है?

काव्येषु नाटकं रम्यम्

मोनिका सिंघल
बी.ए. द्वितीय

प्रास्ताविकम्:-लोकोत्तरवर्णनानिपुणकविकर्मं काव्यमिति काव्यस्य सामान्यं स्वरूपमुच्यते। तत्काव्यन्तु श्रव्य दृश्यभेदेन द्विविधं भवति-तथा चाह विश्वनाथः साहित्यदर्पणस्य षष्ठपरिच्छेदे-दृश्यश्रव्यत्वभेदेन पुनः काव्यं द्विधा मतम् तत्र प्राधान्येन श्रवणपदवीं प्राप्य सचेतसां हृदयावर्जक काव्यं श्रव्यमिति कथ्यते। दर्शकानां सहृदयसामाजिकानां नेत्रानन्दविधायकं सहृदय-हृदयाकर्षकं काव्यं दृश्यमित्युच्यते। दृश्यमेव काव्यं नाटकं कथ्यते।

नाटयन्तुः- अवस्थानुकृतिर्नाटयम्।

काव्ये निबद्धः धीरोदात्त-धीरोद्धत-धीरललित-धीरप्रशान्तानां नायकानाम-वस्थानुकारः चतुर्विधाभिनयनाट्य कौशलेन अभिनेतु र्नटस्य तादात्म्यापत्तिरेव नाट्यमिति। अभिनेतुं योग्यमभिनेयमिति व्युत्पवत्त्यनुसारेण नटादिभिरभिनीयमानं नायकादीम् चरितमेवाभिनयमुच्यते। एतदभिनयमेव नटे रामादिनायकानां स्वरूपारोपणात् रूपकमिति अभिधीयते। तथा चोक्तं साहित्यदर्पण तद्रुपारोपात्तु रूपकमिति-यथा मुखाकर चरणेषु कमलस्यारोपत्वात्-रूपकाऽलंकारो भवति तथैव नायकादीनां स्वरूपारोपात्-रूपकमित्युच्यते।

अस्याभिनयस्यापि आङ्गिकवाचिकाहार्य सात्विकभेदेन चत्वारो भेदाः भवन्ति। तथा चाह। दशरूपके-"भवेदभिनयोऽवस्थानुकारः सः चतुर्विधः।

आङ्गिकोवाचकश्चैवमाहार्यः सात्विकस्तथा।"

नाटयशास्त्रेऽपि-त्रिविधस्त्वागिङ्को ज्ञेयः शारीरो मुखजस्तथा।

तथा चेष्टाकृतश्चैव शाखाङ्गोपाङ्गसंयुतः।"

इत्यनेनङ् गकस्याभिनयस्य त्रयोभेदाः भवन्ति।

वाचा निष्पन्नोऽभिनयः वाचिकः वेषरचनादिभिः निष्पाद्यः आहार्यः स्तम्भस्वेदानुरूपः सात्विकश्चोच्यते।

एवमाभिनयस्य-भेदाः प्रदर्शिताः सन्ति।

नाटयभेदः- रसाश्रयेण, रूपकापरपर्यायेण न नाट्यस्य प्राद्यान्येन दष भेदाः भवन्ति यथा च दशरूपके द्रष्टव्यमिति-

नाटकं सप्रकरणं भाणः प्रहसनं डिमः।

व्यायोग समवकारौ वीथ्यङ्कईहामृगा इति।।

दशानामप्येषामवस्थानुकारात्मकत्वेन अभेदेऽपि वस्तु, नेता, रसस्तेषां भेदहेतवः भवन्ति। तथा चोक्तं धनञ्जयेन–"वस्तु नेता रसस्तेषां भेदकः" इति।

साहित्यदर्पण नाटकलक्षणम् प्रतिपादयता विश्वनाथेन–प्रोक्तम्

नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात्पञ्चसन्धिसमन्वितम्।

विलासद्धर्यादिगुणवद् युक्तं नानाविभूतिभिः।।"

सुखदुःखसमद्भूति नानारसनिरन्तरम्।

पञ्चादिका दशपराश्त्रांका परिकीर्तिताः।।"

प्रख्यातवंशो राजषिर्धीरोदात्तः प्रतापवान्।

दिव्योऽथ दिव्यादिव्यो वा गुणवान् नायको मतः।।"

एक एव भवेदङ्गी श्रृङ्गारो वीर एव वा।

अङ्गमन्ये रसाः सर्वे।।"

उपरूपकाणि त्वष्टादशविधानि सन्ति–"नाटिका त्रोटकं गोष्ठी सट्टकं नाट्यरासकम्। विना विशेष सर्वेषा लक्ष्म नाटकवन्मतम्।" एवं विधिना नाटकस्यलक्षणं भेदाश्च प्रदर्शिताः सन्ति। प्राधान्येन श्रृङ्गारः वीरो वा रस स्यात्–धीरोदात्तादिषु कश्चिदुच्च कुलोत्पन्नः नेता स्यात्। दिव्य अदिव्यश्च नेता स्यात्। इत्यादिकशनैः नाटकस्य स्वरूपम् प्रतिपादितमस्ति।

नाटकेषु रमणीयताः–कतिचिद्विद्वांसः कलायाः अन्तः काव्यान्येव न सन्ति अपि तु कलाया अन्तः ललितकलासु दृश्यते इति मन्यन्ते। मुख्यरूपेण ललित कला पञ्च स्वीक्रियन्ते वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीतकला काव्यकला चेति। आसु पञ्चसु कलासु–यस्याः कलायाः निरूपणं न्यूनतमानी साधनानि प्रयुज्यन्ते सैव कला श्रेष्ठतमांच्यते, अतः वास्तुकलाया अपेक्षयामूर्तिकला श्रेष्ठाऽस्ति। क्रमशोविवेचने काव्यकलायामेव न्यूनतमसाधनान्युपयुज्यन्तेऽतः काव्यकलैव श्रेष्ठतमा कलाऽस्ति। तत्रापि काव्यस्य श्राव्यापेक्षया दृश्याकाव्येऽधिकतरम् रमणीयत्वो मास्वाद्यते। यतश्च श्रव्यकाव्ये तु रमणीयत्वोपपादकानि तत्वानि केवलं श्रवणाभ्यामेव आस्वादकराणी भवन्ति। तथा सहृदयाः श्रव्यकाव्यान्तर्गतानां भावानां कल्पनाशकत्या शक्त्या चित्रणं मानसेङ्गीकृतं कृत्वा कष्टमनुभवन्ति। येन रमणीयतायाः वास्तविकं स्वरूपमनायासेन स्वादयितुं शक्यते येन रमणीतायाः पूर्णआस्वादोऽनुभोक्तुं न पार्यतेऽतः दृश्यकाव्ये कष्टकल्पनया।

अतएव सहित्यजगति नाटकस्यैव

सर्वातिशायिनी प्रतिष्ठा श्रूयते।

"काव्येषु नाटकं रम्यक्" इति।

इदमैव कारणमस्ति–यत्–अलौकिक कलाकौशलेनाभिनयनैपुण्येन

प्रदर्शितनाटकावलोकनेनैव सर्वोऽपि भावः नायक नायिकादीनां सामाजिकानां चेतस्यु साक्षादंकितो भूत्वा सद्योरसानुभूति विषयो भवति।

भारतीय महिलानामादर्शस्वरूपम प्रतिपादयन् अलिखत् यत्–

"शुश्रुषस्व गुरून् कुरू प्रिय सखी वृतिं सपत्नीजने।

भर्त्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मास्म प्रतीप गमः।

भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी।

यान्त्येव गृहिणीपदं युवतयो वामा कुलस्याधयः।।"

अपि च–

"अभिजनवतो भर्तुः श्लाध्ये स्थिता गृहिणीपदे।"

"सेयं याति शकुन्तला प्रतिग्रह सर्वेरनुज्ञायताम्।।"

इत्यादिभिरूदाहरणैः काश्यपस्य भावानां रमणीयता केषां चेतांसि न समावर्जयति। नागानन्दनाटके दयावीरस्य यच्चित्रमवलोकयते–तदवलोक्य कस्य हृदयं कारूण्येन नाप्लावितं स्यात्।

तथा च निराधारं धैर्य कमिव शरणं यातु विस्म क्षमः क्षान्तिं वोढुं क इह विरता दानपरता। क्षत्य कत्ये तु यदयदनुभूयते श्रवणसाहाच्येन दृश्यते तु तुत्सर्व सूक्ष्मातिसूक्ष्मप्रयासासेनैव सहृदयैरनुभूयतेऽतः श्रव्यापेक्षय दृश्यस्य रमणीयता सुतरां श्रेष्ठतमां पदवीमध्यास्ते। "सद्यः गीतिकरो रागः"

इति यच्छयते तदपिं दृश्य–एवास्वादयितुं पूर्णरूपेणशक्यते। नाट्यशास्त्राविष्कर्त्रा भरतुमुनिनाऽपि नाटयशास्त्रे प्रतिपादित तथाहि समीक्ष्यन्ताम्–

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।

न तत्कर्म न वा योगो नाटके यन्न दृश्यते।।

अतः संस्कृतनाटकानि अन्यासां भाषाणां नाटकानामपेक्षया सरसवचनरचनया काव्यकलाकौशलशैल्या प्रायशः सुखान्त निसद्योरसानुभूतऽतिप्रसिद्धानि सन्तीति सर्वेरपि सोल्लासं स्वीक्रियन्ते। संस्कृतनाटकानि तु नान्दीपताकाप्रकरी पञ्चसन्ध्यर्थप्रकृत्यादिभिः निबद्धानि। जीवनस्य सुखैश्वर्यव्यावहारिकराजनीति शिक्षाणामुपदेशः तत्र सामाजिकैरनुभयते। यथाऽभिज्ञानशाकुन्तले कविकुलगुरूः कालिदासः हस्तिनापुरगमनोद्यतां शाकुन्तलाम् गार्हस्थ्यमुपदेष्टुम्

काश्यपमुखेन श्लोकमिम् संदिश्य

"हलं सत्यं सत्यं प्रजतु कृपणा कवाद्यकरूणा,

जगज्जातं शून्यं त्वयि तनय लोकान्तरगते।।"

नागानन्दनाटकस्य पठनेन कस्य दयावीरसप्रवाहेण हृदयं न द्रवीभवति। श्रीहर्षणैव रत्नावली नाटिका प्रियदर्शिका च प्रणीते स्तः।

रत्नावल्यां सागरिकां अनुरागवर्णनं डनुरागवर्णनं सहृदय नां हृदयाह्लादकं कस्य चेतसि सुभगां रमणीयतां न पोषयति।

तथा चः–उत्तररामचरितनाम्नि नाटके सीताविरहेण ग्रावाऽपि रोदिति व वज्रत्रस्यापि हृदयं दलतीत्यधीत्य रमणीतया सर्वोत्कृष्टं रूपमास्वादयितुं शक्यते। मुद्राराक्षसे राजनीते र्दुरासदाः उपदेशाः एवमेव स्मतिपयेन चेतसिप्रविशन्तः कर्तव्यपरायणतायाम् नियोक्तुं प्रभवन्ति।

अपि चः– अतीत कालस्य सदाचरिणं कर्त्तव्यपरायणानां नृपाणां, वीराणाम्, देशभक्तानाम्, सावित्रीसीताऽऽत्रेयी अहल्या लक्ष्मीबाई इत्यादीनामुदारचित्तानां देवीनामभिनयेनैतदनुभूयते यदाभवत् प्रवर्तितव्यम् नपुरावणादिवत्–

इत्युपदेशोऽपि नाटकेभ्यः संगृहातेऽवः नाटकेषु

काव्यापेक्षायाऽधिकं रमणीयत्तम् समनुभूयते।

काव्यापेक्षया नाटकानामभिनेतुं रङ्गमञ्चस्य विविध–कलात्मक वस्तुविन्यासादिरलङ्कृतस्य साहाय्येन सम्वादादिषु

स्वाभाविक सरस काव्यदीनाम् चित्रेणेन दृश्यकाव्येऽतीवरमणीयता प्रत्यपादि वस्तुतः लोकोऽयं भिन्नरूचिरस्तिं नाटकेष्वपि विभिन्न भावानां चित्रणं विविधैः रमणीयता सम्पादितत्वाद्–

विभिन्नरूचीनामपि जनानाभिनयं प्रतिसमाकृष्य विविधैः भावैः सामाजिकानां मनांसि स्मयति।

अस्मिन् विषय एव कविकुलगुरूः कालिदासः निम्नांकित श्लोकेनालिखित्।

यत चः– देवानानिदमामनन्ति मुनयः शान्तं कर्तुं चाक्षुषम रूद्रेणेदमुमाकृतव्यति करे स्वाङ्ग विभक्त द्विधा।

त्रैगुण्योद्भवमत्र लोकचरितं नानारसं दृश्यते।

नाट्यं भिन्नरूचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधकम्।।

अतएव विभिन्न रूचीनामपि जनानां समावर्जकेषु नाटकेषु काव्यापेक्षयाऽवश्यं रमणीयत्वं वर्तते, नात्र संशीतिः।।

वृक्षारोपण

काजल नागर
बी.ए. द्वितीय

भारतस्य एका भयावहा समस्या अस्ति 'प्रदूषणम्'। प्रदूषणनिवारणाय वृक्षारोपणम् अत्यावश्यकमस्ति। प्राचीन काले पुराणेषु अपि वृक्षाणां महत्त्वं प्रतिपादितम्। यः पञ्चानम् आमृवृक्षाणाम् आरोपणं करोति स कदापि नरकं न गच्छति इति कथ्यते। पुराणे एतदेव कथितं पंचात्वापी नरकं न याति इति। वृक्षाः अस्माकं कृते किं करोति एतत् अस्मिन् सुभाषिते कथितम्–

धत्ते धारं कुसुमपत्रफलावलीनां धर्मव्यथां वहति शीतभवां रूजं च।
यो सर्वमर्पयति चान्यसुखस्य हेताः, तस्मै वदान्यगुरवे तरवे नमोऽस्तु।

वृक्षाः स्वयं कुसुमपत्रफलानां भारं सहन्ते, तथा सर्व अन्येभ्यः दत्ते। स्वयम् आतपे तिष्ठन्ति, अन्यस्य छायां कुर्वन्ति वृक्षाणां मूलं वल्कलं, पत्रं, पुष्पं, फलं सर्वमेव परेभ्यः अस्ति।

एतादृशाः परोपकारिणः वृक्षाः जनेभ्यः किमपि न वाञ्छन्ति। किन्तु आधुनिके युगे जनाः स्वार्थिनः अभवत्, स्वसुखाय, गृहनिर्माणाय ते वृक्षान् छिन्दन्ति। ते किं न जानन्ति, यत् वृक्षाः सृष्टेः आधाराः सन्ति। वृक्षाभावे सृष्टिः असंभवा खलु।

वृक्षाः जनानां शरीरस्वास्थ्याय अपि सन्ति। ते कार्बन डायऑक्साइड वायुं गृहणन्ति, ऑक्सीजन वायु च विसृजन्ति। नूनम् एषा जीवनं समस्त प्राणिभ्यः उपभोगिनः अस्ति। येभ्यः अर्थिनः कदापि निराशां न यान्ति। यात्रां कुर्वन्तः नराः यदा श्रान्ताः भवन्ति, तदा मार्गे स्थितानां वृक्षाणां छायायां विश्रामं कुर्वन्ति।

एवं परोपकारिणां वृक्षाणां छेदनं कदापि न कर्तव्यम्। प्राचीनकाले तु वृक्षभेदनं दण्डनीयः अपराधः मन्यते। अस्माकं संस्कृत्यां वृक्षभेदनं पापं मन्यते।

अतः प्रत्येक नागरिकस्य एतत् कर्त्तव्यं यत् तेन वृक्षारोपणम् अवश्यं कर्तव्यम्। अधुना विद्यालयेषु अपि वृक्षारोपणं क्रियते। शासनः अपि अस्यां दिशायां प्रयासं करोति। अनेके नेतारः वृक्षारोपणं कुर्वन्ति।

यदि वृक्षारोपणस्य कार्य निरन्तरं भवेत्। तर्हि प्रदूषण समस्यायाः समाधानं भवेत्।

वेदानां महत्त्वम्

शीतल
एम.ए.द्वितीय

वेद-शब्दार्थ- 'विद् ज्ञाने' इति ज्ञानार्थकाद् विद् धातोः धञि प्रत्यये कृते 'वेद' इति रूपं निष्पद्यते। एवं वेदशब्दो ज्ञानार्थकः।

ज्ञानराशिर्वेद इति वक्तुं शक्यते। विद् सत्तायाम, विद् विचारणे, विद्लृ लाभे, विद् चेतनाख्यान निवासेषु इति धातुभ्योऽपि घञि वेद रूपं निष्पद्यते। वेदाः ज्ञानराशित्वात् शाश्वतस्थयिनः, ज्ञाननिधयः, मानवहितप्रापकाः, मनुजकर्त्तव्यबोधका इति विविधं धात्वर्थ ग्रहणात् ज्ञायते।

वैदिकं साहित्यम्- मुख्यत्वेन वेदशब्दः ऋग्यजुः सामाथर्वनामभिः प्रचलितानां चतसृणां वेदसंहितानां बोधकः। एतेषामेव चतुणां वेदानां व्याख्यानभूता ब्राह्मणग्रन्थाः सन्ति। येषु वैदिककर्मकाण्डस्य विशदं वर्णनमस्ति। एतेषु वेदानाम् आध्यात्मिकी व्याख्याऽपि प्रस्तूयते। एतेषां परिशिष्ट रूपेण आरण्यकग्रन्थाः सन्ति। एषु अध्यात्मविद्यायाः विवेचनं प्राप्तये। उपनिषत्सु च तस्या एव अध्यात्मविद्यायाश्चरमोत्कर्षः संलक्ष्यते। वैदिकसाहित्यशब्देन समग्रोऽपि मन्त्र-ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषद्-संग्रहरूपो निधिर्गृह्यते।

वेदानां वैशिष्ट्यम्- वेदार्थानुशीलनाद् ज्ञायते यत् वेदा हि विविधज्ञान विज्ञानराशयः संस्कृतेराधाररूपाः कर्त्तव्याकर्त्तव्यबोधकाः, शुभाशुभनिदर्शकाः, जीवनस्योन्नायकाः, विश्वहित-संपादकाः, ज्ञानालोकप्रसारकाः, आशाया आश्रयाः, नैराश्य विनाशकाः, चतुर्वर्गावाप्ति सोपानस्वरूपाश्च सन्ति। वेदानां धार्मिकं, राजनीतिकम्, आर्थिकम्, भाषा-वैज्ञानिकम्, ऐतिहासिकम्, काव्यशास्त्रीयम्, साहित्यिकं च महत्त्वमद्य सर्वैः स्वीक्रियते।

वेदानां धार्मिकं महत्त्वम्- वेदा मन्वादिभि ऋषिभिः परमप्रमाणत्वेनोपन्यस्ताः। "वेदोऽखिलो धर्ममूलम्" (मनु.) इति समुद्घोषयता मनुना समग्रस्यापि वेदनिधेः धर्माधाररूपेण प्रतिष्ठा विहिता। मानवस्याखिलं कृत्यजातं कर्त्तव्याकर्त्तव्यं वा वेदेषु विशदतया निरूप्यते। अत एव वेदा आचार-संहितारूपेण प्रमाणी क्रियन्ते।

वेदानां सांस्कृतिकं महत्त्वम्- भारतीयायाः संस्कृतेर्मूल-स्रोतोऽनुसंधीयते चेत् तर्हि वेदा एव तन्मूलस्रोतत्वेन-उपतिष्ठन्ति। वेदेष्वेव प्राचीनतमा भारतीया संस्कृतिः वर्णिता अस्ति। भारतीयायाः संस्कृतेर्मूलरूपं वेदेषु एवोपलभ्यते। वेदेष्वेव प्राक्तन-भारतीयानां जीवनदर्शनं, कार्यकलापः, आचारविचाराः नैतिकम्, सामाजिक च चरितं प्राप्तये। मानवानां विविधकर्त्तव्यादिनिर्धारणं तत्रैवोपलभ्यते। उक्तं च मनुना-

सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक्-पृथक्।
वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे॥ (मनु.)

शास्त्रीयम् महत्त्वम्- वेदानां शास्त्रीयं महत्त्वं सर्वतोमुख्यं वर्तते। "सर्वज्ञानमयो हि सः" इति वदता मनुना वेदानां सर्वविधज्ञाननिधानत्वम् उरीकृतम। यदि विचारदृशा समीक्ष्यते तर्हि वेदेषु बीजरूपेण दार्शनिकाः सिद्धान्ताः, राजनीतिः समाजशास्त्रम्, अध्यात्मम्, मनोविज्ञानम्, आयुर्वेदः, नाट्यशास्त्रम्, काव्यशास्त्रम् अन्याश्च विविधाः कलास्तत्र वर्णयन्ते। वैदिकं दर्शनम् अध्यात्मतत्त्वं चोपादाय उपनिषदो विविधानि दर्शनानि च प्रवृत्तानि। तथ्यमेतद् निदर्शन रूपेण नाट्य शास्त्रकृतो भरतमुनेः विवेचनेन विशदी भवति-

जग्राह पाठ्यम् ऋग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च।

यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि॥ (नाट्य.)

नैतिकं महत्त्वम्- वेदानां आचार शिक्षा-दृष्ट्या, नैतिक दर्शनरूपेण चातीव महत्त्वं वर्तते। कर्त्तव्योद्बोधनरूपेण तेषां परमं प्रामाण्यं वर्तते। किं कर्म, किम् अकर्मेति चिन्तायां वेदा एवादर्शरूपेण प्रस्तूयन्ते। अत एव मनुना उच्यते-

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम्॥

सामाजिकं महत्त्वम्- समाजशास्त्रीयदृष्ट्याऽपि वेदा अत्यन्तं महत्त्वपूर्णाः सन्ति। समाजस्य निकासस्य, सभ्यतायाः समुन्नतेः, वर्णानां विविध-वृत्तिपराणां नराणां च कर्मकलापस्य, सामाजिक्या व्यवस्थायाश्च किं स्वरूपमासीदित्यापि तत् एवाप्तुं पार्यते।

आर्थिकं महत्त्वम्- अर्थशास्त्रदृष्ट्याऽपि वेदानां महत्त्वमस्ति। वेदेषु प्रत्नाया अर्थव्यवस्था स्वरूपं स्फुटं समवाप्यते। आदान-प्रदानस्य, क्रय-विक्रयस्य, व्यापारस्य, वाणिज्यस्य च गवादिपशूनाम्, कृषि-धान्यादीनां च का व्यवस्थावस्था चासीदित्यपि तत्र प्राप्तुं शक्यते आदान-प्रदानस्य महत्त्वं यजुर्वेदे वर्ण्यते-

देहि में ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे।
निहारं च हरासि मे निहारं निहराणि ते॥ यजु.॥

राजनीतिकं महत्त्वम्- राजनीतिशास्त्रदृष्ट्यापि वेदानां महत्त्वं नावमूल्ययितुं शक्यते। वेदेषु राज्ञः प्रजायाश्च कर्माणि, राजतन्त्रस्य विविधं स्वरूपम्, सभायाः समितेश्च संस्थापना, मन्त्रिपरिषदो मनोनयनम्, राजतन्त्रीया प्रजातन्त्रीया च शासनव्यवस्था, शत्रु-संहारः, सामदामदण्डादिविधिनां प्रयोगः समुपलभ्यन्ते। वेदेषु राज्ञो निर्वाचनस्य प्रजातन्त्रीयाया राजव्यवस्थायाश्चापि समुल्लेखो विविधेषु स्थलेषु उपलभ्यते। तद्यथा-

त्वां विशो वृणतां राज्याय। (अथर्व. 3-4-2)

महते जानराज्याय। (यजु. 9-40)

उपसंहारः- एवं वेदाध्ययनं जीवनं पावयति, चिन्ताकुलं जगत् चिन्तास्त्रायते। लोकानां विविधाः समस्या निवारयति। जीवनम् उन्नमयति, सद्भावांश्च प्रेरयति, इति सर्वथा वेदानां महत्त्वं सिध्यति।

भारतीया संस्कृति

अंजली नागर
बी.ए. तृतीय

भारतं वर्षं स्वकीयां सस्कृतिमादाय गर्वमुद् वहति। भारतीय संस्कृते राधारो वेदः। वेदश्च प्राचीनतमः। इत्थं भारतीय संस्कृतिरपि प्राचीनतमा। ऋग्वेदमन्त्रे कथितम्-

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा"।

विश्वैः सर्वैः मानवै वरयितुं स्वीकर्तुं गृहीतुं वा शक्या भारतीया संस्कृतिः वस्तुतो विश्वजनीना सार्वभौमिकी व संस्कृतिरस्तीति निर्विवादम्। इयं हि संस्कृतिः-

लोकमंगलकारिणी, सतापत्रवहारिणी, सकलभुवनजनधारिणी, ज्ञानालोकप्रसारिणी, आचारसंचारिणी, सुखशान्तिदायिनी, विश्वबन्धुत्वविकासिनी भवसागरतारिणी चेति।

संस्कृतेरर्थ- "सम्" पूर्वकात् 'कृ' धातोः क्तिन् प्रत्यये कृते सति संस्कृति शब्दः सिद्धयति। अत्र-"सम्परिभ्यां करोतौ भूषणे"-

इति व्याकरणनियमेन सुडागमोऽपि विधीयते।

इत्थं साक्षात्कृतधर्मणां ऋषीणाम्, पुरातनाचार्याणाम्, चिरन्तनमुनानां च यो भूपितः परम्परागतः उत्तमः आचारः विचारश्च, स एव संस्कृति शब्देनाच्यते। एवमेव संस्कृति शब्देन-

"मनसः आत्मनो वा संस्करणं परिष्करणम् च"-

इत्यपि अर्थो गृहयते। वस्तुतो भारतीया संस्कृतिरेव परिपूर्णतया संस्कृतिशब्दस्य सार्थकतां द्योतयति।

भारतीय संस्कृतेर्महत्त्वम्-

भारतीय संस्कृतेर्महत्त्वं सर्वथा अद्वितीयम् अक्षुण्णं च। अस्याः कतिपयविशिष्टताः सन्ति याभिरेषा प्राचीनतमापि सती अद्यावधि स्वविजयवैजयन्तीं दोधूयमानां विश्वप्राङ्गणे विराजतेतराम्। भारतीयसंस्कृतेः काश्चन विशेषताः अत्र संक्षेपतो निर्दिश्यन्ते-

सहिष्णुता-सेयं भारतीया संस्कृतिः सहिष्णुतायाः प्रतिमा वरीवर्ति। अस्यां सर्वे जनाः, सर्वे वर्गाः, सर्वे सम्प्रदायाः, सर्वा जातयः उपजातयश्च समावेशं लभन्ते। अत्र संकुचितताया लेशोऽपि नास्ति।

विश्वबन्धुत्वम्- विश्वबन्धुत्वं भारतीयसंस्कृतेरात्मा। यजुर्वेदे कथितम्।

"मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे। यजु. 39/18

एकस्मिन् मन्त्रे सर्वासु दिक्षु तत्र वास्तव्येषु च मानवेषु मित्र भावना इत्थमभिव्यक्ता-

"सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु"। अथर्व. 19/15/6

भारतीय संस्कृत्यनुसारं सर्वे मानवाः एकस्येव पितुः परमेश्वरस्य पुत्राः। अत एव सर्वे परस्परं बान्धवाः। व्यर्थ एव निजस्य परस्य च भेदः। वस्तुतः सर्वथा सत्यमेव इदं कथनम्-

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्। हितो. 1-6-9

विश्वमंगलभावना- भारतीया संस्कृतिः सर्वेषां मंगलम् इत्थं कामयते-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।"

भारतीय संस्कृतेरियं विशेषता अस्ति यदत्र सर्वाः कामनाः सर्वाः भावनाः सर्वाश्च प्रार्थनाः समष्टियुताः सन्ति। तद्यथा वेदमन्त्रेषु-

(क) वयं स्याम पतयो रयीणाम्। ऋक्. 10/121/10

(ख) यद् भद्रं तन्न आ सुव। यजु. 30/3

(ग) धियो यो नः प्रचोदयात्। यजु. 36/3

(घ) शं योरभिस्रवन्तु नः। यजु 36/12

(ड़) शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे। अथर्व. 16/22/2

इयं भद्रभावनां इयं च लोककल्याणकामना वस्तुतः उदारतायाः पराकाष्ठा एव अस्ति यामवलम्ब्य विश्वकल्याणं संभवम्।

अध्यात्मवादः-

भारतीया संस्कृतिः अध्यात्मवादे विश्वसिति। भौतिकं संघातं संचालयितुं चेतनस्वरूपस्य आत्मतत्त्वस्य अनिवार्यत्वं स्वतः सिद्धम्। यथा देहे जीवात्मा संचालकस्तथैव जगति विश्वात्मा परमात्मा वा नियामकः। न्यायदर्शने-

"इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिङ्गम्"-

इत्येवंरूपेण आत्मनः स्वरूपं वर्णितम्।

त्यागभावना-

विश्वस्मिन्नस्मिन् त्यागभावना श्रेयस्करी। अतः सर्वैरपि मानवैः सर्वाणि वस्तूनि त्यागभावनया समुचिद्वितरणेनैव भोक्तव्यानि। अमुमेव सिद्धान्तमाश्रित्य त्यागपूर्वकम् भोगमुपदिशति भगवती श्रुतिः-

"तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्"। (यजु. 40/2)

भारतीयसंस्कृतौ स्वार्थस्य शोषणस्य च लेशोऽपि नास्ति। अत्र तु स्वार्थी केवलभोजी जनः केवलपापीत्यभिधीयते-

"केवलाघो भवति केवलादी"

इत्थमेव- "एकः स्वादु न भुञ्जीत"- इति

राद्धान्तोऽपि त्यागस्यैव प्रतीकभूतः।

यज्ञप्राधान्यम्-

श्रीमद्भगवद्गीतानुसारं यो यज्ञं कृत्वा तच्छिष्टं भुनक्ति स पापेभ्यो मुच्यते-

"यज्ञशिष्टाशिनः सर्वे मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः।"

भगवता मनुना पंचयज्ञविधानं विहितम्-

'अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।

होमो हैवो बलिभौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।।"

एते पञ्चयज्ञा वस्तुतः परिवारस्य समाजस्य च समुन्नतेः पंच सूत्राण्येव। यज्ञेन सकलमपि वातावरणं शुद्धं, पवित्रं, सुपुष्टं च जायते।

वर्णाश्रमव्यवस्था

वर्णाश्रमव्यवस्थासमाजस्य आधारशिला। ब्राह्मणक्षत्रिय-वैश्य-शूद्राश- चत्वारोवर्णाः समाजस्य अङ्गभूताः। सर्वे वर्णाः एकस्याम्-ऋषि ब्रह्मणः अङ्गरूपेण प्रकल्पिताः-

'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

उरू तद्स्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत।।"

एवमेता विशेषताः भारतीयां संस्कृतिं सर्वोच्चपदवीं प्रतिष्ठापयन्ति खलु। एवदतिरिक्तिम्-सदाचारः, सत्यव्यवहारः, अंहिसापालनम्, समत्व भावना, परोपकारः, सह-अस्तित्वम्, दया, उदारता, सर्वभूतेष्वात्मदृष्टिः इत्यादीनि तत्त्वानि भारतीय संस्कृते र्महत्तां, विशालतां, श्रेष्ठतां, सार्वभौमिकतां, सर्वग्राह्यतां च प्रमाणयन्ति।

वेदाङ्गानि

सीमा
बी.ए. तृतीय

वेदाः अस्मद् प्राचीनधर्मग्रन्थाः। श्रुत्याः दृढ़ाधारशिलायां भारतीयधर्मस्य तथा सभ्यतायाः भव्यविशालप्रासादः प्रतिष्ठितः। वेदस्य भाषा प्राचीनतमा अस्ति। अतः आर्यभाषायाः मूलस्वरूपस्य ज्ञानं वैदिकभाषां विना असम्भवमेव विद्यते। भारतीयसाहित्यस्य विशालप्रासादस्याधारशिलाः अपि वेदाः एव। अतएव बहुविधा खलु वेदमहिमा।

वेदस्य द्वौ भागौ स्तः संहिता ब्राह्मणं च। मन्त्राणां समुदायः संहिता इति कथ्यते। ब्राह्मणग्रन्थेषु मन्त्राणां व्याख्या प्राप्यते परम् अस्य मुख्योद्देश्यं यज्ञयागस्य सविस्तारवर्णनमस्ति।

ब्राह्मणकालस्यानन्तरं सूत्रकालस्य प्रारम्भो भवति। अस्मिन् काले श्रुत्याः स्मृतिः श्रेष्ठतरा विद्यते। ग्रन्थानां रचनापि विलक्षणा स्वल्पाक्षरै विपुलार्थस्य प्रदर्शनस्योद्योगं कृतम्। यज्ञयागस्य विस्तारोऽभवत। अतः इमं स्मरितुं एतादृशानां स्वल्पग्रन्थानामावश्यकता प्रतीयतेस्म। अस्य कालस्य ग्रन्थाः वेदार्थ विषयञ्च ज्ञातुं उपयोगिवर्तन्ते अस्मात् कारणात् वेदस्याङ्गानि वेदाङ्गानि इति कथ्यन्ते।

वेदस्यार्थज्ञानाय षट्विधविषयाणां ज्ञानस्यावश्कता प्रतीयते। मन्त्राणमुचितो- च्चारणाय शिक्षायाः, कर्मकाण्डस्यानुष्ठानाय कल्पस्य, शब्दानां रुपज्ञानाय व्याकरणस्य, अर्थज्ञानाय निरुक्तस्य' वैदिकछन्दसां परिज्ञानाय छन्दसः एवमनुष्ठानोचितकालनिर्णयार्थ ज्योतिषशास्त्रस्य उपयोगो वर्तते। एवमनया उपयोगितया एव एतानि षट्वेदाङ्गानि इति कथ्यन्ते।

अस्मिन् व्याकरणं वेदस्य मुखं स्मृतम्। ज्योतिष् नयनं, निरुक्त श्रोतं कल्पो हस्तौ, शिक्षा नासिका, छन्दाः पादौ च मन्यन्ते। पाणिनीयशिक्षायामुक्तमपि-

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रौत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।

अतः वेदाङ्गानां वेदेन सह घनिष्ठो सम्बन्धो विद्यते।-

शिक्षा-वेदाङ्गेषु शिक्षायाः महत्त्वपूर्ण स्थानं विद्यते। यथा घ्राणं विना परिपुष्टं सुन्दरमपि मानवशरीरं नितान्तगर्हणीयमशोभनं च प्रतीयते तथैव शिक्षानामक वेदाङ्गं विना वेदपुरुषस्य स्वरूपं नितान्तासुन्दरं वीभत्सं च दरीदृश्यते। वेदानामुच्चारणाय ज्ञानप्रदायकाः ग्रन्थाः 'शिक्षा' कथ्यन्ते। सायणमहोदयेनापि कथितम्-

"स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा"।

(ऋग्वेदभाष्यभूमिका)

वेदपाठे स्वराणां भृशं महत्त्वं विद्यते। स्वरदोषेणार्थस्य अनर्थं भवति। अस्मिन् विषये अत्यन्तप्राचीनाख्यायिकापि प्रचलिता अस्ति। वृत्रेण स्वशत्रोः इन्द्रस्य, विनाशाय यज्ञायोजनं कृतम्। प्रधानमन्त्रम् 'इन्द्रशत्रुर्वर्धस्व' इति आसीत्। अस्योच्चारणे अनवधानतया स्वरपरिवर्तनं बभूव। फलतः यस्य यज्ञस्य विधानं यजमानस्य फलसिद्धये कृतं तेन तस्यैव नाशो वभूव। पाणिनीयशिक्षायाँ स्पष्टमेव उदीरितम्-

मन्त्रोहीनः स्वरतो वर्णतो वा
मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति
यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्॥ (पा. शि.)

प्राचीनकालदेव इमं वेदाङ्गं प्रति वैदिकऋषिणां चित्ताकृष्टोऽभूत्। ब्राह्मणग्रन्थेषु शिक्षासम्बन्धिनियमानामुल्लेखो यत्र तत्र प्राप्यते। तैत्तरीयोपनिषदः प्रथमवल्लयां अस्य विषयस्य मूलसिद्धान्तं प्रतिपादितम्। शिक्षायाः षडङ्गानि वर्तन्ते–

'शीक्षां व्याख्यांस्यामः। वर्णः स्वरः, मात्रा, बलम्, साम, सन्तानः इत्युक्तः शीक्षाध्यायः' । (तैत्तिरीय 1. 2.)

दोषरहितमाधुर्यादिगुणयुक्तोच्चारणं साम कथ्यते। उक्तमपि–

माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।
धैर्य्यं लयसमर्थञ्च षडेते पाठकाः गुणाः॥

पदानामतिशयसन्निधि सन्तान' इति कथ्यते। प्रत्येकं वेदस्य भिन्न-भिन्न शिक्षा वर्तते। शुक्लजुर्वेदस्य शिक्षा याज्ञवल्क्यशिक्षा कथ्यते। सामवेदस्य शिक्षा नारदशिक्षा इति नाम्ना स्मृता। अथर्ववेदस्य शिक्षा माण्डुकी शिक्षा अस्ति। अन्यञ्च वसिष्ठीशिक्षा कात्यायनी शिक्षा पारशरी शिक्षामाण्डवय शिक्षामाध्यन्दिनीशिक्षाप्रातिशाख्यप्रदीपशिक्षाकेशवीशिक्षाप्रभृतयः ग्रन्थाः अपि प्रसिद्धाः। पाणिनिकृतशिक्षा अपि विद्यते या पाणिनीयशिक्षा नाम्ना प्रसिद्धा। पाणिनीय शिक्षा सर्वशिक्षासु श्रेष्ठतमा लोकप्रिया चास्ति।

कल्प–

वेदाङ्ग साहित्ये कल्पस्य स्थानं नितान्तं महत्वपूर्ण विद्यते। वेदविहितानां कर्मणां क्रमेण व्यवस्थितकल्पनाशास्त्रं कल्पेति कथ्यते। उक्तमपि–'कल्पोवेदविहितानां कर्मणामानुपूर्व्येण कल्पनाशास्त्रम्'। ब्राह्मणकाले, यज्ञयागस्य एतादृशो विस्तारो वभूव यत् तेपां यथोचितज्ञानाय संक्षिप्तपूर्णपरिचययुतानां रचनानामावश्यकता वभूव। अस्याः आवश्यकतायाः पूर्ति कल्पनासूत्रैः कृता। फलतः वैदिकग्रन्थेषु येषां यज्ञयागविवाहोपनयनादिनां कर्मणां विशिष्टप्रतिपादनं कृतम्। तेषामेव क्रमबद्धवर्णनशास्त्र 'कल्प' इति कथ्यते।

कल्पसूत्रस्य द्वौ भेदौ स्तः। श्रीतसूत्रस्मार्त्तसूत्रञ्च। स्मार्त्तसूत्रस्यापि द्वौ भेदौ वर्तेते गृहसूत्रं कर्मसूत्रञ्च। श्रौतसूत्र षु श्रुतिप्रतिपादितयज्ञानां क्रमबद्धविवेचनं प्राप्यते। त्रयाणामाग्निनामाधानस्याग्निहोत्रपशुयागानां विशेषतः सामयागानां वर्णनमपि कृतम्। एवं श्रौतसूत्रेषु भारतीयज्ञानपद्धतेः मूलस्वरूपरूस्य ज्ञानाय पर्याप्तसामग्री प्राप्यते। गृहसूत्रेषु प्रत्येकं हिन्दुगृहस्थोपयोग्याचारानुष्ठानयागानां च वर्णनं वर्तते। षोडषसंस्काराणां वर्णनं तु सविस्तारं प्राप्यते। एतेषां ग्रन्थानामध्ययनेन प्राचीनभारतीयाचारविचारानां ज्ञानं सुष्ठु भवति। गृहसूत्रैः सह धर्मसूत्राणि अपि सम्बद्धानि। एषु सूत्रेषु धार्मिकनियमानां राजाप्रजानां कर्त्तव्याधिकाराणां च सविस्तारं वर्णनं मिलति। चतुर्णां वर्णानाम् आश्रमाणां च धर्मस्यापि वर्णनं कृतम्।

शुल्वसूत्राण्यपि कल्पसूत्रस्याङ्गानि विद्यन्ते। एषु वेदीनिर्माणरीत्याः विवेचनं प्राप्यते। सांख्यायनाश्वलायनञ्च ऋग्वेदस्य कल्पसूत्रै स्तः। शुक्लयजुर्वेदस्य कात्यायनश्रौतसूत्र पारस्करगृहसूत्रं, कात्यायनशुल्वसूत्रम् कल्पसूत्राणि। कृष्णयजुर्वेदस्य बोधायनापस्तम्बशाखायामुपलब्धानि कल्पसूत्राणि समग्राण्येव महत्त्वपूर्णानि च कथ्यन्ते यतो हि तेषु श्रौतगृह्यधर्मशुल्वचतुर्णां सूत्राणां समन्वयो दरीदृश्यते।

लाट्यायनद्राह्यायनयोः श्रौतसूत्राणि एवं जैमिनीयशाखायाः सम्बद्ध जैमिनीय श्रौतसूत्रं, जैमिनीयगृहसूत्रं, गोमिलखादिरयोः गृहसूत्राणि च सामवेदस्य सम्बद्धानि कल्पसूत्राणि विद्यन्ते। आर्षेयकल्पमपि सामवेदे विगणयते। अथर्ववेदस्यान्तर्गते द्वौ

ग्रन्थौ प्राप्नुतः। वेतानश्रौतकौशिकसूत्रञ्च। प्राचीन भारतस्याभिचारज्ञानाय कौशिकसूत्रात् श्रेष्ठतरो कोऽपि ग्रन्थो न प्राप्तये।

व्याकरणम्-

यथा मुखहीनस्य मानवस्य महत्त्वं न वर्तते तथैव व्याकरणं विना वेदपुरुषोऽपि सारहीनोऽर्थहीनो च प्रतीयते। व्याकरणं विना वेदपुरुषस्य शरीरस्य रक्षा असम्भवा एव। ऋग्वेदे व्याकरणं वृषभं स्वीकृतम्। नामाख्यातोपसर्गं निपातमेव अस्य श्रृङ्गा-

चत्वारि श्रृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्या आविवेश।।

अपि च-

उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः श्रण्वन् त श्रणोत्येनाम्।
उतो त्वस्मै विसस्त्रे जायेव पत्ये उशती सुवासाः।।

व्याकरणज्ञानेनानभिज्ञो मानवो दृष्ट्वापि न पश्यति। श्रुत्वापि न श्रृणोति।
अस्य वेदाङ्गस्योद्देश्य वेदार्थस्य रक्षा अस्ति। महाभाष्यकारेणाप्युदीरितम्-

रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्। लोपागमवर्णविकारज्ञो हि सम्यग्वेदान् परिपालयिष्यति। व्याकरणस्य प्रयोजनान्युद्दिश्य सः कथयति-

'रक्षोहागमलध्वसन्देहाः प्रयोजनम्।'

रक्षोहागमलाघवसन्देहनिवृत्ति एतानि पञ्च व्याकरणस्य प्रयोजनानि सन्ति।

प्रकृतियागे विनियुक्त मन्त्राणां देवतादिवाचकपदानां विकृतियागस्य देवतादि बोधार्थं परिणति 'ऊह कथ्यते। व्याकरणस्य ज्ञानं विना एतत्कर्त्तुं न शक्यते। पतञ्जलिनापि लिखितम्-

"न सर्वे लिङ्गै न च सर्वाभिर्विभक्तिभिर्वेमन्त्रा निगदिताः। ते चावश्यं यज्ञगतेन पुरुषेण यथायथं विपरिणमयितव्याः। तान्नावैयाकरणः शक्नोति यथायथं विपरिणमयितुम्। तस्मादध्येयं व्याकरणम्।"

लघ्वर्थमपि व्याकरणस्याध्ययनम् आवश्यकम्-

"लघ्वर्थ चाध्येयं व्याकरणम्। ब्राह्मणेनावश्यं शब्दा ज्ञेया इति। न चान्तरेण व्याकरणं लघुनोपायेन शब्दाः शक्या ज्ञातुम्।" (महाभाष्य)

व्याकरणाध्ययनेन सन्देहस्य निवारणोऽपि भवति। तेऽसुरा, दुष्टः शब्दः, यदधीतम्, यस्तु प्रयुङ्कते, अविद्वाँसः विभक्तिं कुर्वन्ति, चत्वारि, उतत्वादिनि व्याकरणस्य गौणप्रयोजनानि। पाणिनिव्याकरणमेवस्य वेदाङ्गस्य प्रतिनिधिस्वरूपेण प्राप्यते। पाणिनिकृतव्याकरणग्रन्थः 'अष्टाध्यायी' अस्ति। तस्मात् पूर्वमपि गार्ग्यस्फोटायनशाकटायनभारद्वाजादयः आचार्याः आसन्। प्रातिशाख्यनामग्रन्थेऽपि स्वरछन्दव्याकरणस्य वर्णनं प्राप्यते। सम्प्रति ऋग्वेदस्य शौनक प्रातिशाख्यो शुक्लयजुर्वेदस्य कात्यायनप्रातिशाख्यो प्रसिद्धोऽस्ति। अन्यवेदानामपि प्रातिशाख्याः मिलान्ति।

निरुक्त-

अस्मिन् वेदाङ्गे शब्दानाम् उत्पर्त्तिदर्शिता। वेदार्थस्य ज्ञानाय शब्दव्युत्पत्तयाः महत्यावश्यकता वर्तते। अर्थज्ञानस्य दृष्ट्या स्वतन्त्रपदसंग्रहैव निरुक्त कथ्यते। सायणानुसारमपि-

'अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तंतन्निरुक्तम्'।

सम्प्रति यास्ककृतनिरुक्तमेवोपलभ्यते। प्राचीनकालादेव 'निघण्टुः' ग्रन्थो प्राप्यते। यस्मिन् वेदस्य शब्दानां क्रमबद्धतालिका वर्तते। अस्मिन् ग्रन्थे एव यास्केन विस्तृत भाष्यं रचितं यद् निरुक्त इति नाम्ना प्रसिद्धिमवाप। यास्कानुसारं समस्तशब्दाः धातुजाः विद्यन्ते।

छन्द-

वेदमन्त्राणामुच्चारणाय छन्दज्ञानमपि आवश्यकं विद्यते। छन्दज्ञानमन्तरेण वेदमन्त्राणां साधूच्चारणसम्भवमेव ततो हि मन्त्राः छन्दोबद्धाः विद्यन्ते। प्रत्येकं सूक्तेऽपि देवताऋषिछन्दसां ज्ञानमावश्यकं मन्यते। कात्यायनमतानुसारं तु यो छन्दऋषिदेवतानां ज्ञानमन्तरेण मन्त्राणामध्ययनमध्यापनं यजनयाजनं वा करोति। तस्य कार्य निष्फलं भवति-

यो ह वा अविदितार्षेयच्छन्दो दैवतब्राह्मणेन मन्त्रेण याजयति वा अध्यापयति वा स्थाणुं वर्च्छति गर्ते वा पात्यते प्रमीयते वा पापीयान् भवति। (सर्वानुक्रमणी)

शौनककृतऋकप्रातिशाख्यग्रन्थस्यान्ते छन्दसां पर्याप्तविवेचनं प्राप्यते परमस्य वेदाङ्गस्यस्वतन्त्रग्रन्थो पिङ्गलकृत 'पिङ्गल' इत्यस्ति। अस्मिन् ग्रन्थे वैदिकलौकिकद्वयानां छन्दानां वर्णनं प्राप्यते। वैदिकछन्देभ्य एवं लौकिकछन्दसा विकासोऽभवत्। छन्दसामाधारमन्तरेण वेदपुरुषो चलितुमपि न सक्षमो विद्यते।

ज्योतिष्-

वेदाः यज्ञप्रतिपादनायैव प्रवृत्ताः। कालस्योचितनिवेशेन सह यज्ञस्य सम्बन्धो वर्तते। अस्माद् कारणादेव ज्योतिषं कालस्य विधायकशास्त्रमपि कथ्यते। यो ज्योतिषं जानाति सैव यज्ञस्य ज्ञाता विद्यते। यज्ञस्य सफलता केवलं तस्योचितविधाने एव निहिता नास्ति। उचितनक्षत्रस्य उचितावसरस्यापि प्रभावो भवति-

वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्वा विहिताश्चयज्ञाः।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्॥

अपि च-

तेऽसुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षताः।
यच्च किञ्चाकुर्वत तां कृत्यामेवाकुर्वत॥

भास्कराचार्येणापि उक्तम्-

वेदास्तावद्यज्ञकर्मप्रवृत्ता यज्ञा प्रोक्तास्ते कालाश्रयेण।
शास्त्रादस्मात् कालबोधो यतः स्यात् वेदाङ्गत्वंज्यौतिषस्योक्त मा स्मात्॥
वेदाङ्गज्योतिषानुसारं तु ज्यौतिष् समस्त वेदाङ्गेषु मूर्धन्यमस्ति-
यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद् वेदाङ्गशास्त्राणां गणितं मूर्धनि स्थितम्॥

अस्य वेदाङ्गस्य प्रतिनिधित्वरुपेण वेदाङ्गज्यौतिष प्राप्यते। लगधोऽस्य रचयिता विद्यते। अस्य ग्रन्थस्य द्वौ संस्करणौ स्तः। प्रथमो यजुर्वेद सम्बन्धितोऽस्ति द्वितीयो ऋग्वेदसम्बन्धितो विद्यते। सोमकरस्य प्राचीनटीका एवं सुधाकरद्विवेदीकृत नवीन सुधाकरभाष्यमपि लभते।

अनुक्रमणी-

तेषामनुक्रमणीनाम् उल्लेखोऽपि वेदाङ्गसाहित्ये आवश्यको विद्यते येषां रचना वेदरक्षार्थम् एवं वेदार्थस्य मीमांसार्थं चाभवत्। आर्षानुक्रमण्यां ऋग्वेदस्य मन्त्राणां दृष्टाऋषिणां वर्णनं प्राप्यते। छन्दोऽनुक्रमण्यां ऋग्वेदस्य देवता मन्त्रक्रमेण वर्णिता। शौनकस्य वृहद्देवताऽपि अस्मिन् विषये एको प्रामाणिकोपादेयश्च ग्रन्थो विद्यते। अस्मिन् ऋग्वेदस्य देवतानां वर्णनं तु प्राप्यते एव अपितु अनेकानां प्राचीनाख्यायनानां कथानकानां चापि रोचक विवरणं वर्तते। कात्यायनस्य 'सर्वानुक्रमणी' अप्यस्य विषयस्य प्रसिद्धं पुस्तकमस्ति। अतः वेदार्थस्य रक्षार्थमनुक्रमणीसाहित्यमपि अत्यावश्यकम्।

वर्णाश्रमव्यवस्था

प्रीति
एम.ए. द्वितीय

भारतीयसंस्कृतौ वर्णाश्रमव्यवस्थेयं निरतिशयमहत्त्वं भजते। भारतीयसमाजस्य समुत्कर्षार्थं समस्तविश्वोन्नत्यर्थञ्चेयं नूनं किमप्यनर्घ्यमुपायनम्। समाजस्य कल्याणार्थमेव अस्या व्यवस्थाया महर्षिवराणां मस्तिष्कपटलेषु अवतरणम। तत्र चत्वारो वर्णाः, चत्वारश्च आश्रमा निर्धारिता दृश्यन्ते गुणकर्मस्वभावतः। चतुर्णी वर्णानां विभागः-

"चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मस्वभावतः।" (गीता) ब्राह्मणः, क्षत्रियः, वैश्यः, शूद्रश्चेति चत्वारो वर्णाः। ते सर्वेऽपि समाजस्योन्नत्यर्थ परमावश्यकाः सन्ति। न ते परस्परं प्रतिस्पर्द्धन्ते। अपि तु समन्विताः सन्तः परस्परोपकुर्वन्ति बहुतरम्। नह्येषु समुत्कर्षत्वेन उत्तमाधमभावो वा पदमाधत्ते। यद्यपि सर्वेषामेषां धर्माणां पृथक् पृथगिव वैशिष्टयमधिकृत्य इमे प्रतिभान्ति। तथापि तत्त्वतः सर्वेऽमी समानभावं जुषमाणाः वरीवर्तन्ते, तेऽमी परस्परं मात्रयाऽपि न विसंवदन्ते। शास्त्रेषु एषां कर्त्तव्यानि धर्माश्चापि पृथक् उपदिष्टाः सन्तोऽपि ते समाजस्य सर्वसामान्यधर्ममेवावहन्ति, तदुक्तं कौटिल्येन स्वकीयेऽर्थशास्त्रे "एष त्रयी धर्मः चतुर्णी वर्णाश्रमानां स्वधर्मस्थापनादौपकारिकः।" स्वधर्मो ब्राह्मणस्याध्ययनमध्यापनं यजनं दानं प्रतिग्रहश्चेति। क्षत्रियस्याध्ययनं यजनं दानं शस्त्राजीवो भूतरक्षणाञ्च। वैश्यस्याध्ययनं यजनं दानं कृषिपशुपाल्ये वाणिज्यञ्च। शूद्रस्य द्विजातिशुश्रूषा वार्त्ताकारु कुश लवं कर्म चैव धर्म इति, स एव वर्णधर्मः संग्रहेण प्रदर्शितः। यद्यपि इमे वर्णाः साम्प्रतिके काले जातिपदव्यपदेश्याः सञ्जाताः। जातिशब्दो हि जन्मवचनः, जात्या जन्मना एव ब्राह्मणादयो भवन्ति ब्राह्मणकुले समुत्पन्नो ब्राह्मणः, क्षत्रियकुले समुत्पन्नः क्षत्रियो, वैश्यकुले उत्पन्नो वैश्यः, शूद्रकुले चोत्पन्नः पुनः शूद्र इति तथापि प्राचीनकाले तु गुणकर्मस्वभावत एव ते ब्राह्मणादयो भवन्ति स्म। ब्राह्मणकुले जातोऽपि यदि गुणकर्मतः ब्राह्मणो न भवेत्तर्हि स ब्राह्मणवर्णाद्विच्युतो भवति स्म। इत्थमेव अन्ये क्षत्रियादयः अपि तत्तद्वर्णार्हगुणकर्मणोर्विहीनाः सन्तः तत्तद्वर्णाच्च्यवन्ते स्म। न हि तेषु स्वस्वधर्मविहीनेषु तत्ताकोटिरवगाहते स्म। तदेतदनेकैरितिवृत्तवृतैः साधयितुं न दुष्करमिति। यदि नाम कश्चिद् व्यक्तिविशेषः जन्मना कर्मणापि तत्तद्गुणकर्मविशिष्टः स्यात् तर्हि तु स्वर्णसुगन्धिवत् अतितराममिनन्दनायः स्यादिति। यथा राजर्षिः विश्वामित्रः तपः श्रुतिप्रभृतिगुणराशिबलेन ब्रह्मर्षितामियाय। इत्येवमादयः। उक्तञ्च-

तपः श्रुतश्च योनिश्चेत्येतद्ब्राह्मणकारणम्।
तपःश्रुताभ्यां यो हीनः जातिब्राह्मण एव सः॥

अस्यायमभिप्रायः-यद् ब्राह्मणत्वे कारणतां गतानि त्रीणि कारणानि भवन्ति 'तपः श्रुतं योनिश्चेति।' तत्र तपः श्रुताभ्यां हीनः केवलं जातिब्राह्मण इति पदेन व्यपदिश्यते। केवलेन जन्मना स ब्राह्मण्यां लब्धजन्मात्वादेव स किं ब्राह्मणः कुत्सितब्राह्मणः न जातु श्रेष्ठ इत्याशयः। यद्यपि जन्मनावर्णवादिनः प्रत्यवतिष्ठन्ते, यत्कर्मणा गुणगणेन च क्षत्रियकर्मकुर्वाणा

अपि ब्राह्मणाः, अश्वत्थामा प्रभृतयः ब्राह्मणपदेनैव व्यवह्रिवन्ते स्म न क्षत्रियपदेन न वर्णपरिवृत्तिकामयन्त ते। कर्णसङ्काशाः क्षत्रिय गुणालङ्कता अपि नेतिवृत्ते तवृत्ते ते क्षत्रियपदमुपलम्भिताः। सूतसन्ततित्वावष्ठम्भेन ते सूत इति पदैनैव प्रख्यातिङ्गताः। एवं द्रोणाचार्य-कृपाचार्यप्रभृतयः समनुष्ठितक्षात्रधर्माः सर्वे ब्राह्मणपदभाज एव समभूवन् इति सर्वप्रत्यक्षम्। अतः वर्णव्यवस्था जन्मनैवेति तेषां दृढीयान् विश्वासः, परन्तु समुत्कर्षगुणाधायकत्वं तु गुणकर्म कलापेनैव सम्पद्यते। तुष्यतु न्यायेन एतत्स्वीकारे अपि वैशिष्टयं प्राधान्यन्तु खलु गुणकर्मणारेवेति। अत एव प्राह भगवान्मनुः- "जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।" इति।

संस्कारो हि तपःश्रुताभ्यां सुसंस्करणं, तादृशसंस्करणसंस्कृतो जनो द्विजपदवीमुपादत्ते। नान्यथा अत एव ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यादिभिः गुणगणानां ग्रहणे एव यत्नो विधेयः। केवलं जन्मना न सन्तोष्टव्यम्। तदानीमेव सद्बाहाणाः सत्क्षत्रियाः सद्वैश्याश्च भवितुमर्हन्ति। तत्र ब्राह्मणानामध्ययनाध्यापनादीनि क्षत्रियाणां प्रजारक्षणराज्यकार्यादीनि। वैश्यानां पुनः कृषिवाणिज्यादीनि कर्माणि निर्दिष्टानि।

यजुर्वेदे साम्नातम्- ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुते वैश्यं तपसे शूद्रम्। इति। वस्तुतः जगतः कल्याणाय इयं वर्णव्यवस्था निरतिशयोपकारकारिणीति सर्वैः सर्वात्मना इतिकर्त्तव्यत्वेन समनुष्ठेया इति।

मानवजीवनस्योद्देश्यम्

वैशाली
बी.ए. द्वितीय

विदुषां कथनमस्ति यत् 'प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते'। साधारणो जनोऽपि प्रयोजनं विना कस्मिंश्चिदपि कार्ये न प्रवृत्तो भवति। मनुष्यो जन्म धारयति। तस्य जीवनस्य किंचिदुद्देश्यमवश्यमेव भवेत्। संसार ये उद्देश्यहीना भवन्ति, ते कदापि सफला न भवन्ति।

जीवनस्य किमुद्देश्यं स्यादिति विचारे प्रथमतेतत् समक्षं समायाति यत् जीवनस्योद्देश्यं समुन्नतं स्यात्, येन जीवनस्य सफलता स्यात्। समुन्नतेषु उद्देश्येषु देशसेवायाः समाजसेवायाः परोपकारस्य जातेरुद्धरणस्य विद्योन्नतेश्च भावना सम्मुखमायाति। मनुष्यः सामाजिकः प्राणी वर्तते, अतो यदि समाजः समुन्नतोऽस्ति तर्हि सर्वेऽपि सुखिनो भविष्यन्ति। यदि समाजो न समुन्नतोऽस्ति तर्हि सर्वेऽपि विपत्तिग्रस्ता दीना हीनाश्च भविष्यन्ति। यदि देशः पराधीनोऽस्ति तर्हि मनुष्येषु स्वाभिमानस्य भावना न भविष्यति। अतो मनुष्यजीवनस्य मुख्यमुद्देश्यं भवति यत् स मानवजीवनस्य साफल्याय परोपकारं कुर्यात्, देशसेवां कुर्यात्, समाजसेवां कुर्यात्, विद्यायाश्चोन्नतिं कुर्यात्। एवं प्रकारेणैव जीवनं सफलं भवति।

जीवनस्य सफलतायै एतदपि सदा प्रयतनीयं यत् स कदाचिदपि पापं न कुर्यात्, कुत्सितं कर्म न कुर्यात्। पवित्रजीवनस्य यापनेनैव जीवनं सफलं भवति। उक्तं च-

मुहूर्तमपि जीवेत, नरः शुक्लेन कर्मणा।
न कल्पमपि कृष्णेन, लोकद्वयविरोधिना॥1॥

मनुष्यजीवने सदा सवैरेष प्रयत्नः करणीयो यत् स महाविद्वान् महापराक्रमी महायशस्वी सच्चरित्रो दानी परोपकारी समाजसेवी लोकहितकारी धर्मात्मा च स्याद्, अन्यथा मनुष्यजीवने पशुजीवने च न कोऽपि भेदोऽस्ति। साधूक्तं च-

यज्जीव्यते क्षणमपि प्रथितं मनुष्यैर्विज्ञानविक्रमयशोभिरभज्यमानम्।

तन्नाम जीवितमिह प्रवदन्ति तज्ज्ञाः, काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते।।22।।

यो नात्मजे न च गुरौ न च भृत्यवर्गे, दीने दयां न कुरुते न च बन्धुवर्गे।

किं तस्य जीवितफलेन मनुष्यलोके, काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते।।3।।

मनुष्यो जीवननिर्वाहाय यां कामपि आजीविकां ग्रहीतुं शक्नोति, पठनं पाठनं कृषिं वाणिज्यं सेवाकर्म समाजसेवादिकं वा। परन्तु स सदा जीवनसाफल्याय सत्कर्म अवश्यं कुर्यात्। निरुद्देश्यं जीवनं विनश्यति। अतः कदाचिदपि उद्देश्यत्यागो न विधेयः। मनुष्यस्य सदुद्योगेन सदुद्देश्यमपि अवश्यं पूर्णं भवति।

आचार्यदेवो भव

आकांक्षा नागर
बी.ए. प्रथम

भारतीयशास्त्रेषु गुरोर्माहात्म्यं बहु गीतमस्ति। स ईश्वरस्य प्रतिमूर्तिरिति मन्यते। अतः एवोच्यते– 'आचार्यदेवो भव' इति। आचार्यो देवतावत् पूज्यो मान्यश्च। यः शिष्येभ्यो विद्यां ददाति, कर्तव्याकर्तव्यं च बोधयति, सदाचारस्य संयमस्य त्यागस्य तपसश्च शिक्षां ददाति, स आचार्यो गुरुर्वा भवति।

गुरोर्माहात्म्यमेतस्माद् ज्ञायते यद् बालको यदा गुरोः समीपं शिक्षार्थं याति, यज्ञोपवीतं च धारयति, शिक्षां च प्राप्नोति, तदैव स द्विजो द्विजन्मा द्विजातिर्वा भवति। अन्यथा स शूद्र एव भवति। माता पिता च बालकस्य शरीरमेव सृजतः, गुरुस्तु तं विद्यया शिक्षया दीक्षया कर्तव्योद्बोधनेन च मनुष्यं करोति। अतो मातुः पितुश्च गुरुः गरीयान् भवति। उक्तं च महाभारते–

शरीरमेव सृजतः, पिता माता च भारत।
आचार्यशिष्टा या जातिः, सा दिव्य सा चाऽजराऽमरा।।1।।
गुरुर्गरीयान् पितृतो, मातृतश्चेति मे मतिः।।2।।

गुरुः भक्त्या सेवया शुश्रूषया च तुष्यति, आज्ञापालनेन तत्कथनानुरूपव्यवहारेण च स प्रीतो भवति। गुरुः यदा प्रीतो भवति, तदा स यत् किंचिदपि जानाति, तत्सर्वं स्वशिष्याय समर्पयितुमिच्छति। अतो विद्याप्राप्त्यै गुरुभक्तेः महती आवश्यकता वर्तते। सत्यमेतदुक्तं च–

गुरुशुश्रूषया विद्या, पुष्कलेन धनेन वा।
अथवा विद्यया विद्या, चतुर्थान्नोपलभ्यते।।3।।

न केवलमेतदेव, अपि तु गुरुभक्त्या मनुष्यस्य चतुर्मुखी उन्नतिर्भवति। उक्तं च–

अभिवादनशीलस्य, नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते, आयुर्विद्या यशो बलम्।।4।।

गुरुभक्त्यैव आरुणिः ब्रह्मज्ञः संजातः, एकलव्यश्च महाधनुर्धरो जातः। गुरुशुश्रूषया गुरुभक्त्यैव च कालिदासादयो महाकवयो जाताः, अन्ये च केचन ऋषयो महर्षयः सिद्धाः कलाविदो विविधशास्त्रविशारदाश्च समभवन्। एष गुरुभक्तेरेव महिमा। ये गुरुभक्तिं न कुर्वन्ति, न वा जानन्ति, तेषां विद्या न प्रकाशते, तेषां यशो न वर्धते, तेषां तेजः क्षीयते, शरीरमायुश्चापि क्षयमुपेतः। ये गुरुभक्ता भवन्ति, तेषां विद्या सदा प्रकाशते, तेषां यशश्च प्रथते, तेषां तेजो विराजते, शरीरमायुश्चापि वृद्धिमेतः। अतः सर्वैः सर्वदा गुरवः पूज्या मान्याश्च।

मानो हि महतां धनम्

शिल्पा नागर
बी.ए. द्वितीय

अस्मिन् संसारे सुखस्य समीहा बलवती खलु। केचन केवलं धनमेव सुखस्य साधनं मन्यमानः येन केन प्रकारेण तदर्थ प्रयतन्ते। धनस्य कृते ते मानमपि परित्यजन्ति परवशतामपि न गणयन्ति दासत्वमपि अङ्गीकुर्वन्ति, पातकमपि कुर्वन्ति। धनलोलुपाः अधमाः जनाः सर्वस्वं जीवनं इदमेव मन्त्रं जपन्ति धनान्यर्जयध्वं धनान्यर्जयध्वम्। परं एतादृशाः जनाः कदापि सुखं न प्राप्नुवन्ति यतो हि तेषां मनांसि कदापि सन्तोषं न यान्ति। यतो हि–

धनलुब्धो ह्यसंन्तुष्टोऽनियतात्माऽजितेन्द्रियः।
सर्वा एवापदस्तस्य यस्य तुष्टं न मानसम्॥

मध्यमाः मानवा धनं तु इच्छन्ति परं मानापमानस्य चिन्तां विहाय तदर्थं न प्रयतन्ते। पुरुषार्थंचतुष्टयस्य प्राप्तिरेव तेषां लक्ष्यम्। ते धर्मेण धनं प्राप्य समाजे सादरं जीवन्ति तेषां कृते धनस्य मानस्य द्वयोरपि महत्त्वं तुल्यं वर्तते। मानं विहाय ते सुखी भवितुं न शक्यन्ते। ते तु चिन्तयन्ति–

निजसौख्यं निरून्धानो यो धनार्जनामिच्छति।
परार्थभारवाहीव क्लेशस्यैव हि भाजनम्॥

परम् उत्तमा जनाः धनस्याभिलाषां परित्यज्य केवलं मानमेव इच्छन्ति। ते तु मानमेव स्वधनं मन्यन्ते। उक्तमपि–

अधमाः धनमिच्छन्ति धनं मानं च मध्यमाः।
उत्तमाः मानमिच्छन्ति, मानो हि महतां धनम्॥

मानस्याभिप्रायः यत् स्वं दीनतां न नयेत्। सङ्कटेऽपि स्ववचनादपलायनं, तिरस्कारयुतस्य महतः वैभवस्य परित्यागः, आत्मनः कष्टानामकीर्तनमेव मानस्य लक्षणं खलु।

'ननु प्रवातेऽपि निष्कम्पा गिरयः'।

उत्तमाः जनाः तु सर्वविषयाणि परित्यज्य तृष्णां विहाय कल्याणमार्गे अभिमुखाः भवन्ति। एतादृशाः जनाः सम्पत्तौ मुदापारावारे न निमज्जन्ति विपत्तौ दुःखसागरे लीनाः न भवन्ति। कथितमपि–सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरुपता। ते तु चिन्तयन्ति–सः जातः येनजातेन याति वंश समुन्नतिम्। धनम् तु करनिहितकन्दुकस्य पातोत्पातेन समं आयाति याति च। तेषां मानवानां विषये एव कथितं नीतिशतके भर्तृहरिणा–

करे श्लाध्यस्त्यागः शिरसि गुरुपादप्रणयिता,
मुखे सत्या वाणी, विजयि भुजयोर्वीयमतुलम्।
हृदि स्वच्छा वृत्तिः श्रुतमधिगतं च श्रवणयो।
बिनाऽप्यैश्वयैण प्रकृतिमहतां मण्डनमिदम्॥

परं आचारहीनोऽपि मानी भवितुं शक्यते। रावणः अस्य निदर्शनमस्ति। तस्य विषये माघेन कथितम्–

अमानवं जातमजं कुले मनोः प्रभाविनं भाविनमन्तमात्मनः।
मुमोच जानन्नपि जानकी न यः सदाभिमानैकधना हि मानिनः॥

दुर्योधनेनापि कदापि स्वाभिमानं आहोस्वित् मानं न तत्याज। भीष्मद्रोणकर्णेषु स्वर्गगतेषु अपि क्षीणसहायः सः सन्धये प्रार्थयन्तं धृतराष्ट्रं कथयति–

एकेनापि विनानुजेन मरणं पार्थः प्रतिज्ञातवान्,
भ्रातृणां निहते णतेऽभिलषते दुर्योधनो जीवितुम्।
तं दुशासनशोणिताशनमरिं भिन्नं गदाकोटिभि–
भीमं दिक्षु न विक्षिपामि कृपणः सन्धिं विदध्यामहम्॥ (वेणीसंहार 5–7)

अवमाने सत्यपि स्वस्थात् नरात् तु रजः वरम्–

पादाहतं यदुत्थाय मूर्धानगधिरोहति।
स्वास्थादेवापमानेऽपि देहिनस्तद्वरं रजः॥

मनस्विनः तु पदोन्नतिम अर्थोन्नतिं च स्वगुणैः पुरुषार्थेन कौशलेन च इच्छन्ति न तु दैन्येन चाटुवृत्या वा। तेषां तु अयमेव उद्घोषः–

उद्धरेदात्मनात्मानं नाऽऽत्मानम् अवसादयेत।
आत्मैव ह्यत्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥

दरिद्रे सत्यपि मनस्विनः स्वमानं न त्यजन्ति। स्वव्यसायम् उपहसन्तं राजपुरुषं प्रति धीवरस्य स्वाभिमानपूर्णवचनं दर्शनीयम्–

सहजं किल यद् विनिन्दितं न खलु तत्कर्मविवर्जनीयम्।
पशुमारणकर्मदारुणोऽनकम्पा मृदुरेव श्रोत्रियः॥

उत्तमाः जनाः तु म्रियन्ते परं स्वाभिमानं न परित्यजन्ति कष्टानि सहन्ते परं दीनतां न स्वीकुर्वन्ति। तेभ्यः तु शीर्षस्थानमेव रोचते। नीतिशतकेऽपि कथितम्–

कुसुमस्तवकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः।

मूर्घिन वा सर्वलोकस्य शीर्यते वन एव वा॥

अतः उचितमेव कथितम्–

मानो हि महतां धनम्।

भाग्यं फलति सर्वत्र

लक्ष्मी
बी.ए. तृतीय

अद्य मानवजीवनं संघर्षमयम् अभवत्। तस्मिन् निश्चितता न वर्तते, शान्तिः न अवलोक्यते। सर्वत्र अस्तव्यस्तताया: साम्राज्यं दरीदृश्यते। ताम् अस्तव्यस्ततां दूरीकर्त्तुं दिवानिशं प्रयतते परं समस्यानां शमनं न भवति। नित्यनूतनसमस्या उद्भवति। प्रथमं विद्यार्जनस्य समस्या उत्पन्ना भवति। यदि येन केन प्रकारेण सः समुचिता विद्या प्राप्नोति तर्हि व्यवसायस्य समस्या सम्मुखम् अवलोक्यते बहुकालप्रतीक्षोपरान्तं विविधैः उपायै असंख्यकष्टान्युभूय यदि तस्याः समस्यायाः समाधान

भवति तदापि तस्य कष्टानामन्तो न विद्यते दैनिकजीवने कापि इदृशी त्रुटि भवति यत् प्राप्तव्यवसायोऽपि सः सुखवञ्चितो दरिदृश्यते। सततप्रयत्नैरपि सः इप्सितफलप्राप्तुम् असमर्थो भवति। अन्ततो निराश्रयो भूत्वा विवशो सः कथयति–"भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम्"।

ये भाग्ये विश्वासं कुर्वन्ति तेषां मतानुसारेण मानवः स्वभाग्यानुसारमेव फलं प्राप्नोति। भाग्येन यल्ललाटे लिखितं तद्दूरीकर्त्तुं कोऽपि न सक्षमः–

यत्पूर्व विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः। अन्यत्र उच्चकुलोत्पन्नः एकः सामान्यपरिश्रमेण उत सामान्ययोग्यतयापि परीक्षायामुच्चस्थानं प्राप्य सरलतया सुव्यवसायं प्राप्नोति धनसम्मानयुतो च भवति। अस्य विपरीतं अम्यो कठोर परिश्रमेण असामान्ययोग्यता परीक्षायामुच्चस्थानं प्राप्यापि निर्व्यवसायो सत्र इतस्ततः भ्रमति। भाग्यवादिनः आहुः– भाग्यमेव अस्य कारणम्। यतो हि–

नैवाकृतिः फलति नैव कुलं न शीलं
विद्यापि नैव न च यत्नकृताऽपि सेवा।
भाग्यानि पूर्व तपसा खलु सञ्चितानि,
काले फलन्ति पुरुषस्य यथैव वृक्षाः॥

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

अंशू
बी.ए. प्रथम

वर्गचतुष्ट्यस्य प्राप्तिरेव मानवजीवनस्य लक्ष्यम्। धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्। रुग्णः मानवः किमपि कार्यं कर्त्तुं समर्थो न भवति। स्वस्थो मानवः एव धार्मिककर्माणि सम्पादयितुं सक्षमः। शिवप्राप्त्यर्थं मृणालिकापेलवं स्वाङ्गं कठोरतपसा अहर्निशं ग्लप्यन्ती पार्वती ब्रह्मचारी वेशस्थितः शिवः कथयति–

अपि क्रियार्थं सुलभं समित्कुशं,
जलान्यपि-स्नानविधि क्षमाणि ते।
अपि स्वशक्त्या तपसि प्रवर्तसे,
शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।।

यदि मानवस्य शरीरं नास्ति तदा महती मसीहा सत्यपि सः किमपि सुकार्यं न कर्त्तुं शक्नोति। ऋते शरीरात् परोपकारत्यागद, नादिधर्मकार्याणि अपि न सम्भवानि दुःखार्त्तानां सेवायाः तु का कथा। सर्वारम्भत्यागी निरासक्तः मुनिरपि स्वशरीररक्षणार्थमेव आहारस्योपयोगं करोति। धनपालकृततिलकमञ्जरीग्रन्थे इदं वर्णनमस्ति यत् पुत्रहीनो चिन्ताग्रस्तो नृपमेधवाहनो यदा एकस्मै मुनये सर्वस्वं दातुमिच्छति तदा मुनिः कथयति–अस्माकं राज्येन धनेन वा किं प्रयोजनम्। यतो हि–"ये च सर्वप्राणिसाधारणमाहारमपि शरीरवृत्तये गृहणान्ति, शरीरमपि धर्मसाधनमिति धारयन्ति"।

स्वस्थशरीराय युक्ताहारविहारस्य अत्यावश्यकता भवति। चरकसंहितायामपि कथितम्–"मात्रावदश्नीयात् मात्रावद्धि भुक्तं वातपित्तकफानपीडयदायुरेव विवर्धयति केवलम्"।

यजुर्वेदाष्ये श्रीदयानन्देन कथितम्–"ये प्रतिदिनमग्निहोत्रादिकं यज्ञं युक्ताहार विहारं च कुर्वन्ति तेऽरोगा भूत्वा दीर्घायुषो भवन्ति"।

गीतायामपि उक्तम्

युक्ताहार विहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।।

इन्द्रियाणां संयमं विना शरीरक्षणं न सम्भवम् सद्वृत्तेन हि मानवः जितेन्द्रियः भवति।

उक्तमपि चरकसंहितायां–

"तस्मादात्महितं चिकीर्षता सवण सर्व, सर्वदा स्मृतिमास्थाय सद्वृत्तमनुष्ठेयम्। तद्धयनुतिष्ठन् युगपत् सम्पादयत्यर्थद्वयमारोग्यमिन्द्रियविजयञ्चेति"।

स्वस्थशरीराय युक्ताहारविहारेण सह योगाभ्यासस्य व्यायामस्य चापि आवश्यकता भवति। आचार्य चरकस्यमतानुसारं तु–

"लाधवं कर्मसामर्थं स्थैर्य दुःखसहिष्णुता।
दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते।।

किं बहुना आरोग्यमेव स्वास्थ्यमति स्वास्थ्यमेव च सर्वोत्तमं सुखम्। स्वस्थः निर्धनोऽपि परिश्रमेण सुखीजीवनं जीवितुं धर्म चरितुं च समर्थः परं रुग्णः धनवान् अपि दुःखी दरीदृश्यते धनेन सः स्वस्वास्थ्यं क्रेतुं न शक्यते। अतः शारीरिकोन्नतिः मानवस्य सर्वप्रथमं कर्त्तव्यमस्ति। स्वस्थः मानवः एव धर्माचरणे समर्थः भवति स्वस्थशरीरं बिना साधना सम्पन्नोऽपि जनः धर्ममार्गे चलितुम् असफलो विद्यते अतः उचितमेव कथितम्–

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्

कविता
बी.ए. द्वितीय

आदरस्य भावना प्राणिमात्रे स्वाभाविकी खलु यतो हि मानो हि महतां धनम्। केचित् मानवाः धनमेव मानास्पदं मन्यमानाः दिवानिशं तदर्थं प्रयतन्ते। केचित् जनाः शक्तिवर्धनमेव जीवनस्य लक्ष्यं मन्यन्ते परं बुद्धिं बिना शक्तिः धनं वा व्यर्थमस्ति। उक्तमपि–बुद्धिर्यस्य बलं तस्य। एवं बुद्धिः विद्यया वर्धते विद्यायुतो आहोस्वित् विद्वान् मानवः एव समादृतो भवति। विद्यया एव तस्य योग्यता वर्धते। योग्यतया सः धनं प्राप्नोति धनाद् धर्म चरितुं सक्षमो भवति। ततः धर्मेण सुखं प्राप्नोति। उक्तमपि–

विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति, धनाद् धर्म ततः सुखम्।।

अपि च–

शीलं परहितासक्तिरनुत्सेकः क्षमा धृतिः।
अलोभश्चेति विद्यायाः परिपाकोज्जवलं फलम्।।

विद्यासर्वधनेषु श्रेष्ठं धनं स्मृतम्। अस्य धनस्य सम्बन्धो हृदयेण विद्यते न तु शरीरेण। अस्य स्वरूपमपि आनन्दमयं ज्ञानमयं च वर्तते। अन्यधनैरिव अस्य रक्षणाय सुरक्षितस्थानस्यावश्यकता न विद्यते। इदं धनमक्षयं वर्तते–

सर्वद्रव्येषु विद्यैव द्रव्यमाहुरनुत्तमम्।
अहार्यत्वादनर्घ्यत्वादक्षयत्वाच्च सर्वदा॥

विद्याधनं दानेन वर्धते न तु क्षयं याति–

विद्या धनं श्रेष्ठं धनं तन्मूलमितरद् धनम्।
दानेन वर्धते नित्यं न भाराय न नीयते॥

संचयात् तु क्षयमायाति। इदं धनं चौरैः अपि न ह्रियते। सम्बन्धिवर्गोऽपि नेतुं नार्हति। कथितमपि–

न चौरहार्यं न च राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्॥

अपि च–

हर्तुर्याति न गोचरं किमपि शं पुष्णाति यत् सर्वदा,
ऽप्यर्थिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं प्राप्नोति वृद्धिं पराम्।
कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमन्तर्धनं।
येषां तान्प्रति मानमुज्झत नृपाः कस्तैः सह स्पर्धते॥

विद्या सर्वेषां लोचनशास्त्रमस्ति। अनेकसंशयानां नाशं करोति, अकालेऽपि फलं ददाति। वस्तुतः विद्या सन्मित्रमिव समये समये सहायतां ददाति। विद्या सः सहचरः यः आपद्कालेऽपि सङ्गं न त्यजति। विदेशे सुयोग्यशिक्षकेण समं मार्ग प्रदर्शयति। सभायां बहुमूल्याभूषणस्य तुल्यं शोभते। एकान्ते शान्तेः साधनं प्रतीयते। भाग्यहीनस्याश्रयोऽपि विद्यैव। विद्ययैव मानवः यशः कीर्ति चाप्नोति। विद्या एव कुलस्य महिमा विद्यते–

विद्या नाम जनस्य कीर्तिरतुला भाग्यक्षये चाश्रयः।
धेनुः कामदुआ रतिश्च विरहे नेत्रं तृतीयं च सा॥
सत्कारायतनं कुलस्य महिमा, रत्नैर्विना भूषणम्।
तस्मादन्यमुपेक्ष्य सर्वविषयं विद्याऽधिकारं कुरु॥

विदेशे विद्या एव पूज्यते न तु धनम्। विद्यां विना मानवः पशुना इवास्ति। विद्याहीनमानवः सत्यासत्ययोः कर्त्तव्याकर्त्तव्ययोः धर्माधर्मयोः विवेकं कर्त्तुं समर्थो न भवति। भर्तृहरिणापि लिखितम्–

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्त धनम्।
विद्या भोगकरी यशः सुखकारी विद्या गुरूणां गुरुः॥
विद्या च बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता।
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्याविहीनः पशुः॥

यस्य मानवस्य बुद्धिः कर्त्तव्याकर्त्तव्यस्य विचारेण शून्यः यः श्रुतिविपयैः विधिभिः बहिष्कृतोऽस्ति। उदरभरणमात्रमेव यस्य इच्छा वर्तते स. पशुः एव–

विहिताविहितविचारशून्यबुद्धेः श्रुतिविषयैर्विधिभिर्बहिष्कृतस्य।
उदरभरमात्रं केवलेच्छोः पुरुषपशोश्च पशोश्च को विशेषः॥

यः स्वबालानां शिक्षाव्यवस्था न करोति सः पिता अपि शत्रुः मन्यते।

उक्तमपि–

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते समामध्ये हंसमध्ये बको यथा।।

इदं धन साधारणमानवमपि दिव्यशक्तिसम्पन्नदेवता करोति। अस्योपासनयैव प्रारम्भे मूर्खः कालिदासोऽपि कविकुलगुरु कालिदासो भूत्वा अमरो वभूव। धनसम्पन्नमानवो स्वदेशे एव पूज्यते परं विद्यायुतो सर्वत्र सम्मानं लभते–स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।

विद्याविज्ञानस्य प्रभावेणैव मानवः अद्य प्रकृतेः नियामकोऽस्ति। विद्यमैव मानवः चरित्रवान् भवति। शिक्षायाः मूलोद्देश्यमेव चरित्रनिर्माणं विद्यते।

विद्या मातेव रक्षा करोति। पितेव हितोपदेशं ददाति। धनमपि विद्यमैव प्राप्तुं शक्यते। कथितमपि–

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुङ्ते,
कान्तेव चाभिरमयत्यपनीय खेदम्।
लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिं,
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।।

अन्यधनानि प्राप्य मानवः दर्पयुतो उन्मत्तो च भवति। सः स्वकर्त्तव्यं विस्मरति। वाणभट्टमहोदयेनापि कथितम्–'अलीकाभिमानोन्मादकारिणी धनानि'। परं विद्यायुतो मानवः विनम्रो भवति। दीपेव विद्यालोकेन जीवनयात्रायाः मार्ग सुखकरं भवति। (धर्मस्य तत्त्वमपि विद्ययैव ज्ञातुं शक्यते। विद्यया मानवोऽमृतमश्नुते।

उच्यतेऽपि–

तपो विद्या च विप्रस्य निःश्रेयस्करं परम्।
तपसा किल्विषं हन्ति विद्ययाऽमृतमश्नुते।।

अपि च–न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते। परं सैव विद्या हितकारिणी विद्यते या मानवस्य समीपे वर्तते। पुस्तकस्था विद्या विद्या न कथ्यते। सा तु परहस्तगतं धनमिव प्रतीयते–

पुस्तकस्था तु या विद्या परहस्तगतं धनम्।
कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्धनम्।।

किं बहुना विद्यानुपमं दिव्यरत्नम्। सूरमिल्टनादिनां लोचनं, सर्वेषां मानवानां रूपं, योगिनां योगः, संसारसागरं तरितुं मुख्यसाधनं, अपारशक्तिः, सर्वज्ञतायाः औषधिः च विद्यते। विद्याधनं प्राप्य अन्यैः धनैः किं प्रयोजनम्।

सुष्ठूक्तं–

दत्तं समस्तमपि तिष्ठति यत् तथैव,
ज्ञातिर्न यद् विभज्यते ह्रियते न चौरैः।
जन्मान्तरेऽपि यदुपैति नरेण सार्धं,
विद्याधनं यदि तदस्ति धनैः किमन्यैः।।

विद्या तु सर्वेषामभूषणं विद्यते–

नक्षत्रभूषण चन्द्रो नारीणां भूषणं पतिः।
पृथिव्या भूषणं राजा विद्या सर्वस्य भूषणम्।।

CONTRIBUTION OF WOMEN

Shalu
M.A. IV Sem.

Women play a great role in the growth and development of the society and making it advanced and modern society. There is a famous saying by the Brigham Young that, "you educate a man; you educate a man. you educate a woman; you educate a generation". Educating and giving power to the women is of great importance which need to be followed in the society to bring women empowerment and development of society. Because it is true that if a man is getting educated and empowered' Only he can be benifitted however if a women is getting educated and enpowered, whole, family and society can be benifitted. Women are not things which can be neglected because of their less power and authority instead they should be empowered and promoted to get higher education. Women are the half population of the world mean half power of the world. If women of any country are not empowered mean that country is lack of half power. By nature, women play their all the roles with great responsibitities and have capabitity to make a healthy family, solid society and powerful country. Lots of efforts have been done however still women are back ward and limited to home activities. We need to understand that if an uneducated women may handle home properly then why not a well women can lead the whole country like men.

Without women nothing is possible for men, they are basic unit of the society, they make a family, family make a home, home make a society and ultimately societies make a country. So the contribution of a women is every where from taking birth and giving birth to a child to care for whole life and other areas. All the roles and responsibitities of the women can never be neglected by the societies. Without education and women empowerment no development is possible in the family, society and country. Women know well how to talk, how to behave, how to deal with people of different classes, etc. She knows to handle all the situations because she knows well the basic fundamentals of a good society and play her roles politely as a main contributor in building a strong society. Women are the pioneers of nation. Indian culture attaches great importance to women, comprising half of world's population. According to a report of secretary General of United Nations, women constitute 50% of human resources, the greatest human resource next only to man having great potentiality women are the key to sustainable development and quality of life in the family. The varieties of role the women assume in the famliy are those of wife, leader, administrator, manager of family income and last but not the least important mother.

Moreover, it is the women who have sustained the growth of society and moulded the future of nations. In the emerging complex social scenario, women have a vital role to play in different sectors. They can no longer be considered as mere harbingers of peace but are emerging as the source of power and symbol of progress.

FEMALE FOETICIDE IN INDIA

Sana Parveen

BA IInd year

The frequency of female foeticide in India is increasing day by day. The natural ratio is assumed to be between 103 and 107 and any number above it is considered as suggestive of female foeticide. According to the decennial indian census, the sex ratio in the 0 to 6 age group in india has resign from 102.4 males per 100 females in 1961 to 102.2 in 1980, to 107.5 in 2001, to 108.9 in 2011

The child sex ratio is within the normal natural range in all eastern and southern states of india, but significantly higher in certain western and particularly north western states such as Maharasthra, Haryana, Jammu kashmir (118, 120, and 116 as of 2011 respectively).

The Indian census data suggests there is a positive correlation between abnormal sex ratio and better socio-economic status and literacy. Urban India has higher child sex ratio than rural india according to1991, 2001 and 2011 census data, implying higher prevelence of female foeticide in urban india similarly child sex ratio greater than 115 boys per 100 girls is found in region where the predominant majority is Hindu-Muslim, sikh or Christian, further, more normal child sex ratia of 104 to 106 boys per 100 girl are also found in regions where the predominant majority is Hindu, Muslim sikh & Chirstion.

Reason for female foeticide- Various theories have been proposed as possible reason for sex selective abortion culture is fovoured by some researcher, while some favour disparate gender baised access to resources.

Some demographers question whether sex selective abortion or infanticide claims are accurate, because underreporting of female birth may also explain high sex ratios.

Cultural preference

One school of scholars suggest that female foeticide can be seen through history and cultural background. Generally, male babies were preferred because they provided manual labor and success the family line age. The selective abortion of female fetuses is most common in areas where cultural norms value male children over female children for a variety of social and economic reason.

Female foeticide then is a continuation in a different from practice of female infanticide or with holding of postnatal health care for girl in certain house holds. These factors complicated by the effect of diseases on sex ratio, where communicable and noncomunicable diseases affect males and females diffrently.

Law and regulation

India passed its first abortion-related law, the so-called medical termination of pregnancy act of 1971, making abortion legal in most states, but specified legally acceptable reason for abortion such as medical risk to mother and rape. The law also established physicians who can legally provide the procedure and the facilities where abortion can be performed but did not anticipate female foeticide based on technology advances.

The impact of indian laws on female foeticide and its enforcement is unclear. United Nations population fund and India's National Human Right commission in 2009 asked the government of india to assess

the impact of the law. The public health foundation of india, aa premier research organization in its 2010 report, claimed a lack of awareness about the act in parts of india, inactive role of the appropriate Authorities, ambiguity among some clinics that offer prenatal care service, and the role of a few medical practitioners in disregarding the law.

Magnitude estimates for female foeticide

Estimates for female foeticide vary by scholar. One group estimates more than 10 million female foetures may have been illegally aborted in india since 1990 and 5000,000 girls were being lost annually due to female foeticide Macpherson estimates that 100,000 abortion every year continue to be performed in india rolely because the fetus is female

---

HOW TO MAKE MIND SHARP

Nisha Rani

M.A. IV Sem.

The importance of keeping your mind sharp cannot be overstated. We are all part of a fantastic intellectual and information economy, which thrives on ideas, creativity and intelligence. Keeping your mind sharp is sure to give you the edge over the competition, and more importantly lead to your own higher levels of happiness.

When your mind is in top shape, you will:

- Have greater motivation and focus
- Get more done
- Come up with more creative ideas
- Find inspiration more often
- Remember more
- Exprience a better life

There are a few Practices which have been found extremely beneficial in keeping mind sharp and can help you as well:

1) Continue reading, absorbing knowledge and experiencing culture

Sorry to use a cliched quote, but education is not preparation for life, education is life itself. It should be something pleasurable and done for intrinsic reasons above all else. Read blogs on subjects both within your field and in new fields you know nothing about, read books; watch lectures, on fascinating new subjects; read about ancient societies; take in a new form of art you've never experienced; you get the idea. Challenge your mind to coutinually broaden your horizon and soak up new information like an infinite sponge (that's pretty much what it is, you should use it to do just that).

2) Learn a skill or craft you've never tried before like playing an instrument, composing music, painting, building a model airplane, or even coding computer programs.

Engage your mind in learning a new skill. You're never too old to do this, but this is definitely something you should start as young as you can. I started composing my own music at around 17, and in retrospect I wish I had started even younger. You'd be surprised how much learning a new skill will open up many new paths in your mind and help you become even better at whatever you are already an expert at. You'll also open yourself up to tons of new connections and intellectual social circles by engaging yourself in a new hobby, form of art, or trade.

3) To improve memory don't write everything down

If you can, try this for a week: write down everything you need to do at the beginning of the week, as you normally would. but take your list and put it out of sight. Instead of keeping that list visible at your desk, internalize your projects and simply remember and know what needs to be done. prioritize it in your mind, and do it. Your brain is extremely powerful and you'll find that, in time, you may not have to write anything down to remember everything (you can still keep a list for reference. but it's great not to need it).

4) Give your mind time to assimilate knowledge

We live in a culture where we are constantly experiencing and learning new things and taking in new information. This is a great thing, I'm not going to go into the information overload spiel, I don't really believe in that anyway (you are in total control over how much information you take in at once). But in your process of absorbing new skill, knowledge and life experiences; internal analysis of yourself, what you have learned and where you are going is vital to put everything in proper perspective. Some people do it well during running, others through listening to music, and some people through making art. Find you own place that allows you to assimilate all you have learned and frequent it often.

5) Eat well, sleep well and exercise often

Giving your mind the proper rest and energy is essential to getting the best performance out of it. This one is pretty self explanatory, but people often forget that you need proper fuel and proper rest to function optimally. Also, putting your physical body through the paces is a surefire way to rejuvenate yourself mentally. If you' re ever feeling stressed, out of inspiration, or depressed, a few days of nutritious food, good sleep and vigorous exercise will put you back to your full self soon enough.

THE WEIGHT OF THE GLASS

Priyanka

B.A. II Year

- Once upon a time a Psychology Professor walked around on a stage while teaching stress management principles to an auditorium filled with students. As she raised a glass of water, everyone expected they'd be asked the typical "glass half empty or glass half full" question. Instead, with a smile on her face, the professor asked, "How heavy is this glass of water I'm holding?"
- Students shouted out answers ranging from eight ounces to a couple pounds.
- She replied, "From my perspective, the absolute weight of this glass doesn't matter. It all depends on how long I hold it. If I hold it for a minute or two, it's fairly light. If I hold it for an hour straight, its

weight might make my arm ache a little. If I hold it for a day straight, my arm will likely cramp up and feel completely numb and paralyzed, forcing me to drop the glass to the floor. In each case, the weight of the glass doesn't change, but the longer I hold it, the heavier it feels to me."

- As the class shook their heads in agreement, she continued, "Your stresses and worries in life are very much like this glass of water. Think about them for a while and nothing happens. Think about them a bit longer and you begin to ache a little. Think about them all day long, and you will feel completely numb and paralyzed-incapable of doing anything else until you drop them."
- The moral: It's important to remember to let go of your stresses and worries. No matter what happens during the day, as early in the evening as you can, put all your burdens down. Don't carry them through the night and into the next day with you. If you still feel the weight of yesterday's stress, it's a strong sign that it's time to put the glass down.

THE NEEDS AND DESIRES

Rajni

M.A. II Sem.

Once upon a time, there lived a king who, despite his luxurious lifestyle, was neither happy nor content. One day, the king came upon a servant who was singing happily while he worked. This fascinated the king, why was he, the Supreme Ruler of the Land, unhappy and gloomy, while a lowly servant had so much joy. The King asked the servant, "Why are you so happy?"

The man replied, "Your Majesty, I am nothing but a servant, but my family and I don't need too much, just a roof over our heads and warm food to fill our tummies." The king was not satisfied with that reply. Later in the day, he sought the advice of his most trusted advisor. After hearing the king's woes and the servant's story, the advisor said, "Your Majesty, I believe that the servant has not been made part of the 99 Club."

"The 99 Club? And what exactly is that?" the King inquired. The advisor replied, "Your Majesty, to know what The 99 Club is, place 99 Gold coins in a bag and leave it at this servant's doorstep." So the King ordered to do it. When the servant saw the bag, he took it into his house. When he opened the bag, he let out a great shout of joy, So many gold coins! He began to count them. After several counts, he was at last convinced that there were 99 coins. He wondered. "What could' ve happened to that last gold coin? Surely, no would leave 99 coins!" He looked everywhere he could, but that final coin was elusive. Finally, exhausted, he decided that he was going to have to work harder than ever to earn that gold coin and complete his collection. From that day, the servant's life was changed. He was overworked, horribly grumpy, and castigated his family for not helping him make that 100th gold coin. He stopped singing while he worked. Witnessing this drastic transformation, the King was puzzled. When he sought this advisor's help, the advisor said, "Your Majesty, the servant has now officially joined The 99 Club."

He continued, "The 99 Club is a name given to those people who have enough to be happy but are never content, because they' re always earning and striving for that extra 1 telling to themselves, "Let me get that one final thing and then I will be happy for life,"

Moral: We can be happy, even with very little in our lives, but the miunte we're given something bigger and better we want even more! We lose our sleep, our happiness, we hurt the people around us, all these as a price for our growing needs and desires. We must learn to maintain a balance of our need and desires to enjoy a happy life with what we already have.

SAVE WATER

Priyanka

M.A. II Sem.

Introduction

Water is an urgent necessity of life in all the areas of work like household, agriculture, domestic, industry, etc. It is the nature's precious gifts to us for the continuity of life on the earth. All the living things need more water for their survival as their body consists mostly of water. Human body is consists of two thirds of water. Water doesn't have any colour, odour, taste and shape however it provides all to us in our life.

Importance of Clean Water in our Life

71% of the earth surface is covered with water. It is vital to all forms of life found on the earth. It is found below the ground, oceans, large water bodies, and small water reservoirs. Water is also available in many forms like vapour, clouds, precipitation, surface water, glaciers, polar ice caps, etc. The life cycle of water runs all around on the earth continuously through evaporation, precipitaition, runoff, rain, etc. Apart from this, we lack clean drinking water in many areas of the country. Water scarcity is the lack of access to the safe water. Slowly, it is being hard to manage the quality of water for the people who lack it. In some areas, lack of water is the daily problem. People have to suffer a lot the scarcity of water. It takes a lot of efforts, cost and time to mange the access of water to all especially in the areas of water scarcity. It is a big issue to many countries worldwide. People having sufficient water do not understand the importance of water and they waste a lot water on daily basis in many unnecessary activities.

As we all know that around 2 or less percent water is fresh water on the earth and fit for human consumption. Most of the water is locked up in glaciers, snow, ice and others are in the form of open source. The main source of freshwater is groundwater because of the natural filtering system. The matter of freshwater availability raises the question about water security as well as people's access to it at affordable price. The depth of ground water is increasing with the huge climatic in the environment. Clean water insecurity at many places has increased due to the drought and natural disasters without season. In the coming decades the demand of clean water supply will increase because of populations growth, need of agriculture and industry will expand, negative climatic changes, etc.

It's time to join our hands together and take effective actions regarding save water as much as possible. There are different ways we can save huge water on daily basis. Water saving can be done through water conservation methods. Saving water and protective it from being dirty has been very necessary to meet current and future demand. Climate change is another factor of water scarcity. As water demands will increase in future, it should be saved to ensure its availability for future generations. If we do not take positive action, the condition will be more embarrassing when the rate of lack of fresh water from an

ecosystem exceeds to its natural replacement rate. By minimizing the need of water to human; freshwater habitats, local wildllfe and migrating birds can be saved. We should bring many positive changes in our habits and activities to save even a drop of water.

Lack of water is a big issue in many countries. It is a symbiotic factor and important element to which life depends on. The level of drinking water under the ground is becoming less because of the disturbance in the natural filtering system. Deforestation and lack of plants causes rain water to run away instead of going inside the ground. We should follow all the key activities regarding save water from loss, unnecessary use and waste as well as damage of water quality.

TIME TO LAUGH

Bharti

M.A. II Sem.

1. A: I have the perfect son.

   B: Does he smoke?

   A: No, he doesn't

   B: Does he drink whiskey?

   A: No, he doesn't

   B: Does he ever come home late?

   A: No, he doesn't.

   B: I guess you really do have the perfect son. How old is he?

   A: He will be six months old next wednesday.

2. Girl: You would be a good dancer except for two things.

   Boy: What are the two things?

   Girl: Your feet.

3. A family of mice were surprised by a big cat. Father Mouse jumped and and said, "Bow-wow!" The cat ran away. "What was that, Father?" asked Baby Mouse. "Well, son, that's why it's important to learn a second language."

4 A: Just look at that young person with the short hair and blue jeans, Is it a boy or a girl?

   B: It's a girl. She's my daughter.

   A: Oh, I'm sorry, sir. I didn't know that you were her father.

   B: I'm not. I'm her mother.

25 INTERESTING FACTS ON INDIA THAT YOU HAD NO IDEA ABOUT

Priya

M.A. II Sem.

1. A floating post office

India has the largest postal network in the world with over 1, 55, 015 post offices. A single post office on an average serves a population of 7, 175 people. The floating post office in Dal Lake, Srinagar, was inaugurated in August 2011.

2. Kumbh Mela gathering visible from space

The 2011 Kumbh Mela was the largest gathering of people with over 75 million pilgrims. The gathering was so huge that the crowd was visible from space.

3. The wettest inhabited place in the world

Mawsynram, a village on the Khasi Hills, Meghalaya, receives the highest recorded average rainfall in the world. Cherrapunji, also a part of meghalaya, holds the record for the most rainfall in the calendar year of 1861

4. Bandra worli sealink hasn steel wires equal to the earth's circumference

It took a total of 2, 57, 00,000 man hours for completion and also weighs as much as 50,000 African elephants. A true engineering and architectural marval.

5. The highest cricket stadium

At an aldtitude of 2,444 meters, the Chail Cricket Ground in Chail, Himachal Pradesh, is the highest in the world. It was built in 1893 and is a part of the Chail Military School.

6. Shampooing is an Indian concept

Shampoo was invented in India, not the commercial liquid ones but the method by use of herbs. The word' shampoo' itself has been derived from the Sanskrit word champu, which means to massage.

7. The Indian national Kabaddi team has won all World Cups

India has won all 5 men's Kabaddi World Cups held till now and have been undefeated throughout these tournaments. The Indian women's team has also won all Kabaddi World Cups held till date.

8. Water on the moon was discovered by India

In September 2009, India's ISRO Chandrayaan-1 using its Moon Mineralogy Mapper detected water on the moon for the first time.

9. Sciecne day in switzerland is dedicated to Ex-Indian President, APJ Abdul Kalam

The father of India's missile Programme had visited Switzerland back in 2006. Upon his arrival, Switzerland declared May 26th as Science Day.

10. India's first President only took 50% of his salary

When Dr Rajendra Prasad was appointed the President of India, he only took 50% of his salary, claiming he did not require more than that. Towards the end of his 12-year tenure he only took 25% of his salary. The salary of thr President was Rs 10,000 back then.

11. The first rocket in India was transported on a cycle

The first rocket was so light and small that is was transported on a bicycle to the Thumba Launching Station in Thiruvananthapuram, Kerala.

12. India has a spa just for elephants

Elephants receive baths, massages and even food at the Punnathoor Cotta Elephant Yard Rejuvenation Centre in Kerala. Now that's a BIG step for the country.

13. India is the world's second-largest English speaking country

India is second only to the USA when it comes to speaking English with around 125 million people speaking the language, which is only 10% of our population. This is expected to grow by quite a margin in the coming years.

14. Largest number of vegetarians in the world

Be it because od religious reasons or personal choices or both, around 20-40% of Indians are vegetarians, making it the largest vegetarian-friendly country in the world.

15. The world's largest producer of milk

India recently overtook the European Union with production reaching over 132. 4m tonnes in 2014.

16. The first country to consume sugar

India was the first country to develop extraction and purifying techniques of sugar. Many visitors from abroad learnt the refining and cultivation of sugar from us.

17. The human calculator

Shakuntla Devi was given this title after she demonstrated the calculation of two 13 digit numbers: 7,686,369,774,870 x 2,465, 099, 745, 779 which were picked at random. She answered correctly within 28 seconds.

18. Rabindranath Tagore also wrote the national anthem for Bangladesh

Rabindranath Tagore is credited not only for writing the Indian national anthem, Jana Gana Mana, but the Bangladeshi national anthem, Amar Sonar Bangla, as well. He was also offered knighthood by the British but refused the honour after the jalianwala Bagh massacre.

19. Dhyan Chand was offered German citizenship

After defeating Germany 8-1 in the 1936 Berlin Olympics, Major Dhyan Chand, the wizard of

hockey, was summoned by Hitler. He was promised German citizenship, a high post in the German military and the chance to play for the German national side. Dhyan Chand however declined the offer.

20. Freddie Mercury and Ben Kingsley are both of Indian descent

Freddie Mercury, the legendary singer of the rock band 'Queen' was born a Parsi with the name Farrokh Bulsara while the famous Oscar winning Hollywood star Ben Kingsley was born Krishna Pandit Bhanji.

21. Astronaut Rakesh Sharma said India looks saare jahaan se achcha from space

Former Prime Minister Indira Gandhi asked the first Indian in space, Rakesh Sharma. about how India looked from space. His response was our famous patriotic song. "Saare jahaan Se Achcha."

22. Havell's is purely an Indian brand & named after its first owner

Though the company was bought for just 10 lakh Rupees a long time ago and is now a multi-billion electrical goods company, it's an Indian company and is still named after its original owner, Haveli Ram Gupta.

23. Diamonds were first mined in India

initially, diamonds were only found in the alluvial deposits in Guntur and Krishna District of the Krishna River Delta. Until diamonds were found in Brazil during the 18th century, India led the world in diamond production.

24. A special polling station is set up for a lone voter in the middle of Gir Forest

Mahant Bharatdas Darshandas has been voting since 2004 and during every election since then, a special polling booth is set up exclusively for him as he is the only voter from Banej in Gir forest.

25. Snakes and Ladders originated in india

Earlier known as Moksha Patamu, the game was initially invented as a moral lesson about karma to be taught to children. It was later commercialized and has become one of the most popular board games in the world.

समाचार पत्रों में महाविद्यालय की झलकियाँ

सेमिनार हुआ

एनबीटी न्यूज, ग्रेनो : दादरी स्थित कुमारी मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में बुधवार को एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इसका विषय सूचना विस्फोट और इक्कीसवीं शताब्दी की युवा संभावनाएं और चुनौतियां था। इसमें भारत के विभिन्न यूनिवर्सिटी से 500 अधिक विषय विशेषज्ञों व शोध छात्र उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. गौतम, जीबीयू के कुलपति डॉ. भगवती प्रकाश शर्मा, सह कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार वार्ष्णेय व संस्था की प्राचार्या डॉ. दिव्या नाथ ने अपने विचार रखे।

छात्राओं को दी करियर संबंधी जानकारी

मानवाधिकार दिवस पर बनाई मानव श्रृंखला

अल्युमनाइ मीट का आयोजन

आयुर्वेद में करियर के लिए छात्राओं को किया प्रेरित

राष्ट्रीय सेवा में विद्यार्थियों का योगदान अहम

चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन

जीबीयू और मायावती कालेज में सुविधाएं साझा करने पर करार

दोनों संस्थानों के छात्र-छात्राओं को मिलेगा फायदा

छात्राओं को दिए प्रमाणपत्र

कार्यशाला हुई

विश्व एड्स दिवस पर लगाया रक्तदान कैंप

शिविर का समापन

योगासन सिखाए

रैली निकालकर स्कूल चलो का किया आह्वान

कॉलेज में मनाया मानवाधिकार दिवस

बादलपुर कॉलेज में दो नए कोर्स शुरू, 10 तक आवेदन

जीबीयू व बादलपुर विवि के बीच करार

जासं, ग्रेटर नोएडा : गौतमबुद्ध विवि व कुमारी मायावती राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर के बीच समझौता पत्र पर हस्ताक्षर हुए। करार पर जीबीयू के कुलपति प्रोफेसर भगवती प्रकाश शर्मा, कुल सचिव बच्चू सिंह व मायावती राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय की प्राचार्य डा. दिव्या नाथ करार पर हस्ताक्षर किया। करार के तहत दोनों विवि पुस्तकालय, खेल व अन्य सुविधाओं को एक-दूसरे से साझा करेंगे। इस अवसर पर प्रोफेसर श्वेता आनंद, डा. विनोद कुमार, डा. दिनेश चंद्र, डा. शिवानी वर्मा डा. दीप्ती बाजपेयी आदि लोग मौजूद थे।

विविध गतिविधियाँ

विविध गतिविधियाँ

साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधियाँ

एन. सी. सी. विभिन्न गतिविधियाँ

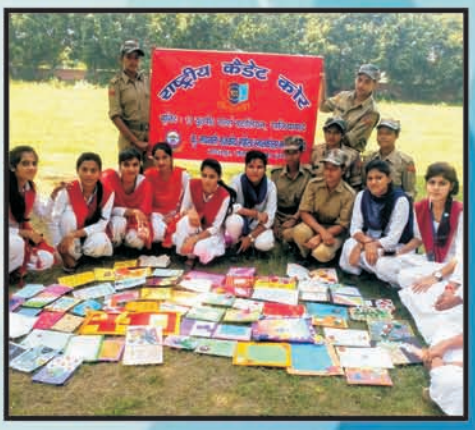

रेंजर्स गतिविधियाँ

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

एन. एस. एस. (प्रथम यूनिट)

विभिन्न गतिविधियाँ

स्काउट गाइड प्रशिक्षण शिविर

एन. एस. एस. (द्वितीय यूनिट)

विभिन्न गतिविधियाँ

काव्यांजलि

कहाँ गये वो दिन

कोमल
बी.ए. तृतीय

कहाँ गए वो दिन.....
जब लोग हमे हँसाते थे
मन ही मन खुश होकर
माँ की ममता, पिता का प्यार
क्या-क्या हमसे करवाते थे
नन्हें-नन्हें पैरों से चलकर
हम लोगों का दिल बहलाते थे
कहाँ गए वो दिन....
जब लोग हमे हँसाते थे...
था समय बड़ा बलवान,
वो जब बोल हम नहीं पाते थे
सुनते थे सबकी हम पर
कुछ कह नहीं पाते थे
थे सबके प्यारे हम
सबको अपना बनाते थे
कहाँ गए वो दिन....
लोग हमें हँसाते थे.....
करते थे सब प्यार हमें
बस यूँ ही हम शरमाते थे
रूठ-रूठ कर सबके दिल में....
हम अपनी जगह बनाते थे
बिना बोले हम सबको
यूँ ही बुलवाते जाते थे
कहाँ गये वो दिन.....

गजल

अंजली नागर
बी.ए. तृतीय

शौक नहीं है अब
इरादा बदलने का,
जिन्हें हौसला नहीं
खुद ही चलने का
वही मशवरा देने लगे
मुझको सम्भलने का
मन्जिल तो मेरी चट्टानों
की मानिन्द ना भी हो
पर शौक नहीं मुझको,
अब इरादा बदलने का।
रूकावटें भी चाहे
हजारों आएँ राहों में,
मेरा तो मकसद है
उनसे रूबरू मिलने का।
तुम्हें क्या खबर है
उनसे मेरी रहनुमाई की।
चलन बना लिया मैंने,
हालात के साथ ढ़लने का
जान जायेंगे सब कि क्या है,
हकीकत 'कविता'
वक्त आने तो दो मेरा,
दिन उनसे मिलने का।

क्या खूब कहा

नेहा राघव
बी.ए. द्वितीय

गरीब मीलों चलता है
भोजन पाने के लिए
अमीर मीलों चलता है
उसे पचाने के लिए।
किसी के पास खाने के लिए
एक वक्त की रोटी नहीं,
किसी के पास एक रोटी
खाने के लिए वक्त नहीं।
कोई अपनों के लिए
अपनी रोटी छोड़ देता है।
कोई रोटी के लिए अपनों को छोड़ देता है।
इन्सान भी क्या चीज है
दौलत बचाने के लिए
सेहत खो देता है और
सेहत को वापिस पाने के लिए,
दौलत खो देता है।
जीता ऐसे है जैसे
कभी मरेगा ही नहीं
और मर ऐसे जाता है
जैसे कभी जीया ही नहीं
एक मिनट में जिंदगी नहीं बदलती,
पर एक मिनट में लिया गया फैसला,
जिंदगी बदल देता है।

मुझे भी हक है

रीना
बी.ए. तृतीय

मुझे भी हक है,
मैं भी जीना चाहती हूँ।
ऊँचे-नीचे इन रास्तों पर।
मैं भी चलना चाहती हूँ।
मुझे भी हक है
मैं भी जीना चाहती हूँ
बेटी हूँ बेटे की तरह,
मुझे भी बढ़ना है।
मेरा तो ये अधिकार है,
मैं भी पढ़ना चाहती हूँ।
मुझे भी हक है,
मैं भी जीना चाहती हूँ
नीले से गगन में
मेरा भी बसेरा हो।
पंख है मेरे,
मैं भी उड़ना चाहती हूँ।
मुझे भी हक है,
मैं भी जीना चाहती हूँ।

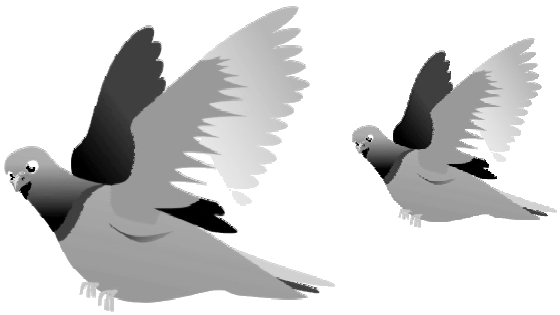

दुनिया का बोझ

प्रियंका
बी.ए. तृतीय

दुनिया का उठाकर बोझ
खुद एक बोझ कहलाई हैं
हारकर खुशी अपनी
जीत में दुख ही लाई हैं
होठों पर लाकर हंसी
आँखों की नमी छुपाई है
बीबी बनकर किसी का घर बसाया
तकलीफें सहकर माँ कहलाई हैं
अंधेरे में रहकर भी रोशनी बनी खुद
फिर भी क्यों
ये दुनिया को नहीं दिख पाई हैं,
आसमान से ऊँचा है इसका तसव्वुर
समंदर से गहरी इसकी गहराई है,
फूल से भी नाजुक तन है इसका,
पर्वतों से भी कठोर इसकी परछाई है,
पहेली है ये अजीब कितनी
सुलझ कर भी नहीं सुलझ पायी है,
हाय रे! कैसी किस्मत
एक लड़की लेकर आयी है।

बेटियाँ

निशा राघव
बी.ए. तृतीय

नाजुक दिल रखती हैं
मासूम सी होती हैं ये बेटियाँ
पिता का दुलार, माँ की ममता
नादान सी होती हैं ये बेटियाँ
हैं रहमत से भरपूर
भगवान का खजाना होती हैं ये बेटियाँ
घर लगता है सूना-सूना,
जब घर से विदा होती हैं
और ये मैं नहीं कहता,
मेरे भगवान कहते हैं
कि जब मैं बहुत खुश होता हूँ तब
जन्म लेती है ये बेटियाँ!

दुनिया रही न गोल

कु. निशा खान
एम.एम. प्रथम

दुनिया रही न अब ये गोल
सोच समझकर मानव बोल
देख तू मानव पाप का ताप
अब करेगा क्या प्रलय
सुनी होगी पूर्व जो की पूर्व कहानी
टूटी हुई तेरी कश्ती रूका हुआ पानी
है अब भी समय रोक ये भयावह पानी
वरना मात्र दो पल की तेरी कहानी
कर रक्षा ईश्वर के उपहार की
पड़ रही है आवश्यकता प्रेम उपकार की।

जीवन दर्शन

सुदेश शर्मा
एम.ए. प्रथम

मिले फूल से फूल तो
गुलदस्ता बन जाता है।
ईंट से ईंट जुड़े तो
सुंदर घर बन जाता है
छोटी-छोटी जल की लहरें
सागर बन लहराती है
मिट्टी के कण-कण से ही
यह पृथ्वी बन जाती है।
पल-पल छोटा लगता है पर
इससे युग बन जाता है
पल-पल का जो मोल समझता
वही बुद्धिमान कहलाता है।

एक सुझाव

ज्योति नागर
बी.ए. प्रथम

राहों पर चलते-चलते अगर तुम थक जाओ
तो अपनी मंजिल को याद करो
काम करते करते यदि तुम रूक जाओ
तो अपने कर्तव्यों को याद करो।
पूजा करते-करते यदि तुम रूक जाओ
तो अपनी श्रृद्धा को याद करो
सोते-सोते अगर तुम थक जाओ
तो नई सुबह को याद करो।
अपनी गलती से अगर तुम डर जाओ।
तो उन्हें सुधारने का प्रयास करो।

हँसना पड़ता है।

शिवानी
बी.कॉम प्रथम

हँसने की इच्छा ना भी हो तो
हँसना पड़ता है।
जब कोई पूछे कैसे हो तो
'मजे में हूँ, कहना पड़ता है।
ये जिन्दगी का रंगमंच है दोस्तों
यहाँ हर किसी को नाटक करना पड़ता है।
माचिस की जरूरत यहाँ नहीं पड़ती
यहाँ तो आदमी ही आदमी से जलता है।

संस्कृतस्य सेवनम्

अपूर्वी (संकलनकर्त्री)
एम.ए. प्रथम

संस्कृतस्य सेवनं, संस्कृताय जीवनम्।
लोकहितसमृद्धये भवतु तनुसमर्पणम्।।
कार्यगौरवं स्मरन्
विघ्नवारिधिं तरन्
लक्ष्यसिद्धिमक्षिसात् करोमि सोद्यमः स्वयम्।
यावदेति संस्कृतं, प्रतिजनं गृहं गृहम्
तावदविरता गतिस्तावदनुपदं पदम्।।1।।
कामये न सम्पदं
भोगसाधनं सुखम्
किञ्चिदन्यदाद्रिये विना न संस्कृतोन्नतिम्।
गौरवास्पदं पदं, नेतुमद्य संस्कृतम्
बद्धकटिरयं जनो निधाय जीवनं पणम्।।2।।
भाषिता च वागियं
भाषिता भवेद् ध्रुवम्
भाष्यमाणतां समेत्य राजतां पुनश्चिरम्
भरतभूमिभूषणं सर्ववाग्विभूषणम्
संस्कृतिप्रवाहकं संस्कृतं विराजताम्।।3।।

भूमिरियं बलिदानस्य

सरिता (संकलनकर्त्री)
एम.ए. द्वितीय

एत बालकाः दर्शयामि वस्तेजो हिन्दुस्थानस्य,
तेजो भारतवर्षस्य।
अस्य मृत्तिका शिरसा वन्द्या, भूमिरियं बलिदानस्य।
वन्दे मातरं, वन्दे मातरम्।।
उत्तरभागे रक्षणकर्ता नगाधिराजो विख्यातः।
दक्षिणदेशे पदक्षालको महासागरः प्रख्यातः।
पश्यत गङ्गायमुनातीरं परं पावनं भूलोके
स्थाने स्थाने यद् दिव्यत्वं नैव सुराणामपि नाके
एकमेव तत् स्थानं चैतत् देवानामवतारस्य ।।अस्य।।

रजपूतानामेतत् स्थानं खड्गे येषाम् अभिमानः
धर्मरक्षणे युद्धे मरणं यैर्मन्यते सम्मानः।
अत्रैवासीत् प्रतापवीरो विश्वेऽस्मिन् यो बहुमान्यः
शीलरक्षणे भस्मीभूताः अत्रासङ्खयाः पद्मिन्यः
रजः सुपूतं वीरपदाब्जैः स्थानं चैतद्देशस्य ।।अस्य।।

वङ्गोऽयं यद्धरणीहरिता मनोहारिणी सर्वत्र
निजराष्ट्रार्थं सिद्धा मरणे सन्ति बालका अप्यत्र
रामकृष्ण-गौराङ्ग-विवेकानन्द-प्रमुखाः यत्रासन्।
अरविन्दाद्याः क्रान्तिकारकाः शान्तिपूजकाः यत्रासन्
जन्मभूरियं 'नेताजेः' प्रख्यातस्य सुभाषस्य ।।अस्य।।

इयं दृश्यतां महाराष्ट्रभूः यत्र शिवाजी राजासीत्
यस्य भवानीकरवालेन म्लेच्छानां संहारोऽभूत्
स्थाने स्थाने पर्वतभागे सामर्थ्याग्निः प्रकटोऽभूत्
घोषो 'हर हर महादेव' इति बाले बाले प्राविरभूत्
कृतं हि गौरवरक्षणकार्यं शिवेन हिन्दुस्थानस्य ।।अस्य।।

भक्तिमानयं दक्षिणदेशो गोदाकृष्णापरिपुष्टः
गगनस्पर्धित-शिल्पकलान्वित-गोपुरभालैर्विभूषितः।
अत्र विद्यते सुजनस्थानं सीतापति-पदपरिपूतम्।
अत्र शङ्कराचार्याः वन्द्याः केरलभागे सम्भूताः
विजयनगर-साम्राज्यमिहासीत् ख्यातं हिन्दूधर्मस्य ।।अस्य।।

कृत्वा नवदृढसङ्कल्पम्

अपूर्वा (संकलनकर्त्री)
एम.ए. प्रथम

कृत्वा नवदृढसङ्कल्पम्
वितरन्तो नवसन्देशम्
घटयामो नव सङ्घटनम्
रचयामो नवमितिहासम्।।
नवमन्वन्तरशिल्पिनः
राष्ट्रसमुन्नतिकाङ्क्षिणः
त्यागधनाः कार्यैकरताः
कृतिनिपुणाः वयमविषण्णाः।। ।।कृत्वा।।
भेदभावनां निरासयन्तः
दीनदरिद्रान् समुद्धरन्तः
दुःखवितप्तान् समाश्वसन्तः
कृतसङ्कल्पान् सदा स्मरन्तः।। ।।कृत्वा।।
प्रगतिपथान्नहि विचलेम
परम्परां संरक्षेम
समोत्साहिनो निरुद्वेगिनो
नित्यनिरन्तरगतिशीलाः।। ।।कृत्वा।।

वर्णमालां पठ बाला

कोमल नागर (संकलनकर्त्री)
बी.ए. प्रथम

अ आ अक्षरमालाम्
आदरेण बाल।
इ ई इत आगच्छ
ईशं शरणं गच्छ।।

उ ऊ उद्गिर स्पष्टम्
ऊहित्वा रेखाम्।
ऋ ॠ ऋषिसुरगणः
नृणां वन्द्यः प्रथमम्।।

ए ऐ एहि जनानाम्
ऐक्यं साधय सततम्।
अम् अः राष्ट्रियभावं
साधयाम नित्यम्।।

ऐक्यमन्त्रः

अन्नपूर्णा (संकलनकर्त्री)
बी.ए. द्वितीय

यं वैदिका मन्त्रदृशः पुराणाः
इन्द्रं यमं मातरिश्वानमाहुः।
वेदान्तिनोऽनिर्वचनीयमेकं
यं ब्रह्मशब्देन विनिर्दिशन्ति।।
शैवा यमीशं शिव इत्यवोचन्
यं वैष्णवा विष्णुरिति स्तुवन्ति।
बुद्धस्तथार्हन्निति बौद्धजैनाः
सत्श्री-अकालेति च सिक्खसन्तः।।
शास्तेति केचित् कतिचित् कुमारः
स्वामीति मातेति पितेति भक्त्या।
यं प्रार्थयन्ते जगदीशितारं
स एक एव प्रभुरद्वितीयः।।

अक्षरमाला

काजल नागर (संकलनकर्त्री)
बी.ए. द्वितीय

रामः लिखति अ-आ-इ-ई
कृष्णः लिखति उ-ऊ-ऋ-लृ
बाला लिखति ए-ओ-ऐ-औ
अं-अः लिखति गोपीनाथः।।1।।
का त्वं बाले? काञ्चनमाला
कस्याः पुत्री? कनकलतायाः।
हस्ते किं ते? तालीपत्रम्
का वा रेखा? क-ख-ग-घ।।2।।
कस्त्वं बाल? मोहनकृष्णः
कस्याः पुत्रो? हेमलतायाः।
हस्ते किं तत्? लेखनफलकम्
किं तल्लिखितं? च-छ-ज-झ।।3।।
का त्वं बाले? स्नेहलताऽहं
कस्याः पुत्री? हंसलतायाः।।
हस्ते कि तत्? लेखनपत्रं
किं वा लिखसि? ट-ठ-ड-ढ।।4।।
कस्त्वं बाल? दीनयालुः
को वा जनको? रामकिशोरः।
हस्ते किं ते? पुस्तकमेव
किं वा पठसि? त-थ-द-ध।।5।।
का सा बाला? प्रेमलता सा
कस्याः पुत्री? कल्पलतायाः।
हस्ते किं वा? लेखनपत्रं
किं वा वदति? प-क-ब-भ।।6।।
श्रीशः लिखति य-र-ल-व
माला पठति श-ष-स-ह
सर्वो लिखति ञमङणनमिति
देवो नन्दति दृष्टवा सर्वम्।।7।।

देशगीतिका

कल्पना (संकलनर्त्री)
बी.ए. तृतीय

गुणगणमण्डित-यदुवरलसिता
राजति भारतमाता।
नीतिबोधकपरात्परगीता
बोधकयोगिजनाप्ता ।।गुण...।।

रम्यसुरालय-सरिदाक्रीडैः
भव्यसुललितनिजाङ्गा।
अभिमतसिद्धा धन्या
शुभफलवृद्धिसुमान्या
जीयाद् भारतशोभा ।।गुण...।।

अनुदिन-मङ्गलदायक-दयया
भारतमाता जयतात्।
जयतात्, जयतात्, जयतात्
निजजनगणमवतात्
भारतमाता जयतात्।।गुण...।।

POEM-THINKING OF THE WORLD

Munifa Saifi
B.A Ist year

Who is involved in somebody's work

Thy eye is on the safe who

Understands the burden of the heart.

There is a steady thief in the inside

People keep track of how heavy their pocket is no one will know how the attitude of the people.

The word just thinks he has money in his hand.

THOUGHT FOR FRIENDSHIP

Anshika Sharma
BA Ist year

Friendship is not just the name of an ordinary feeling, but it is the name of the feelings of understanding, honesty and frankness between two person and these feelings keep the two very special person bounded together and such a friendship lies in two of us.

EARTH IN DANGER

Kanchan Rousa
BA Ist year

I saw a beautiful dream.
In which the earth was green.
I saw only love,
But in reality there is only cruelty.
Water is now turning its position
This is all done by pollution.
There is an increase in the population,
This can cause a great destruction.
Come let us pledge to make the earth clean.
Instead of barren, make it green.

JOKES

Teacher- correct the sentence.
"A bull and a cow is grazing in the field"
Student- A cow and a bull is grazing in the field.
Teacher- How?
Student- Ladies first.

Santa- Went to court
Judge- Order! Order!
Santa- Pizza Dosa Idli & Cold drink
Judge- Shut up
Santa- No No....7 up.

THOUGHTS

Komal
BA Ist year

1. Learn to control your thoughts or your thoughts will control you.
2. God does not give us all that we like, God gives us all that is good for us.
3. The struggle you are in today is developing the strength you need for tomarrow.
4. The beautiful thing about learning is that no one can take it away from you.
5. Thinking is the capital, Enterprise is the way, Hard work is the soulation.

LIFE

Daraksha
M.A. III Sem.

Life may be tough
Things will get rough
There will be bad days
Life may seem like a haze
But through it all
Always, always stand tall
Giving up is not an option
Never turn your back and run
Through good times and bad
Through happy times and sad
As long as you keep moving
You'll never stop growing

EDUCATION

Daraksha
M.A. III Sem.

Education has a value
That sometimes cannot be quantified
If you ever doubt your journey
Look within, instead of looking outside
Deep inside your heart
Lie answers to all questions of life
No one else but you and your goals
Will keep you afloat in strife
Keep working hard
Focus on your long term goal
Its not the excuses that count
But the fire in your soul

VALUE OF TIME

Kanchan Rousa
BA Ist year

To realize the value of one year,
Ask a student who has
failed in his examinations.
To realize the value of one month,
Ask a mother who has given
birth to a premature baby.
To realize the value of one week,
Ask an editor of a weekly news paper.
To realize the value of one day,
Ask a daily wage labourer.
To realize the value of one hour.
Ask the lover who is waiting for beloved
To realize the value of one minute,
Ask a person who has missed the train.
To realize the value of one second
Ask a person who has survived an accident.

Snow Day

In the winter it's every kid's dream,
As snowflakes begin to appear.
That suddenly there' ll be a blizzard
And they'll cancel school for the year.

Though most kids are willing to settle
And I am inclined to agree
They could merely close school for oneday
One day off would be just fine with me.
A day free from all forms of homework.
A day without science or math
When you leave all your school books at home
And run out the door with a laugh.

A day full of sledding and cocoa.
And snowmen who wear dad's old clothes;
No writing out boring equations
After lunch when you' d rather just doze.
As snow day's day meant for lounging,
Where idleness isn't condemned,
A day where you sleep in till lunch time
A day that you don't want to end

And if you are truly quite lucky
The snow will continue its flight
And you' ll spend the afternoon hoping
The next day will be just as white.

करियर काउंसिलिंग गतिविधियाँ

राष्ट्रीय सेमिनार

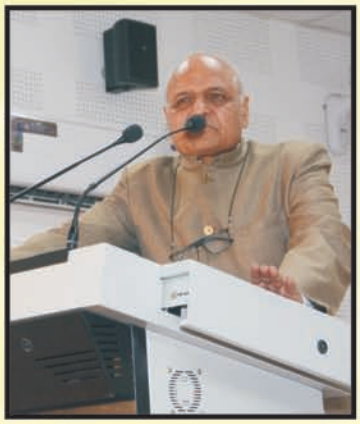

वार्षिक क्रीड़ा समारोह

वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह

विविधाञ्जलि

वार्षिक आख्या

डॉ. दीप्ति वाजपेयी
एसो.प्रो., संस्कृत

ग्रामीण अंचल में स्थित कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर की स्थापना शासन द्वारा 1997 में इस उद्देश्य से की गई थी कि सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग की छात्राओं को कम लागत पर गुणवत्तायुक्त उच्च शिक्षा प्रदान कर ग्रामीण व शहरी विभेदों को दूर करते हुए राष्ट्र के विकास में योगदान दिया जा सके। तब से निरन्तर यह महाविद्यालय छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान कर महिला सशक्तिकरण की दिशा में निरन्तर प्रगतिपथ पर अग्रसर है।

वर्तमान समय में बी.ए. बी.एस.सी., बी.कॉम तीनों संकायों सहित 13 विषयों में स्नातक की कक्षाएँ, कुल 10 विषयों में स्नातकोत्तर कक्षाएँ एवं द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम संचालित है। हर्ष का विषय है कि वर्तमान सत्र से महाविद्यालय में जन्तु विज्ञान विषय में M.Sc की कक्षायें भी संचालित हो रही है।

महाविद्यालय की वर्तमान प्राचार्या डॉ. दिव्या नाथ जी द्वारा दिनांक 12 जुलाई 2018 को प्राचार्य पद पर कार्यभार ग्रहण करने के उपरान्त उनके कुशल निर्देशन में महाविद्यालय निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

विगत वर्षो की भाँति इस सत्र में भी अध्ययन अध्यापन के साथ-साथ छात्राओं के सर्वागीण विकास हेतु विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन सत्रारम्भ से लेकर सम्पूर्ण सत्र पर्यन्त किया गया, जिसके अन्तर्गत समस्त विभागों में विभागीय परिषदों का गठन किया गया। सभी परिषदों के अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ, जिसका पुरस्कार वितरण दिनांक 12 फरवरी, 2019 को सम्पन्न किया गया।

इसी श्रृंखला में दिनांक 2 अक्टूबर से 10 अक्टूबर तक साहित्यिक-सांस्कृतिक सप्ताह का आयोजन किया गया जिसमें छात्राओं के सृजनात्मक, रचनात्मक एवं कौशलात्मक क्षमताओं के संवर्धन हेतु नृत्य, संगीत, मेंहदी, रंगोली, भाषण, निबन्ध, कविता कहानी लेखन इत्यादि विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

महाविद्यालय में राष्ट्रीय चेतना एवं समाज सेवा की भावना से ओत-प्रोत N.C.C, N.S.S एवं रेंजर्स की इकाईयाँ कार्यशील है। जिनमें N.C.C की दो यूनिट्स के अन्तर्गत डॉ. शिल्पी एवं डॉ. नेहा त्रिपाठी के नेतृत्व में 200 स्वयं सेवी छात्रायें पंजीकृत है तथा उनके द्वारा अपने नियमित एवं विशेष कार्यक्रमों के मध्य विभिन्न स्वच्छता एवं श्रमदान कार्य, जागरूकता कार्यक्रम, चिकित्सा शिविर, शिक्षा एवं साक्षरता कार्य, स्वच्छता पखवाड़ा इत्यादि अनेकानेक कार्य सत्र पर्यन्त किये जाते है। वर्तमान सत्र में N.S.S इकाई द्वारा "नेकी की दीवार" भी निर्मित की गई है जो गरीब एवं जरूरतमंद लोगों की वस्त्र सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है N.S.S एवं N.C.C के संयुक्त तत्वावधान में विश्व एड्स दिवस के अवसर पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में प्राध्यापकों एवं छात्राओं ने रक्तदान किया।

महाविद्यालय की N.C.C यूनिट के अन्तर्गत 3 केडेट्स का चयन "एक भारत-श्रेष्ठ भारत" कार्यक्रम में तेजपुर असम के लिये हुआ जिसमें U.P का प्रतिनिधित्व करते हुए ड्रिल में उन्हें द्वितीय स्थान तथा NIAP में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। साथ ही महाविद्यालय के लिये यह गर्व का विषय है कि N.C.C केयरटेकर डॉ. मीनाक्षी लोहानी ने तीन माह की कठिन ट्रेनिंग के उपरान्त भारतीय सशस्त्र सेना के समकक्ष लेफ्टिनेंट के गौरवशाली पद को प्राप्त किया। इस दौरान उन्होंने दो स्वर्ण पदक, उत्कृष्टता प्रमाण पत्र एवं ए श्रेणी में प्रशिक्षण पूर्ण कर ANO की गरिमामयी उपाधि प्राप्त की। इसके अतिरिक्त 21 दिसम्बर से 30 दिसम्बर तक आयोजित होने वाले आर.डी.सी. शिविर में भी उन्हें सर्वश्रेष्ठ N.C.C ऑफीसर के रूप में स्वर्ण पदक प्रदान किया गया।

महाविद्यालय की रेंजर्स इकाई के अन्तर्गत डॉ.सुशीला के निर्देशन में त्रिदिवसीय रेंजर्स शिविर का आयोजन किया गया साथ ही रेंजर्स एवं महिला प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 24 अक्टूबर से 29 अक्टूबर तक छात्राओं हेतु आत्मरक्षा प्रशिक्षण

शिविर का आयोजन भी किया गया।

महाविद्यालय द्वारा दिनांक 24 अगस्त को अत्यन्त प्रसंशनीय कदम उठाते हुए छात्र कल्याण प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ. आभा सिंह के सहयोग से सेनेटरी पैड वेडिंग एवं डिस्पोजल मशीन की स्थापना की गई। साथ ही नवरत्न फाउण्डेशन द्वारा महाविद्यालय को 10 सिलाई मशीने भी भेंट की गई, जिससे महाविद्यालय में सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारम्भ हुआ।

महाविद्यालय के गृहविज्ञान विभाग द्वारा 1 सितम्बर से 7 सितम्बर तक अन्तर्राष्ट्रीय पोषण सप्ताह का आयोजन किया गया तथा हिन्दी विभाग द्वारा 7 सितम्बर से 14 सितम्बर तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन हुआ जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ-साथ हिन्दी दिवस के सुअवसर पर विराट कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया, जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कवियों में प्रतिभाग कर महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया।

दिनांक 17 सितम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय ओजोन दिवस के अवसर पर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुये महाविद्यालय में ई-वेस्ट मेनेजमेन्ट बाक्स एवं कम्पोस्ट पिट का निर्माण किया गया। इसी क्रम में महाविद्यालय में ग्रीन आडिट के तहत महाविद्यालय परिसर के समस्त वृक्षों को उनके बोटेनिकल नाम से चिन्हित कर उनमें तख्तियाँ लगाई गई तथा गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत के क्रम में इको फ्रैडली कदम उठाते हुए 5 के.वी का सोलर पैनल भी लगाया गया, जिसे बढ़ाने की दिशा में और भी प्रयास जारी है। इसी श्रृंखला में जागृति संस्था से एम.ओ.यू साइन कर 1500 किलो वेस्ट पेपर रिसाइकिंलिग का कार्य भी किया गया है।

महाविद्यालय में 20 नवम्बर से 20 दिसम्बर तक शासन द्वारा निर्देशित "नारी शक्ति आह्वान अभियान" चलाया गया जो कि महिला प्रकोष्ठ एवं नारी उत्पीड़न एवं आन्तरिक परिवाद समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ। साथ ही राष्ट्रीय महिला आयोग द्वारा निर्देशित "महिलाओं से सम्बन्धित कानून" विषयक क्विज प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया जिसमें 150 से भी अधिक छात्राओं ने भाग लिया।

महाविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग द्वारा सम्पूर्ण सत्र में विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसकी अन्तिम कड़ी के रूप में क्रीड़ा प्रभारी डॉ. धीरज कुमार के नेतृत्व में दिनांक 18 एवं 19 दिसम्बर को वार्षिक क्रीड़ा समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में जकार्ता एशिआई खेलों में 100 मीटर एयर को पिस्टल प्रतियोगिता के स्वर्ण पदक विजेता श्री सौरभ चौधरी ने महाविद्यालय की छात्राओं का उत्साह वर्धन करते हुए उनके साथ अपने अनुभव सांझा किये।

हमारे महाविद्यालय में सस्थागत कोर्स से वंचित छात्राओं की शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु इग्नू अर्थात् इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त वि.वि. सफलता पूर्वक संचालित किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत इन्डेक्शन प्रोग्राम का आयोजन किया गया तथा छात्र-छात्राओं को इग्नू क्रिया विधि एवं परीक्षा प्रणाली से अवगत कराया गया। इसके अतिरिक्त महाविद्यालय में युवादिवस मानवाधिकार दिवस, विभिन्न जयन्तियाँ एवं समस्त राष्ट्रीय पर्व हर्षोल्लास के साथ समय-समय पर आयोजित किये गये।

दिनांक 1 अक्टूबर को महिला प्रकोष्ठ एवं नारी उत्पीड़न निवारण समिति के संयुक्त तत्वावधान में "कार्यक्षेत्र में महिला उत्पीड़न" समस्या व समाधान विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

दिनांक 17 अक्टूबर को शिक्षक-अभिभावक सम्मेलन तथा दिनांक 13 फरवरी को पुरातन छात्रा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें भारी संख्या में अभिभावकों एवं पुरातन छात्राओं ने भाग लिया तथा महाविद्यालय के प्रयासो की प्रसंशा की।

दिनांक 19 नवम्बर को दैनिक जागरण एवं महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ के संयुक्त प्रयासों से "महिला सुरक्षा हमारी जिम्मेदारी" विषय पर पुलिस कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें एस.एस.पी. डॉ. अजय शर्मा ने महिला सुरक्षा को पुलिस का दायित्व बताते हुए छात्राओं के विविध प्रश्नों के समाधान प्रस्तुत किए।

5 दिसम्बर को महाविद्यालय के चित्रकला विभाग द्वारा चित्रकला प्रदर्शिनी का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. शालिनी

तिवारी के निर्देशन में छात्राओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। वाणिज्य संकाय के अन्तर्गत दिनांक 10 दिसम्बर से 15 दिसम्बर तक वाणिज्य सप्ताह का आयोजन हुआ, जिसमें विभिन्न विषय विशेषज्ञो द्वारा छात्राओं को शेयर मार्केटिग, ई-कामर्स तथा रोजगार से जुड़ी अन्य जानकारियाँ उपलब्ध कराई गई। इसके साथ ही सभी विभागों में भी करियर काउन्सलिंग सत्रों का आयोजन किया गया। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक रोचक और सरल बनाने के उद्देश्य से विभिन्न विभागों द्वारा छात्राओं को शैक्षिक भ्रमण पर दिल्ली के अनेक स्थलों एवं आगरा-फतेहपुर सीकरी इत्यादि स्थलों पर ले जाया गया। दिनांक 13 फरवरी को विज्ञान संकाय द्वारा भव्य विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। महाविद्यालय की आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से महाविद्यालय में आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ गठित है जिसके अन्तर्गत वर्ष में तीन बार IQAC मीट का आयोजन किया जाता है। IQAC की प्रथम मीट 20 सितम्बर एवं द्वितीय मीट 12 जनवरी को तथा तृतीय मीट 4 मई 2019 को आयोजित की गई। IQAC के तत्वावधान में चार एकदिवसीय कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया जिसमें ई गूगल, बौद्धिक सम्पदा अधिकार, निवेश जागरुकता एवं भावनात्मक बुद्धि विषय पर कार्यशालाएँ आयोजित की गई।

महाविद्यालय छात्राओं को आत्मनिर्भर बनाने, उन्हें मार्केटिग प्लानिंग एवं रोजगार से जुड़ी जानकारियाँ उपलब्ध कराने हेतु डिपार्टमेन्ट आफ साइंस एवं टेक्नोलोजी भारत सरकार द्वारा प्रायोजित उद्यमिता जागरूकता कैम्प का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त उक्त उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त महाविद्यालय रोजगार प्रकोष्ठ एवं करियर काउन्सलिंग समिति के तत्वावधान में भी विभिन्न करियर सम्बन्धी व्याख्यान एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये, साथ ही प्रसार व्याख्यान श्रृंखला के अन्तर्गत विभिन्न प्रसार व्याख्यानों का आयोजन किया गया।

दिनांक 21 जनवरी 2019 को उच्च शिक्षा निदेशालय द्वारा अनुदानित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसका विषय था-सूचना विस्फोट और 21वीं शताब्दी का युवा: सम्भावनायें एवं चुनौतियाँ। डॉ. शिवानी वर्मा के संयोजकत्व में आयोजित इस राष्ट्रीय सेमिनार में देश के दूरस्थ अंचलों से आये विभिन्न प्रतिभागियों ने अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। दिनांक 8/5/19 को गृह विज्ञान विभाग द्वारा महिला उद्यमिता को प्रोत्साहन देने हेतु हस्त निर्मित विभिन्न वस्तुओं की प्रदर्शनी एवं सेल का आयोजन किया गया।

उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में निरन्तर उन्नयन करते हुए महाविद्यालय में शोध कार्य को विशिष्ट स्थान दिया गया है। वर्तमान समय में महाविद्यालय के विभिन्न विभागों में शोध केन्द्र स्थापित है तथा उनमें 37 शोध-छात्र पंजीकृत है। शिक्षक उपलब्धियों के अन्तर्गत इस वर्ष महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. दिव्या नाथ को द्रोणाचार्य अवार्ड से सम्मानित किया गया तथा डॉ. किशोर कुमार, एसो.प्रो. इतिहास को ई.एस.डी.ए. ग्रीन लीडरशिप अवार्ड से सम्मानित किया गया। डॉ. किशोर कुमार हिस्टोरिकल एण्ड कल्चरल कन्टीन्यूटी ऑफ जम्मू एवं कश्मीर परियोजना में को-डायरेक्टर के रूप में भी चयनित हुए है। इसके साथ ही डॉ. दिनेश चन्द शर्मा को इन्डियन एकेडमी ऑफ इन्वायरमेन्ट सांइस द्वारा आई.ए.ई.एस. के स्वर्ण पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया, जो कि स्वयं उनके एवं महाविद्यालय के लिये गौरव की बात है।

इस वर्ष संस्कृत विभाग की प्राध्यापिका डॉ. कनकलता को पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त हुई है तथा डॉ. आभा सिंह, एसो. प्रो. राजनीति विज्ञान विभाग एवं डॉ. दीप्ति वाजपेयी, एसो.प्रो. संस्कृत विभाग की एक-एक पुस्तक भी प्रकाशित हुई है।

वर्तमान सत्र की विशिष्ट उपलब्धियों में दो वी-वॉक कोर्स एवं 10 विषयों में सार्टीफिकेट कोर्स का संचालित होना है, जो क्रमश: यू.जी.सी. एवं वि.वि. द्वारा अनुमोदित है। इसके साथ ही छात्राओं की रोजगार सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए महिला सशक्तिकरण की दिशा में सबल कदम उठाते हुए मेघा ग्रुप लखनऊ के माध्यम से 30 घंटे का सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया गया तथा दो रोजगार मेलों का आयोजन किया गया।

महाविद्यालय की अन्य विशिष्ट उपलब्धियों में प्रभावशाली मेन्टर प्रणाली का लागू होना है, जिससे छात्राओं की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं अन्य समस्याओं का प्रभावशाली हल खोजा जा सके। लाइब्रेरी ऑटोमेशन एवं न्यूज लेटर "प्रतिबिम्ब"

का प्रकाशन भी वर्तमान सत्र की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ है। इसके साथ ही नमो गंगे ट्रस्ट, आई.टी.एस. इंजीनियरिग कॉलेज, एड ऑन सिस्टम प्रा. लिमिटेड, ए.जी.आई.ए, क्यू.टी. एनालिस्टिक्स, अम्बुजा सीमेन्ट, जागृति संस्था, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय एवं क्लियर मेडी हॉस्पिटल एवं कैंसर सेन्टर के साथ एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर होना महाविद्यालय की महत्वपूर्ण उपलब्धि है क्योंकि इन सभी संस्थाओं के साथ कोलेबरेशन के माध्यम से महाविद्यालय छात्रा हित में इनकी सुविधाओं का उपयोग कर सकेगा तथा महाविद्यालय को प्रगति की एक नई दिशा प्राप्त होगी। महाविद्यालय परिवार के लिए यह अत्यन्त गौरव की बात है कि प्रदेश के समस्त महाविद्यालयों में से एकमात्र कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर को Qtabu Certification Limited Landon (UK) द्वारा शैक्षिक गुणवत्ता एवं मानकीकरण के लिए ISO 9001:2015 प्रमाण पत्र निर्गत किया गया है। उल्लेखनीय है कि शिक्षा एवं शोध में गुणवत्तापूर्ण कार्यो के लिए यह प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है।

हिन्दी परिषद्

डॉ. मिन्तु
असि. प्रो. हिन्दी

पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त छात्राओं के व्यापक दृष्टिकोण, विकास व उनके व्यक्तित्व निर्माण हेतु शिक्षणेतर गतिविधियों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। महाविद्यालय में विभागीय परिषद् इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हुई सतत प्रयासरत रहती है। हिन्दी साहित्य परिषद् के तत्वावधान में समय-समय पर विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती रही है जो कि छात्राओं को एक दिशा देने के साथ-साथ ही उनके मनोबल को बढ़ाने में सहायक होती है। इसी क्रम में हिन्दी साहित्य परिषद् के तत्वावधान में सत्र 2018-19 में विभागीय परिषद् का गठन कर अनेक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई जिसमें छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। आशु भाषण प्रतियोगिता में कु. कोमल नागर, कोमल रावल एवं मोनिका खटाना क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रही। भाषण प्रतियोगिता में कु. महिमा कसाना प्रथम, अर्शी अल्वी द्वितीय तथा आकांशी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। समस्त छात्राओं को पुरस्कार वितरण समारोह में सम्मानित किया गया।

संस्कृत परिषद्

डॉ. दीप्ति वाजपेयी
परिषद् प्रभारी

संस्कृतस्य रक्षणाय बद्धपरिकरा वयम्।
संस्कृते प्रवर्धनाय दृढ़निधिर्भवेदिदम्।।

संस्कृत भाषा की समसामयिकता एवं महत्व को जन-जन तक प्रचारित-प्रसारित करने के संकल्प के साथ, छात्राओं के सर्वांगीण अभ्युदय की दृष्टि से सांस्कृतिक-नैतिक लक्ष्यों से अनुप्रमाणित संस्कृत परिषद् का गठन दिनांक 29/8/18 को विगत वर्षो के अनुरूप निम्नवत् किया गया-

अध्यक्ष	-	प्राचार्या
परिषद् प्रभारी	-	डॉ. दीप्ति वाजपेयी
उपाध्यक्ष	-	कु. सरिता
सचिव	-	कु. अपूर्वा एवं कु. प्रियंका विकल

सह-सचिव - कु. अंजली नागर

कक्षा प्रतिनिधि - कु. काजल नागर, कु. कोमल

छात्राओं के समन्वित एवं समग्र विकास हेतु संस्कृत परिषद् के तत्वावधान में विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाता रहा है। सर्वप्रथम सत्रारम्भ में दिनांक 16/07/18 को अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें महाविद्यालय में संचालित विभिन्न गतिविधियों, समितियों, छात्रोपयोगी क्रियाकलापों एवं संस्कृत विभाग से सम्बन्धित विभिन्न बिन्दुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला गया।

दिनांक 22 सितम्बर 2018 को संस्कृत विभाग में स्नातकोत्तर की छात्राओं के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका विषय था- "पर्यावरण संरक्षण: अधिकार भी- कर्त्तव्य भी"। इस कार्यशाला में पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न मुद्दों पर डॉ. दीप्ति वाजपेयी द्वारा प्रकाश डाला गया तथा छात्राओं को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील होने तथा उसे संरक्षित करने के लिये शपथ दिलाई गई, साथ ही छात्राओं ने महाविद्यालय की स्वच्छता भी सुनिश्चित की।

दिनांक 27/10/18 को संस्कृत विभाग में सामाजिक जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें छात्राओं ने विभाग प्रभारी डॉ. दीप्ति वाजपेयी के निर्देशन में ग्राम-बादलपुर एवं सादोपुर की महिलाओं एवं बालिकाओं को आत्मनिर्भरता के महत्व से अवगत कराया।

दिनांक 17 नवम्बर 2018 को शिक्षक-अभिभावक सम्मेलन का आयोजन किया गया एवं महाविद्यालय के समन्वित कार्यक्रम में संस्कृत विभाग की छात्राओं के अभिभावकों ने कार्यक्रम में सहभागिता की तथा अपने विचार सांझा किए। दिनांक 30 नवम्बर 2018 को स्नातकोत्तर स्तर पर विभागीय सेमिनार का आयोजन किया गया जिसका विषय था- "कालिदास के काव्यों में प्रकृति चित्रण"। संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. दीप्ति वाजपेयी ने छात्राओं को विषय बोध कराया तत्पश्चात छात्राओं ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए।

दिनांक 5 फरवरी 2019 को संस्कृत विभाग में करियर काउन्सलिंग सत्र का आयोजन किया गया। जिसमें छात्राओं को संस्कृत भाषा के महत्व एवं इससे सम्बन्धित करियर के विषय में व्यापक जानकारी उपलब्ध कराई गई। दिनांक 13 फरवरी 2019 को पुरातन छात्रा सम्मेलन का आयोजन किया गया। महाविद्यालय स्तर पर आयोजिन इस कार्यक्रम में संस्कृत की पुरातन छात्राओं ने सहभाग किया तथा अपने विचार व्यक्त किए इसके पश्चात विभाग में एकत्र होकर छात्राओं ने अपनी प्रगति के विषय में जानकारी उपलब्ध कराई।

उपर्युक्त गतिविधियों के अतिरिक्त संस्कृत परिषद् के तत्वावधान में दो प्रतियोगितायें भी आयोजित की गई। जिनके परिणाम निम्नवत् रहे-

पोस्टर प्रतियोगिता-

1. कु. अपूर्वा- एम.ए. प्रथम-प्रथम स्थान
2. कु. अपूर्वी- एम. ए. प्रथम- द्वितीय स्थान
3. कु. आरती रानी- बी.ए. तृतीय- तृतीय स्थान

निबन्ध प्रतियोगिता

1. कु. शीतल- एम.ए प्रथम- प्रथम स्थान
2. कु. अंजलि नागर- बी.ए. तृतीय- द्वितीय स्थान
3. कु. मोनिका सिंघल- एम.ए. प्रथम- तृतीय स्थान

सभी विजयी छात्राओं को विभागीय परिषद् पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कृत किया गया। वार्षिकोत्सव में सत्र 2017-18 में महाविद्यालय स्तर पर सर्वाधिक अंक पाने का गौरव संस्कृत विभाग की छात्रा कु. संजू नागर को प्राप्त हुआ। उल्लेखनीय है कि कु. संजू नागर विश्वविद्यालय में संस्कृत विषय की सेकेन्ड टॉपर भी है। संस्कृत परिषद् आगामी सत्रों में भी छात्राओं के चतुर्मुखी विकास हेतु उन्हें सकारात्मक परिवेश प्रदान करने हेतु कृत संकल्प है।

अंग्रेजी परिषद्

जूही बिरला
परिषद् प्रभारी

"साहित्य समाज का दर्पण है" यह सर्वमान्य तथ्य है। हर काल का साहित्य समाज का दर्पण रहता है। जिससे मानव आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्था के इतिहास के बारे में जानता है। साहित्य मानव के सामाजिक सम्बन्धों को अधिक शक्तिशाली बनाता है।

अंग्रेजी साहित्य द्वारा भी मनुष्य सिर्फ अपने ही देश के सामाजिक सम्बन्धों को शक्तिशाली नहीं बनाता है अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक स्थिति के बारे में जानकारी प्रदान करता है, साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को भी मजबूत बनाता है।

छात्राओं को अंग्रेजी विषय के प्रति जागरूकता, उत्सुकता और उनमें सुन्दर, सरल व सद्भावनापूर्ण, सांस्कृतिक आचरणयुक्त मानवीय गुणों का प्रचार-प्रसार करने हेतु महाविद्यालय का अंग्रेजी विभाग सदैव प्रयत्नशील रहा है। शिक्षण कार्यों के अतिरिक्त छात्राओं में निहित गुप्त प्रतिभाओं को विकसित एवं पुष्पित करने हेतु विभाग ने 30/8/2018 को विभागीय परिषद् का गठन किया गया जो निम्नवत् है–

सरंक्षक- डॉ. दिव्या नाथ- प्राचार्या

अध्यक्ष- श्रीमती जूही बिरला- परिषद् प्रभारी

उपाध्यक्ष- श्रीमती दीक्षा- परिषद प्रभारी

सचिव- डॉ. विजेता गौतम

कोषाध्यक्ष- डॉ. श्वेता सिंह

स्नातक और स्नातकोत्तर की कक्षाओं में सर्वसम्मति से अध्यक्ष व उपाध्यक्ष पद के लिये निम्न छात्राओं का चयन किया गया।

अध्यक्ष- शालू- एम.ए. द्वितीय

उपाध्यक्ष- वर्षा- एम.ए. प्रथम

छात्राओं के शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विकास हेतु सत्र 2018-19 में विभागीय परिषद के अन्तर्गत अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

छात्राओं के अंग्रेजी भाषा में सुधार एवं गहन अध्ययन के लिये विभाग द्वारा Words Worth Lauguage Lab Company के माध्यम से Lauguage Lab Presentation करवाया गया।

छात्राओं के आत्मविश्वास, सामाजिक एवं मानसिक विकास के लिये अंग्रेजी विभागीय परिषद के तत्वाधान में दो

प्रतियोगिताये सम्पन्न करायी गयी जिसके परिणाम निम्नवत् रहे–

1. Essay writing competition (PG Level)

1. कु. शालू- एम.ए. द्वितीय- प्रथम

2. कु. रूचि- एम.ए. प्रथम- द्वितीय

3. सुन्दरी- एम.ए. प्रथम- तृतीय

2. Essay writing competition (PG Level)

1. सना प्रवीन- बी.ए. द्वितीय- प्रथम

2. कंचन- बी.ए. प्रथम- द्वितीय

3. शिवानी- बी.ए. प्रथम- तृतीय

उपर्युक्त सभी छात्राओं को विभागीय परिषद के तत्वाधान में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर पुरस्कार व प्रमाण-पत्र वितरित किये गये।

गृहविज्ञान परिषद्

श्रीमती शिल्पी
असि. प्रो. गृह-विज्ञान

गृह-विज्ञान का विषयक्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। अपने विभिन्न क्षेत्रों के माध्यम से यह महिलाओं के बहुआयामी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। छात्राओं को इसके प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से सत्र 2018-19 में गृह-विज्ञान परिषद् का गठन किया गया। जीवन में सफलता के शिखर पर पहुँचने के लिए विद्यार्थी की पठन-पाठन के अलावा शिक्षणेत्तर गतिविधियों में भी सहभागिता अति आवश्यक है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक वर्ष गृह-विज्ञान परिषद् का गठन किया जाता है। सत्र 2018-19 में भी गृह-विज्ञान परिषद् का गठन किया गया जो निम्नवत् है-

संरक्षक	:	प्राचार्या (डॉ. दिव्या नाथ)
प्रभारी	:	श्रीमती शिल्पी
सहप्रभारी	:	श्रीमती माधुरी पाल
अध्यक्ष	:	कु. सुरभि द्विवेदी, पुत्री श्री अवधेश द्विवेदी, एम.ए. द्वितीय
उपाध्यक्ष	:	कु. प्रियंका पुत्री, श्री महताब सिंह, एम.ए. प्रथम
सचिव	:	कु. काजल पुत्री, श्री संजय भाटी, बी.ए. तृतीय
सदस्य	:	कु. आशी पुत्री, श्री सुभाष शर्मा, बी.ए. द्वितीय
		कु. नेहा पुत्री, श्री रघुराज, बी.ए. प्रथम

इस सत्र के आरम्भ में दिनाँक 24/07/19 को "अभिविन्यास कार्यक्रम" का आयोजन किया गया जिसमें गृह-विज्ञान विषय की स्नातक एवं स्नातकोत्तर की छात्राओं को गृह-विज्ञान सम्बन्धी विषयों एवं क्रियाकलापों की जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम में छात्राओं को वार्षिक परीक्षा एवं सेमेस्टर प्रणाली परीक्षा की जानकारी भी उपलब्ध कराई गई।

दिनांक 12/08/18 को "पौष्टिक भोजन की भूमिका" विषय पर प्रसार व्याख्यान आयोजित किया गया। इसमें मुख्य वक्ता

के रूप में डॉ. लता ओबराय (सेवानिवृत्त) आर.जी. कॉलेज मेरठ ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

विभाग द्वारा "अन्तर्राष्ट्रीय पोषण सप्ताह 2018" का आयोजन किया गया। इस "अन्तर्राष्ट्रीय पोषण सप्ताह" में छात्राओं को प्रतिदिन विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा पोषण सम्बन्धी जानकारी उपलब्ध करायी गई। स्नातकोत्तर की छात्राओं में सम्बन्धित विषय पर प्रतिदिन पोस्टर प्रस्तुतीकरण, नारा लेखन, सलाद-सज्जा, निबंध लेखन, नुक्कड़ नाटक एवं पोषण सम्बन्धी प्रसार व्याख्यान आयोजित किया गया। साथ ही छात्राओं द्वारा किशोरावस्था में पोषण सम्बन्धी जानकारी विषय पर सर्वेक्षण कराया गया।

दिनांक 26/09/18 को छात्राओं को शैक्षिक भ्रमण हेतु NITRA (Northern India Textile Research Assaciaction) गाजियाबाद ले जाया गया। इन छात्राओं को वस्त्र विज्ञान के विभिन्न आयामों एवं आधुनिक परिवेश में टेक्सटाइल क्षेत्र में व्यवसायों के अवसरों के बारे में जानकारी उपलब्ध करायी गई। छात्राओं को समस्त टेक्सटाइल उद्योगों में प्रयुक्त विभिन्न मशीनरी, हथकरघा, आधुनिक करघा स्पिनिंग मशीन आदि का प्रदर्शन कराया गया। इस कार्यक्रम के द्वारा छात्राओं में उद्यमिता सम्बन्धी कौशल को विकसित करने का प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

विभाग की छात्राओं को गृह-विज्ञान के विभिन्न रोजगार सम्भावनाओं की व्याख्या हेतु कैरियर काउन्सिलिंग व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में NITRA, गाजियाबाद से आए विषय विशेषज्ञ एम.एम. तिवारी तथा श्री संजय गुप्ता ने उपस्थित छात्राओं को वस्त्र विज्ञान के विभिन्न आयामों से परिचित कराया एवं कपड़ा उद्योग में रोजगार के अवसरों की विस्तृत व्याख्या एवं जानकारी दी। गृह-विज्ञान विभागीय परिषद् के तत्वावधान में सत्र 2018-19 में दिनांक 30/11/18 को "थाल-सज्जा" एवं दिनांक 3/12/18 को "कलश सज्जा" प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विजयी छात्राएँ निम्नवत् हैं-

"थाल सज्जा प्रतियोगिताः-

प्रथम पुरस्कारः- कु. संगीता सैनी, पुत्री श्री रमेश सैनी (एम.ए. द्वितीय वर्ष)

द्वितीय पुरस्कारः- कु. सुरभि द्विवेदी, पुत्री श्री अवधेश द्विवेदी (एम.ए. द्वितीय वर्ष)

तृतीय पुस्कारः- कु. पूनम कुमारी, पुत्री श्री सूरजपाल सिंह (एम.ए. द्वितीय वर्ष)

कलश सज्जा प्रतियोगिताः-

प्रथम पुरस्कारः- कु. ज्योति भाटी, पुत्री श्री हरगोविन्द (बी.ए. द्वितीय वर्ष)

द्वितीय पुरस्कारः- कु. आरती नागर, पुत्री श्री निर्भय (बी.ए. प्रथम वर्ष)

तृतीय पुरस्कारः- कु. निशा, पुत्री श्री महेन्द्र सिंह (बी.ए. तृतीय वर्ष)

शारीरिक शिक्षा परिषद्

श्री धीरज कुमार
परिषद् प्रभारी

कु. मायावती राजकीय महिला महाविद्यालय बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर में महाविद्यालय क्रीड़ा परिषद् के सौजन्य से दो दिवसीय खेल कूद प्रतियोगिता दिनांक 18-19 दिसम्बर, 2018 को सम्पन्न करायी गई। इस अवसर पर जकार्ता एशियाई खेलों में 10 मीटर एयर पिस्टल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक विजेता श्री सौरभ चौधरी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। संस्था की प्राचार्या डॉ. दिव्या नाथ द्वारा मनुष्य जीवन और खेलों के बीच पारस्परिक संबंधों को सामान्य उदाहरणों से स्पष्ट किया गया। मुख्य अतिथि श्री सौरभ चौधरी जी द्वारा खेलो के विकास में महाविद्यालय परिवार एवम् उनके प्रयासों की खुले हृदय

से प्रशंसा की गयी।

डॉ. संजीव कुमार द्वारा शारीरिक शिक्षा विभाग की वार्षिक आख्या प्रस्तुत की गई। डॉ. संजीव कुमार ने इस अवसर पर कहा कि–

तलवारों की धारों पर, ये आजादी पलती है,
इतिहास उधर मुड़ जाता है, जिधर जवानी चलती है।

दो दिवसीय वार्षिक खेल उत्सव में निम्नलिखित प्रतियोगितायें सम्पन्न करायी गयी जिनका परिणाम निम्नवत् रहा–

ऊंची कूद प्रतियोगिता

प्रथम स्थान– कु. रेखा नागर, बी.एड. प्रथम वर्ष

द्वितीय स्थान– कु.पूजा शर्मा, बी.ए. द्वितीय वर्ष

तृतीय स्थान– कु. मंजू नागर, बी.ए. तृतीय वर्ष

लंबी कूद प्रतियोगिता

प्रथम स्थान– पूजा शर्मा, बी.ए. द्वितीय वर्ष

द्वितीय स्थान– कु. रेखा डागर, बी.एड. द्वितीय वर्ष

तृतीय स्थान– कु. भावना, एम.ए. द्वितीय वर्ष

गोला फेंक प्रतियोगिता

प्रथम स्थान– कु. कोमल, बी.ए. द्वितीय वर्ष

द्वितीय स्थान– कु. मंजू नागर, बी.ए. तृतीय वर्ष

तृतीय स्थान– कु. आँचल, बी.ए. द्वितीय वर्ष

भाला फेंक प्रतियोगिता

प्रथम स्थान– कु. कोमल, बी.ए. द्वितीय वर्ष

द्वितीय स्थान–कु.मीनू तेवतिया, बी.एड.प्रथम

तृतीय स्थान– कु. डॉली, बी.ए. तृतीय वर्ष

400 मीटर दौड़ प्रतियोगिता

प्रथम स्थान– मनीषा, बी.ए. तृतीय वर्ष

द्वितीय स्थान– काजल, बी.ए. द्वितीय वर्ष

तृतीय स्थान–भावना कुमारी, एम.ए. द्वितीय वर्ष

100 मीटर दौड़ प्रतियोगिता

प्रथम स्थान– पूजा शर्मा, बी.ए. द्वितीय वर्ष

द्वितीय स्थान– कु. मंजू नागर, बी.ए. तृतीय वर्ष

तृतीय स्थान– उर्वशी शर्मा, बी.ए. द्वितीय वर्ष

क्रीड़ा समारोह के दूसरे दिन पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. जे.पी. शर्मा, सेवानिवृत्त प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय नोएडा ने विजयी छात्राओं को पुरस्कार प्रदान किए। छात्रा चौंपियन का पुरस्कार कु. पूजा शर्मा द्वितीय वर्ष को प्रदान किया गया। श्री धीरज कुमार, विभाग प्रभारी द्वारा खेल के नये आयामों एवं नई तकनीकियों के बारे में जानकारी दी गई।

इस वर्ष महाविद्यालय में रूसा ग्रान्ट से 04 नई तकनीकी मशीनें आयी, जो छात्राओं एवं प्राध्यापकों दोनों के लिये ही लाभदायक है, छात्रायें उन तकनीकी मशीनों का प्रतिदिन इस्तेमाल कर रही है। इस वर्ष कुछ कक्षायें भी स्मार्ट कक्ष में आयोजित की गई जिसमें पी.पी.टी. द्वारा छात्राओं को योगा एवं खेल की महत्वपूर्ण जानकारी एवं छात्राओं को प्रेरित करने के लिये खेल के नये आयामों एवं उनकी उपयोगिता के बारे में भी दिखाने का प्रयास किया गया। जिसमें छात्राओं ने अधिक रूचि जताई। इस अतिरिक्त महाविद्यालय में विभागीय स्तर बैडमिन्टन, किक्रेट, वॉलीबाल, टैबल टेनिस आदि प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

इतिहास परिषद्

डॉ. निधि रायजादा
परिषद् प्रभारी

इतिहास विषय का अध्ययन-अध्यापन आज के अत्याधुनिक युग में अत्यन्त आवश्यक है। यह विषय मार्गदर्शन करता है। अतीत की घटनाओं के कारण व परिणामों को जानकर, उसके अनुभवों से लाभ उठाकर वर्तमान को संवारना ही विषय की सार्थकता को प्रकट करता है। मानव के बदुआयामी क्षेत्रों का अध्ययन इतिहास के अन्तर्गत किया जाता है। इतिहास केवल अतीत में घटित घटनाचक्र को दर्शाने तक ही सीमित नहीं है, अपितु यह समृद्ध वर्तमान एवं सुन्दर भविष्य का सृजनकर्ता भी है। यह मनुष्य जीवन को सुन्दर, मानवीय गुणों से भरपूर बनाने में एक कुशल शिक्षक की भूमिका निभाता है।

छात्राओं में मानवीय, नैतिक, सद्भावनापूर्ण, आचरणयुक्त गुणों का प्रचार व प्रसार करने में महाविद्यालय का इतिहास विभाग सदैव प्रयत्नशील हैं। शिक्षण कार्यो के अतिरिक्त छात्राओं के सर्वागीण विकास हेतु इस सत्र में प्रारम्भ में दिनांक 24/8/2018 को विभाग के सभी प्राध्यापकों की उपस्थिति में विभागीय परिषद् का गठन किया गया, जिसमें विभाग प्राध्यापकों के अतिरिक्त प्रत्येक कक्षा से दो-दो कक्षा प्रतिनिधियों को चुना गया। तदुपरान्त पूरे सत्र में विभागीय परिषद् के तत्वावधान में अनेक आयोजन किये गये। सत्र के प्रारम्भ में स्नातकोत्तर कक्षाओं की छात्राओं हेतु एक अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें विभाग के सभी प्राध्यापक उपस्थित रहे।

21 सितम्बर 2018 को 'विश्व शांति दिवस' के अवसर पर महाविद्यालय स्तर पर "विश्व शांति के परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी के विचारों की प्रासंगिकता" विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका परिणाम निम्नवत् रहा-

प्रथम पुरस्कार- कु. सीमा कुमारी, पुत्री श्री छोटे लाल (एम.ए. द्वितीय)

द्वितीय पुरस्कार- कु. मनीषा पुत्री, श्री राजसिंह (एम.ए. द्वितीय)

तृतीय पुरस्कार- कु. राखी नागर, पुत्री श्री राजेसिंह (एम.ए. द्वितीय)

विभागीय परिषद् के तत्वावधान में ही विभाग की सभी छात्राओं हेतु एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका विषय 'भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं का योगदान' था। इस प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त करने वाली छात्रायें निम्नवत् रही-

1. प्रथम पुरस्कार- कु. सीमा रानी, पुत्री श्री छोटे लाल (एम.ए. द्वितीय)
2. द्वितीय पुरस्कार- कु. कोमल पुत्री श्री यतीन्द्र सिंह (बी.ए. तृतीय)
3. तृतीय पुरस्कार- कु. साक्षी, पुत्री श्री जितेन्द्र कुमार (बी.ए. तृतीय)
4. विशेष पुरस्कार- कु. अंजलि नागर, पुत्री श्री राजसिंह (एम.ए. द्वितीय)

दिनांक 15/11/2018 को महाविद्यालय की सभी छात्राओं हेतु विभागीय परिषद् के तत्वावधान में 'सुभाषचन्द्र बोस और आजाद हिन्द फौज' विषय पर एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता की अध्यक्षता महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. दिव्या नाथ जी द्वारा की गई। इस प्रतियोगिता के परिणाम् निम्नवत् रहे-

प्रथम पुरस्कार- कु. सोनम (बी.कॉम. द्वितीय)

द्वितीय पुरस्कार- कु. नीशू भाटी, पुत्री श्री रविन्द्र भाटी (बी.ए. द्वितीय)

तृतीय पुरस्कार- कु. काजल नागर, पुत्री श्री राजपाल सिंह नागर (बी.ए. प्रथम)

इन प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त 17 दिसम्बर, 2018 को इतिहास की सभी स्नातकोत्तर की छात्राओं हेतु ऐतिहासिक परिभ्रमण का आयोजन किया गया। इस परिभ्रमण में छात्राओं को हुमायूँ का मकबरा और बंगला साहिब गुरुद्वारे ले जाया गया तथा उपर्युक्त

स्थानों के ऐतिहासिक महत्व से परिचित कराया गया। 10 दिसम्बर, 2018 को विभाग के दो शोधरत छात्राओं का जे.आर.एफ. से एस.आर.एफ में उन्नयन हेतु वायवा सम्पन्न कराया गया। यह दो छात्र हैं-

1. श्री प्रभात कुमार (शोद्यार्थी)- डॉ. अर्चना वर्मा (शोध निर्देशिका)

2. अनुतोष कुमार (शोद्यार्थी)- डॉ. निधि रायजादा (शोध निर्देशिका)

इस अवसर पर डॉ. अनीता गोस्वामी, एसोसिऐट प्रोफेसर इतिहास, शहीद मंगलपाण्डे राजकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ ने बाह्य परीक्षक की भूमिका निभाई। 18 जनवरी 2019 को विषय की कैरियर संबंधित विभिन्न संभावनाओं हेतु विभाग में डॉ.के.के. शर्मा, एसोसिऐट प्रोफेसर इतिहास, एम.एम.पी.जी. कॉलिज, मोदीनगर के व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस विभाग की एक अत्यन्ध महत्वपूर्ण उपलब्धि रही, विभाग की एसो. प्रो. डॉ. आशा रानी के निर्देशन में श्रीमती नीलिमा को पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त करना। यह पी.एच.डी. वायवा दिनांक 11 फरवरी, 2019 को महाविद्यालय में सम्पन्न हुआ। इसी दिन छात्राओं हेतु विभागीय सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें शिक्षा शास्त्र विभाग की प्राध्यापक डॉ. सोनम शर्मा द्वारा छात्राओं को 'वैदिक काल में शिक्षा व्यवस्था' विषय पर व्याख्यान दिया गया। इस अवसर पर विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ. रेनू शुक्ला, प्रोफेसर, कन्या गुरुकुल कैम्पस, देहरादून उपस्थित रहीं।

सत्र की विभिन्न गतिविधियों में स्थान प्राप्त करने वाली सभी छात्राओं को महाविद्यालय की विभागीय परिषद् के तत्वावधान में 11/2/2019 को हुये पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित किये गये।

अर्थशास्त्र परिषद्

श्रीमती भावना यादव
परिषद् प्रभारी

छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु पाठ्येतर गतिविधियों के महत्व को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय में प्रतिवर्ष विभागीय परिषदों का गठन किया जाता है। जिनके अर्न्तगत विभिन्न सहपाठ्यक्रम गतिविधियों का आयोजन किया जाता है जिनसे छात्राओं को व्यवहारिक ज्ञान का अनुभव हो पाता है एवं छात्राओं में सामाजीकरण, समन्वय, भागीदारी, समायोजन, भाषण प्रवाह आदि विकसित करने में सहायता मिलती है। इसी ध्येय की प्राप्ति हेतु अर्थशास्त्र परिषद् का गठन सत्र 2018-19 में भी किया गया एवं विभागीय परिषद् के अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताऐं कराई गई।

सत्र 2018-19 में अर्थशास्त्र परिषद् द्वारा "मौसमी परिवर्तन का भारतीय कृषि पर प्रभाव" विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें स्थान प्राप्त छात्राऐं निम्नवत रहीं–

प्रथम स्थान-कु. मनीषा एम.ए. प्रथम वर्ष

द्वितीय स्थान -कु. साक्षी एम.ए. प्रथम वर्ष

तृतीय स्थान-कु. मनीषा बी.ए. द्वितीय वर्ष

छात्राओं को विचारों की अभिव्यक्ति करने में सक्षम बनाने हेतु एवं वर्तमान आर्थिक परिदृश्य के प्रति जागरूकता करने हेतु " विदेशी निवेश का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त छात्राऐं निम्नवत रही–

प्रथम स्थान-कु. साक्षी, एम.ए. प्रथम वर्ष

द्वितीय स्थान-कु. महिमा चौहान, एम.ए.द्वितीय वर्ष

तृतीय स्थान-कु. निधि, एम.ए. द्वितीय वर्ष

सभी स्थान प्राप्त छात्राओं को पुरस्कृत किया गया एवं उनका उत्साहवर्धन किया गया। अर्थशास्त्र विषय की स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्राओं द्वारा परिषद् के समस्त कार्यक्रमों में उत्साहपूर्ण भागीदारी की गई।

भूगोल परिषद्

डॉ. मीनाक्षी लोहनी
परिषद् प्रभारी

छात्राओं की सृजनात्मकता एवं पर्यावरण के प्रति जागरुकता के विकास के उद्देश्य से दिनांक 6 अगस्त 2018 को भूगोल विभागीय परिषद् का गठन किया गया। महाविद्यालय की समस्त छात्राओं को पर्यावरण संरक्षण और पारिस्थिकी संरक्षण के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए भूगोल परिषद् द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गए। प्रति सत्र 2018-19 में भूगोल विभागीय परिषद् के तत्वावधान में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनके परिणाम निम्नवत रहे।

पोस्टर प्रतियोगिता "save environment"

बी.ए.
प्रथम कोमल बी.ए. द्वितीय
द्वितीय योगिता बी.ए. प्रथम
तृतीय आँचल नागर बी.ए. द्वितीय

एम.ए.
प्रथम शुभांगी शर्मा
द्वितीय कोमल
तृतीय सोनम देवी

SEMINAR PRESENTATION

एम.ए. प्रथम
प्रथम आँचल
द्वितीय ज्योति नागर
तृतीय काजल नागर

एम.ए. द्वितीय
प्रथम विशाखा
द्वितीय भावना
तृतीय मोनिका

राजनीति विज्ञान परिषद्

डॉ. ममता उपाध्याय
एसो.प्रो., राजनीति विज्ञान

वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं सूचना प्रौद्योगिकी के व्यापक परिप्रेक्ष्य में सुशासन एवं नागरिकता के बदलते मापदण्डों के अनुरूप छात्राओं के व्यक्तित्व का विकास करने एवं अस्तित्व बोध के साथ उन्हें सशक्त बनाने हेतु महाविद्यालय का राजनीति विज्ञान विभाग प्रारंभ से ही प्रयत्नशील है। इन मौलिक उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए सत्र 2018-19 में राजनीति विज्ञान परिषद् का गठन किया गया प्राचार्य के संरक्षकत्व में विभाग प्रभारी डॉ. आभा सिंह, सदस्य डॉ. ममता उपाध्याय, डॉ. सीमा देवी एवं कक्षा प्रतिनिधि छात्राओं कु. गरिमा, एम.ए.-द्वितीय, कु. प्राची भाटी, एम.ए. प्रथम, कु. साक्षी, बी.ए. तृतीय, कु. कोमल, बी. ए. द्वितीय, कु. शिक्षा नागर, बी.ए. प्रथम के सौजन्य एवं सहयोग से परिषद् के द्वारा सत्रारंभ से ही अनेक गतिविधियों का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम, सितंबर माह के प्रारंभ में विभाग से दो राजदूत छात्राओं कु. कविता पाण्डेय, एम.ए. द्वितीय एवं कु. श्वेता, एम.ए. द्वितीय का चयन किया गया, जिनके द्वारा क्रमशः ग्राम सादोपुर व धूमखेड़ा में 'शिक्षा के अधिकार की स्थिति पर क्षेत्रीय अध्ययन एवं विभाग की छात्राओं का ऑनलाइन स्थानीय बी.एल.ओ. के माध्यम से मतदाता पहचान-पत्र बनवाने में मार्गदर्शन एवं सहयोग कर मतदान हेतु प्रेरित किया गया। उक्त कार्य विभाग की एसो.प्रो. डॉ. ममता उपाध्याय के निर्देशन में किया गया।

29 सितंबर, 2018 को भ्रमण के माध्यम से शिक्षण के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए डॉ. ममता उपाध्याय एवं डॉ. सीमा देवी के निर्देशन एवं सहयोग के अंतर्गत इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में चल रहे भूटान महोत्सव में भ्रमण हेतु विभाग की छात्राओं को ले जाया गया।

डॉ. आभा सिंह के निर्देशन एवं विभाग के अन्य प्राध्यापकों के योगदान से दिनांक 2 नवम्बर, 2018 को कैरियर काउंसिलिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. जय कुमार सरोहा, एसो. प्रो. एस. डी. कॉलेज, गाजियाबाद ने छात्राओं को विषय के अध्ययन के उपरांत रोजगार की व्यापक संभावनाओं से अवगत कराया।

1 नवम्बर, 2018, से विभाग में 'सामाजिक न्याय व बी. आर. अम्बेडकर' 'विषयक प्रमासिक सर्टिफिकेट कोर्स' का शुभारंभ किया गया। कोर्स की समन्वयक डॉ. ममता उपाध्याय एवं सह-समन्वयक डॉ. सीमा देवी हैं।

दिनांक 12 नवंबर को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (11 नवम्बर) के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. ममता उपाध्याय ने देश के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद के योगदान से छात्राओं को परिचित कराया। इसी दिन परिषद् द्वारा 'मानवाधिकार' विषयक निबंध प्रतियोगिता एवं आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विभाग की छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान कु. कविता पाण्डेय, एम.ए. द्वितीय पुत्री श्री अवनीश पाण्डेय, द्वितीय स्थान कु. शशी नागर, एम.ए. द्वितीय, पुत्री श्री लोकेश नागर एवं तृतीय स्थान कु. गरिमा, एम.ए. द्वितीय, पुत्री श्री हरेन्द्र सिंह ने प्राप्त किए। आशु भाषण प्रतियोगिता में कु. गरिमा प्रथम स्थान पर एवं कु. ज्योति राघव, एम. ए. प्रथम, पुत्री श्री मुकेश राघव तथा तृतीय स्थान पर कु. मोनिका शर्मा, बी.ए. प्रथम, पुत्री श्री राधेश्याम शर्मा तृतीय स्थान पर रहीं।

10 दिसम्बर, 2018 की 'विश्व मानवाधिकार दिवस' के अवसर पर विभाग के सौजन्य से महाविद्यालय स्तर पर एक शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मानव श्रृंखला में आबद्ध छात्राओं को प्राचार्य महोदया द्वारा मानवाधिकार रक्षा की शपथ ग्रहण करायी गई तथा डॉ. ममता उपाध्याय द्वारा मानवाधिकारों की जानकारी दी गई। डॉ. आभा सिंह ने कार्यक्रम के आयोजन व संचालन में पूर्ण सहयोग दिया। महाविद्यालय की सभी छात्राओं एवं प्राध्यापकों की उपस्थिति से कार्यक्रम सफल एवं सार्थक बना।

15 दिसंबर, 2018 को महिला जागरूकता की दिशा में कदम बढ़ाते हुए 'भारत में महिला अधिकारों की स्थिति संवैधानिक एवं व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य' विषय पर एक विभागीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. राजश्री चतुर्वेदी, वी.एम.एल.जी. कॉलेज गाजियाबाद, डॉ. राजीव कुमार, आर.एस.एस. कॉलेज, हापुड़ तथा डॉ. प्रतीत कुमार, राजकीय महाविद्यालय छपरौली, ने विशिष्ट वक्ताओं के रूप में विचार व्यक्त किए। छात्राओं के साथ अंतः क्रिया से संगोष्ठी सफल हुई। संगोष्ठी का आयोजन व संचालन डॉ. आभा सिंह व डॉ. ममता उपाध्याय द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. आभा सिंह की पुस्तक 'भारत नेपाल संबंध-एक राजनीतिक अध्ययन' का विमोचन प्राचार्य डॉ. दिव्या नाथ द्वारा किया गया।

उक्त गतिविधियाँ व कार्यक्रम विभाग के नियमित कार्यों-कक्षाओं का संचालन एवं आंतरिक मूल्यांकन परीक्षाओं, छात्रा सेमिनार प्रस्तुतिकरण के साथ सत्र के प्रारंभ में ही डॉ. ममता उपाध्याय द्वारा निर्मित शैक्षिक पंचांग के अनुसार आयोजित किये गए। इस वर्ष विभाग की एक विशिष्ट शैक्षणिक उपलब्धि यह रही कि विभाग की छात्रा कु. नेहा नागर ने विभाग के प्राध्यापकों द्वारा उपलब्ध कराए गए शैक्षिक वातावरण, उनके सहयोग, निर्देशन व अपनी मेधा तथा परिश्रम के बल पर प्रथम प्रयास में यू. जी सी द्वारा आयोजित 'नेट' परीक्षा उत्तीर्ण की। विभाग की एक भूतपूर्व छात्रा कु. सपना मीणा ने भी इसी वर्ष यह परीक्षा उत्तीर्ण की।

समाजशास्त्र परिषद्

डॉ. सुशीला
परिषद् प्रभारी

समाजशास्त्र मानव एवं सामाजिक जीवन का एक अध्ययन हैं। समाजशास्त्र सामाजिक विज्ञान की वह शाखा है जो सामाजिक संरचना और गतिविधियों से सम्बन्धित जानकारी को परिष्कृत करने और उनका विकास करने के लिए, अनुभवजन्य विवेचन, विवेचनात्मक विश्लेषण की विभिन्न पद्धतियों का उपयोग करता है। मानव के सामाजिक जीवन, संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन, सामाजिक इतिहास, सामाजिक विकास इत्यादि की जानकारी समाजशास्त्र विषय के अध्ययन के माध्यम से ही प्राप्त होती है। इसलिए मानव जीवन के लिए यह एक महत्वपूर्ण विषय है।

समाजशास्त्र पर आधारित विभिन्न पाठ्यक्रम देश-विदेश के शैक्षणिक संस्थानों में दशकों से पढ़ाये जा रहे है, किन्तु कु. मायावती राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्याजय, बादलपुर में समाजशास्त्र विषय स्नातक स्तर पर 1997 से तथा 2007 से स्नातकोत्तर स्तर पर इस विषय का शुभारम्भ हुआ। वर्तमान में महाविद्यालय में इस विषय में लगभग 480 छात्राएँ अध्ययनरत है। दिनांक 31/08/18 को समाजशास्त्र परिषद् का विधिवत् रूप से गठन किया गया। परिषद् का गठन प्रत्येक शैक्षणिक सत्र में किया जाता है। सत्र 2018-19 के अन्तर्गत परिषद् द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनका विवरण निम्नवत् है:-

दिनांक 01 नवम्बर, 2018 से 31 जनवरी 2019 तक महाविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित Add-on-Certificate course का आयोजन विषय "Research Methodology in Scocial Science पर किया गया जिसमें समाजशास्त्र विभाग की छात्राओं के अतिरिक्त बी.एड., एम.ए. इतिहास व बी.ए. की कुल 25 छात्राएँ पंजीकृत है।

दिनांक 11 नवम्बर, 2018 को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के अवसर पर विभाग के प्राध्यापकों एवं छात्राओं द्वारा **"राष्ट्रीय शिक्षा नीति"** पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

दिनांक 16/01/2018 को समसमायिक सामाजिक मुद्दों **महिला अधिकार एवं सुरक्षा** विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कुल 62 छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

दिनांक 18/01/2019 को पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन पर्यावरण प्रदूषण कन्या भ्रूण हत्या, मतदान मेरा अधिकार व महिला शिक्षा इत्यादि सम-सामायिक मुद्दों पर किया गया।

दिनांक 01 फरवरी, 2019 को समाजशास्त्र विषय की स्नातक व स्नातकोत्तर छात्राओं हेतु कैरियर काउंसलिंग का आयोजन "Carrer Making Through Sociology" विषय पर किया गया जिसमें विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. कमलेश भारद्वाज, एसो.प्रो. समाजशास्त्र, एस.डी.पी.जी. कॉलिज, गाजियाबाद व डॉ. अनिता मिश्रा, एसो. प्रो. समाजशास्त्र, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नोएडा ने छात्राओं को समाजशास्त्र के क्षेत्र में रोजगार के अवसरो से परिचित कराया।

दिनांक 07 फरवरी, 2019 को विभाग द्वारा "Women Right and Their Decision Making Power in contenporary Indian Society" विषय पर विभागीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. गीता चौधरी, एसो.प्रो. समाजशास्त्र, शहीद मंगल पांडे पी.जी. कॉलिज, मेरठ रही।

दिनांक 21 जनवरी, 2019 से दिनांक 25 जनवरी, 2019 तक राष्ट्रीय मतदाता जागरूकता सप्ताह के अन्तर्गत हस्ताक्षर अभियान **"वोट मेरा अधिकार"** को लेकर समाजशास्त्र विभाग द्वारा जागरूकता अभियान चलाया गया तथा इस अभियान के अन्तर्गत पोस्टर प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

समाजशास्त्र परिषद् द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं का परिणाम निम्नवत् रहा-

निबन्ध प्रतियोगिता परिणाम

प्रथम स्थान- कु. निधि मिश्रा, श्री शत्रुघ्न मिश्रा, एम.ए. द्वितीय

द्वितीय स्थान- कु. मनीषा नागर, श्री सिंह राज नगर, बी.ए. प्रथम

तृतीय स्थान- कु. कोलम रावल, श्री कुशलपाल, एम.ए. प्रथम

पोस्टर प्रतियोगिता परिणाम

प्रथम स्थान- कु. शीतल, श्री खेमचन्द, बी.ए. प्रथम

द्वितीय स्थान- कु. सोनिया, श्री रणबीर, एम.ए. द्वितीय

तृतीय स्थान- कु. मीनाक्षी भाटी, श्री ज्ञानेन्द्र, एम.ए. प्रथम

शैक्षणिक सत्र 2017-18 के अन्तर्गत एम.ए. समाजशास्त्र में सार्वाधिक अंक प्राप्त छात्रा कु. अंजु यादव पुत्री श्री धर्मवीर सिंह रही। कु. अंजु ने 2000 अंको में से कुल 1307 अंक प्राप्त कर (65.35%) समाजशास्त्र में सत्र 2017-18 में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

शिक्षाशास्त्र परिषद्

डॉ. सोनम शर्मा
प्रभारी परिषद्

शिक्षा का मूल उद्देश्य है कि शिक्षार्थी को भौतिक शिक्षा के साथ मानवीय मूल्यों का भी ज्ञान प्रदान किया जाये, जिससे वह सुसंस्कारित जीवन जीते हुए स्वयं, समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी सिद्ध हो, शिक्षा द्वारा विद्यार्थी को सम्यक पथ पर अग्रसारित करने के लिए उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास आवश्यक है। व्यक्तित्व के विकास के लिए पुस्तकीय ज्ञान के

साथ ही उसकी सृजनात्मकता एवं रचनात्मक क्षमता की अभिव्यक्ति भी आवश्यक है। इसी उद्देश्य को फलीभूत करने के लिए गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी शिक्षाशास्त्र परिषद् का गठन किया गया। इस परिषद के तत्वावधान में एक निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गयी।

इस प्रतियोगिता के अन्तर्गत निम्नलिखित छात्राओं ने स्थान प्राप्त किए–

कु. निशा राघव– बी.ए. तृतीय वर्ष– प्रथम पुरस्कार

कु. सोनम– बी.ए. द्वितीय वर्ष– द्वितीय पुरस्कार

कु. मीना शर्मा– बी.ए. प्रथम वर्ष– तृतीय पुरस्कार

कु. आशी शर्मा– बी.ए. द्वितीय वर्ष– सांत्वना

उक्त सभी छात्राओं को शिक्षाशास्त्र परिषद् की ओर से वार्षिकोत्सव के अवसर पर द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

संगीत परिषद्

डॉ. बबली अरूण
परिषद् प्रभारी

संगीत ब्रह्माण्ड में उपस्थित वह दिव्य शक्ति है, जिसके अधीन सम्पूर्ण सृष्टि जगत् की सम्पूर्ण क्रियायें पल्लवित होती है। संगीत न केवल मन को आनन्दित करता है वरन् यह भावनाओं की अभिव्यक्ति का एक सुन्दर साधन है। वर्तमान समय में युवा वर्ग बड़ी संख्या में संगीत को जीविकोपार्जन के रूप में अपना रहे हैं। संगीत साधना है। संगीत की सुन्दरता व गम्भीरता को संगीत प्रेमी ही अनुभव कर सकता है। इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2014–15 में संगीत को विषय के रूप में मान्यता प्राप्त हुई और आज यहाँ स्नातक स्तर पर अनेक छात्रायें अध्ययनत् हैं।

सत्र के प्रारम्भ में ही संगीत परिषद् के तत्त्ववाधान में एक शास्त्रीय संगीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें अनेक छात्राओं द्वारा सहभागिता की गई। इस प्रतियोगिता के परिणाम निम्नवत् रहे–

क्र. सं.	**छात्रा का नाम**	**पिता का नाम**	**स्थान**	**कक्षा**
1.	शीतल	श्री केशव चन्द	प्रथम	बी.ए.–प्रथम
2.	रीमा नागर	प्रेमचन्द नागर	द्वितीय	बी.ए.–द्वितीय
3.	हिमानी शर्मा	सुरेन्द्र शर्मा	तृतीय	बी.ए.–प्रथम

विजयी छात्राओं को पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कार वितरित किए गये। विभागीय परिषद् प्रतियोगिता के अतिरिक्त महाविद्यालय में राष्ट्रीय पर्वो 26 जनवरी, 15 अगस्त, 2 अक्टूबर व वार्षिक क्रीड़ा समारोह इत्यादि में आयोजित कार्यक्रमों में छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गई। वार्षिकोत्सव पर भी महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा अनेक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। उत्साहर्वधन स्वरूप समस्त प्रतिभागी छात्राओं को प्रशास्ति पत्र पुरस्कार वितरित किए गये।

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी संगीत विभाग के तत्त्वावधान में कैरियर कांउसलिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में राजकीय महाविद्यालय सद्दीक नगर, गाजियाबाद के संगीत विभाग के असि. प्रो., डॉ. भगत सिंह जी द्वारा संगीत के क्षेत्र में रोजगार की संभावनायें विषय पर सारगर्भित व्याख्यान दिया गया। इसके साथ ही बिना किसी वाद्य यन्त्र के इन्टरनेट के माध्यम से किस प्रकार गायन (रागों) का अभ्यास किया जा सकता है इस विषय में विस्तार से चर्चा की।

चित्रकला परिषद्

श्रीमती शालिनी तिवारी
परिषद् प्रभारी

छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु सत्र 2018-19 में दिनांक 19/09/18 को चित्रकला विभाग में चित्रकला परिषद् का सर्व सम्मति से गठन किया गया, जिसका विवरण निम्नवत् है-

संरक्षक- डॉ. दिव्या नाथ (प्राचार्या)

परिषद् प्रभारी- श्रीमती शालिनी तिवारी

अध्यक्ष- करिश्मा, बी.ए. तृतीय

उपाध्यक्ष- काजल भाटी, बी.ए. तृतीय

सचिव- मनीषा रानी, बी.ए. द्वितीय

कोषाध्यक्ष- वर्षा रानी, बी.ए. द्वितीय

छात्रा प्रतिनिधि-

1. दीपिका पाएला, बी.ए. तृतीय
2. सविता चौहान, बी.ए. द्वितीय
3. कोमल नागर, बी.ए. प्रथम

सत्र 2018-19 में चित्रकला विभाग द्वारा दिनांक 05.12.18 को चित्रकला प्रदर्शनी "अभिव्यक्ति" का आयोजन किया गया जिसमें चित्रकला विभाग की बी.ए. प्रथम, द्वितीय व तृतीय की छात्राओं ने अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति अपने चित्रों के माध्यम से दी।

परिषदीय प्रतियोगिता के अन्तर्गत चित्रकला विभाग द्वारा दिनांक 09.01.19 को "प्राकृतिक दृश्य चित्रण" प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसके परिणाम निम्नवत् हैं।

प्रथम पुरस्कार- शमा परवीन, श्री अमर मो., बी.ए. द्वितीय

द्वितीय पुरस्कार- काजल भाटी, श्री संजय भाटी, बी.ए. तृतीय

तृतीय पुरस्कार- आकांक्षा, श्री नीरज कुमार, बी.ए. द्वितीय

तृतीय पुरस्कार- सविता चौहान, श्री शिव कुमार चौहान, बी.ए. द्वितीय

दिनांक 12.02.19 को उपरोक्त सभी चयनित छात्राओं को परिषदीय पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में पुरस्कृत किया गया।

वाणिज्य परिषद्

डॉ. अरविन्द यादव
परिषद् प्रभारी

छात्राओं के समुचित विकास और व्यावसायिक ज्ञान में वृद्धि हेतु प्रति वर्ष वाणिज्य परिषद् का गठन किया जाता है। इस वर्ष भी इसी उद्देश्य के साथ दिनाँक 28/08/18 को सभी छात्राओं की उपस्थिति में वाणिज्य परिषद् का गठन किया गया। परिषद् में सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए–

संरक्षक– डॉ. दिव्या नाथ (प्राचार्या)

प्रभारी– डॉ. अरविन्द कुमार यादव

समन्वयक– डॉ. मणि अरोड़ा

उपाध्यक्ष– सोनम, बी.कॉम तृतीय वर्ष

सह–उपाध्यक्ष– निशा सिंह, बी.कॉम द्वितीय वर्ष

सचिव– काजोल गर्ग, बी.कॉम तृतीय वर्ष

कोषाध्यक्ष– डिम्पल तिवारी, बी.कॉम तृतीय वर्ष

प्रचार मंत्री– गुनगुन, बी.कॉम प्रथम वर्ष

सत्र 2018–19 में तीन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। पोस्टर प्रतियोगिता में छात्राओं ने वाणिज्य विषय में सर्वोत्तम विषय पर अपनी प्रतिभा को उभारा। प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार कु. दीपाली गोयल, बी.कॉम तृतीय वर्ष, कु. शिवानी राघव, द्वितीय पुरस्कार एवं कु. तनीषा शर्मा को तृतीय पुरस्कार दिया गया। आशुभाषण प्रतियोगिता में कु. गरिमा गोयल प्रथम, कु. शाइना द्वितीय एवं कु. भावना तृतीय स्थान पर रहीं।

वाणिज्य विषय के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से क्विज प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। क्विज प्रतियोगिता में टीम "डी" प्रथम स्थान पर रही जिसमें सोनम एवं साक्षी बी. कॉम तृतीय वर्ष, कोमल बी. कॉम द्वितीय वर्ष एवं कीर्ति बी. कॉम प्रथम वर्ष सम्मिलित थी। दीपाली एवं शिवानी बी. कॉम तृतीय वर्ष शाइना द्वितीय वर्ष एवं भावना प्रथम वर्ष ने मिलकर टीम "बी" को द्वितीय स्थान दिलाया। टीम "सी" तृतीय स्थान पर रही जिसमें राशी एवं श्वेता तृतीय वर्ष, आँचल द्वितीय वर्ष एवं दामिनी सागर प्रथम वर्ष की छात्राएँ सम्मिलित रही।

वाणिज्य संकाय के तत्वाधान में इस वर्ष अक्टूबर माह में शैक्षिक भ्रमण का भी आयोजन किया गया। जिसके माध्यम से आगरा जैसे पर्यटन स्थलों पर वाणिज्य के रोजगार की संभावनाओं के बारे में जानकारी दी गई, जिस पर आधारित एक प्रोजेक्ट भी छात्राओं से बनवाया गया।

किताबी ज्ञान को वास्तविकता से जोड़ने के लिए वाणिज्य सप्ताह का आयोजन दिसंबर माह में किया गया जिसमें वाणिज्य विषय से जुड़े विभिन्न प्रबुद्ध लोगों के माध्यम से छात्राओं का ज्ञान संवर्धन किया गया। सप्ताह के प्रथम दिन छात्राओं ने अलग–अलग विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। दूसरे दिन डॉ. विशाल असि. प्रो. वाणिज्य मां काशीराम

महाविद्यालय गाजियाबाद ने E-Commerce के बारे में व्याख्यान दिया। इसके सी.ए. मनीष जी एवं डॉ. अनुज मल्होत्रा ने Share Market एवं Mutual Fund से जुड़े विषयों पर छात्राओं को जानकारी दी। सप्ताह के अंतिम दिन डॉ. जितेन्द्र ने Online Marketing के विषय पर चर्चा की। सभी छात्राओं ने अंत में पूर्ण सप्ताह में अर्जित किए गए ज्ञान का सारांश प्रस्तुत किया एवं सभी का आभार प्रकट किया।

विज्ञान परिषद्

श्रीमती नेहा त्रिपाठी
असि. प्रो. रसायन विज्ञान

गत वर्षो की भाँति वर्ष 2018-19 में दिनांक 30/8/2018 को विज्ञान परिषद् का गठन किया गया। परिषद के विभिन्न पदों पर जिन छात्राओं का चयन किया गया उनका विवरण निम्नवत् है-

संरक्षक प्राचार्या

उपाध्यक्ष- डॉ. डी.सी. शर्मा (जन्तु विज्ञान विभाग)

श्रीमती नेहा त्रिपाठी (रसायन विज्ञान विभाग)

डॉ. प्रतिभा तोमर (वनस्पति विज्ञान विभाग)

डॉ. ऋचा (भौतिक विज्ञान विभाग)

महासचिव- MSC I कु. वैशाली शर्मा, सुपुत्री श्री उदय वीर शर्मा

सचिव- BSC III (Bio) कु. अलिश्बा, सुपुत्री मो. इरशाद अली

कोषाध्यक्ष- MSC I कु. काजल, सुपुत्री श्री चरन सिंह

BSC III (Math) कु. योगिता सिंह, सुपुत्री श्री राजकुमार सिंह

BSC III (Bio) कु. नेहा चौहान, सुपुत्री श्री भूदेव सिंह

कक्षा प्रतिनिधि- MSC I कु. ज्योति गौतम, सुपुत्री श्री सुशील कुमार गौतम

BSC III (Bio) कु. सोनम, सुपुत्री श्री कालूराम

Maths कु. आँचल, सुपुत्री श्री हरेन्द्र

BSC II (Bio)- कु. मानसी, सुपुत्री श्री परमवीर नागर

BSC II (Math)- कु. साक्षी वर्मा, सुपुत्री श्री अशोक वर्मा

BSC I (Bio)- कु. काजल, सुपुत्री श्री विजय सिंह

BSC I (Math)- कु. मेघा, सुपुत्री श्री मनोज कुमार

महाविद्यालय में विज्ञान संकाय के अन्तर्गत ITS इजीनियरिंग कॉलेज ग्रेटर-नोयडा द्वारा DST प्रायोजित दिनांक 27/9/2018 से 29/9/2018 तक (03 दिन) एक कार्याशाला का आयोजन किया गया जिसका विषय "उद्यमिता

जागरूकता कार्यक्रम" था। इसी के अर्न्तगत छात्राओं को मदर डेयरी पटपड़गंज को ओद्यौगिक भ्रमण हेतु दिनांक 14/11/2018 को ले जाया गया जिसमें छात्राओं ने मदर डेयरी की कार्यशाला को गहन जानकारी व्यवहारिक रूप में प्राप्त की। महाविद्यालय में ITS इंजीनियरिंग कॉलेज ग्रेटर नोएडा व DST के तत्वाधान में एक माह की डिजिटल मार्केटिग कार्यशाला का आयोजन दिनांक 12/11/2018 से 10/12/2018 तक कराया गया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के विज्ञान संकाय के BSC तृतीय वर्ष की 25 छात्राओं ने पंजीकरण कराया तथा डिजिटल मार्केटिंग के विभिन्न आयामो का ज्ञान प्राप्त करते हुए इस क्षेत्र में रोजगार के नये अवसर हेतु स्वयं को तैयार किया। इसी क्रम में इन छात्राओं के दिनांक 14/2/2018 को औद्योगिक भ्रमण पर सॉफ्टवेयर कम्पनी IOT पर जानकारी हेतु ले जाया गया। जिससे छात्राऐं उक्त कार्यक्रम (1 माह) के द्वारा प्राप्त प्रशिक्षण को अपने भविष्य निर्माण हेतु भलीभाँति उपयोग में ला सके।

विज्ञान संकाय में भौतिक विज्ञान विभाग परिषद् के तत्वाधान में एक लेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय था- "महिलाओं के विकास में विज्ञान का योगदान" जिसका परिणाम निम्नवत् है-

प्रथम पुरस्कार- कु. वैशाली, सुपुत्री श्री रणवीर सिंह BSC III

द्वितीय पुरस्कार- कु. रिंकी नागर, सुपुत्री श्री वीरेन्द्र सिंह BSC III

तृतीय पुरस्कार- कु. प्रिया, सुपुत्री श्री लोकेश सिंह BSC II

वनस्पति विज्ञान विभाग परिषद के तहत एक स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें निम्न तीन विषयों में से किसी एक पर छात्राओं को स्लोगन तैयार करना था। विषय या "पर्यावरण संरक्षण, डिजिटल इंडिया, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" उपरोक्त प्रतियोगिता का परिणाम निम्नवत् रहा-

प्रथम पुरस्कार- कु. संचिता चौहान, सुपुत्री श्री लोकेश चौहान BSC II (Bio)

द्वितीय पुरस्कार- कु. वैशाली, सुपुत्री श्री रणवीर सिंह BSC III (Math)

तृतीय पुरस्कार- कु. पूजा तवेर, सुपुत्री श्री सतेन्द्र तवेर BSC III (Bio)

रसायन विज्ञान विभाग परिषद् के तहत एक पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय था "स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत"। प्रतियोगिता के परिणाम् निम्नवत् रहा-

प्रथम पुरस्कार- कु. सोफर, सुपुत्री श्री रियाजुद्दीन BSC II (Bio)

द्वितीय पुरस्कार- कु. मानसी नागर, सुपुत्री श्री परमवीर नागर BSC II (Bio)

तृतीय पुरस्कार- कु. संगम नागर, सुपुत्री श्री लोकेश नागर

जन्तु विज्ञान विभाग परिषद में ओजोन डे पर एक ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसका परिणाम निम्नवत् रहा-

प्रथम पुरस्कार- कु. भावना शर्मा, सुपुत्री श्री मनोज कु. शर्मा BSC II (Bio)

द्वितीय पुरस्कार- कु. मनीषा नागर, सुपुत्री श्री राकेश नागर BSC I (Bio)

तृतीय पुरस्कार– कु. रेखा नागर, सुपुत्री श्री सतवीर नागर BSC II (Math)

13 फरवरी 2019 को विज्ञान संकाय के तहत 'विज्ञान प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. दिव्या नाथ द्वारा किया गया। प्राचार्या ने प्रदर्शनी में उपस्थित सभी मॉडलस का बारीकी से अवलोकन करते हुए छात्राओं को प्रोत्साहित किया। प्रदर्शनी में छात्राओं को दो स्तरो पर वर्गीकृत किया गया स्नातक व स्नातकोत्तर प्रदर्शनी में विभिन्न विषयों जैसे– पर्यावरण संरक्षण, ऊर्जा, संरक्षण, प्रदूषण नियन्त्रण, आदि समसामयिक विषयों पर Working o Non working मॉडल तैयार किये गये। प्रदर्शनी के परिणाम् निम्नवत् रहे।

स्नातकोत्तर स्तर–

प्रथम पुरस्कार– कु. आस्था यादव, MSC जन्तु विज्ञान

द्वितीय पुरस्कार– कु. ज्योति गौतम MSC जन्तु विज्ञान

तृतीय पुरस्कार– कु. रूपल, कु. कल्पना M.A भूगोल कु. ज्योति, कु. ब्रजेश

स्नातक स्तर

Working Model

प्रथम पुरस्कार– कु. सोनम, कु. विनीत, कु. तनु शर्मा BSC III (Bio)

कु. अलिश्बा, कु. निशा

द्वितीय पुरस्कार– कु. राशि, कु. प्रियंका, कु. प्रिया BSC II (Math)

कु. साक्षी वर्मा

तृतीय पुरस्कार– कु. स्वाति, सचिता चौहान, कु. भावना शर्मा BSC II (Bio)

Non Working Model

प्रथम पुरस्कार– कु. मेघा बैसोया, कु. पूजा तवैर, कु. पारूल BSC III (Bio)

द्वितीय पुरस्कार– कु. शिवानी सिंह, कु. मीना रानी, कु. प्रिया बैसला कु. राखी BSC II (Bio)

तृतीय पुरस्कार– कु. पायल, कु. कोयम, कु. निर्मल एवं कु. निशा BSC III (Bio)

उपरोक्त विभागीय परिषद् की प्रतियोगिता में विजेता छात्राओं को दिनांक 12/2/2019 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कृत किया गया तथा प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। विज्ञान प्रदर्शनी में स्थान प्राप्त करने वाली सभी छात्राओं को महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव समारोह में दिनांक 16/2/2019 को मुख्य अतिथि व प्राचार्या महोदया द्वारा पुरस्कृत किया गया। इसी क्रम में विज्ञान संकाय वर्ष 2017–18 में बी.आई.ओ व गणित ग्रुप में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं कु. अंकिता शर्मा व कु. अलका शर्मा को भी पुरस्कृत किया गया।

बी.एड. परिषद्

डॉ. रतन सिंह
परिषद् प्रभारी

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय का शिक्षक-शिक्षा विभाग, महाविद्यालय का नूतन एवं पुनीत आयाम है जो शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में छात्राओं को शिक्षित एवं प्रशिक्षित कर राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका को सार्थक कर रहा है।

अध्यापक शिक्षा के अन्तर्गत छात्र-छात्राओं को न केवल शिक्षण कला में निपुण बनाया जाता है बल्कि छात्राध्यापिकाओं को शिक्षा प्रक्रिया की विभिन्न विधाओं से सम्बन्धित अर्न्तदृष्टि विकसित करने योग्य भी बनाया जाता है। छात्राओं की पाठ्य सहगामी क्रियाओं मे भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु गतवर्षो की भाँति सत्र 2018-19 में प्राचार्या महोदया के संरक्षण में शिक्षक-शिक्षा परिषद् का गठन किया गया।

संरक्षक- प्राचार्या
प्रभारी- डॉ. रतन सिंह
अध्यक्ष- कु. अंजली मौर्य- बी.एड.-प्रथम
उपाध्यक्ष- अरूणा चौधरी-बी. एड.-द्वितीय
सचिव- कु. सपना-बी.एड.-प्रथम
छात्र प्रतिनिधि-1. कु. करिश्मा शर्मा-बी.एड. द्वितीय वर्ष
2. कु. श्वेता त्रिपाठी- बी.एड. प्रथम वर्ष
3. कु. भारती - बी.एड. प्रथम वर्ष

सत्र 2018-19 में विभागीय परिषद के अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया, जिनके परिणाम निम्नवत् है-

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

प्रथम स्थान- कु. संजीला- बी.एड. प्रथम वर्ष
द्वितीय स्थान- कु. पायल- बी.एड. प्रथम वर्ष
तृतीय स्थान- कु. स्वाति तोमर- बी.एड. प्रथम वर्ष

उपलब्धि परीक्षण प्रतियोगिता

प्रथम स्थान- कु. नेहा-बी.एड. द्वितीय वर्ष
द्वितीय स्थान- कु. प्रीति सिंह- बी.एड. द्वितीय वर्ष
द्वितीय स्थान- कु. सोनम सैनी- बी.एड. द्वितीय वर्ष
तृतीय स्थान- कु. मधु कुमारी- बी.एड. द्वितीय वर्ष

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

प्रथम स्थान- श्वेता त्रिपाठी- बी.एड. प्रथम वर्ष
द्वितीय स्थान- शीतल चौधरी- बी.एड. प्रथम वर्ष
तृतीय स्थान- महविश- बी.एड. प्रथम वर्ष

राष्ट्रीय सेवा योजना

(प्रथम इकाई)

श्रीमती शिल्पी
कार्यक्रम अधिकारी

राष्ट्रीय सेवा योजना, भारत सरकार की युवा एवं खेल मंत्रालय द्वारा संचालित एक केन्द्रीय योजना है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य युवा छात्राओं में समाज सेवा एवं सामुदायिक सेवा का भाव उत्पन्न करना है। राष्ट्रीय सेवा योजना की वैचारिक उन्मुखता महात्मा गाँधी के आर्दशों का प्रतीक है। बुनियादी ढांचे के विकास हेतु स्वच्छ और हरित भारत के निर्माण के लिए "स्वच्छ भारत मिशन" एवं कौशल भारत की शुरूआत की गई है। इस कार्यक्रम का मुख्य है- Not me but you जिसका अर्थ स्वयं से पहले समुदाय की सेवा करना है अर्थात् बिना किसी स्वार्थ से दूसरों की सहायता करना एवं निस्वार्थ समाजसेवा है।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए नियमित एवं विशेष शिविर की गतिविधियाँ संचालित की जाती है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत, प्रत्येक स्वयंसेवी छात्रा को सामुदायिक सेवा के लिए दो वर्षों में 240 घंटे कार्य करना होता है। प्रत्येक स्वयंसेविका को प्रत्येक वर्ष एक बार विशेष शिविर में सहभागिता करनी होती है।

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की प्रथम इकाई इन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु निरंतर कार्यरत है। महाविद्यालय में कार्यरत इकाई की मुख्य गतिविधियाँ अधिकृत क्षेत्र में, शिक्षा और साक्षरता, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण एवं पोषण, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक बुराइयों के खिलाफ अभियान, डिजिटल भारत, कौशल भारत, योग इत्यादि कार्यक्रमों के विषय में ग्रामवासियों को जागरूक करना है।

इन्हीं आधार बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय सेवा योजना की प्रथम इकाई अधिकृत क्षेत्र में कार्यरत है।

दिनांक 21.06.18 को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में योग दिवस आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में श्री महेश भाटी एवं डॉ. सत्यंन्त कुमार ने योग के विभिन्न आसनों एवं जीवन में योग के महत्व पर प्रकाश डाला। माननीय प्रधानमंत्री की योजना "स्वच्छ भारत एवं स्वस्थ भारत" को सफल एवं सार्थक बनाने हेतु दिनांक 1.08.18 से 15.08.18 तक, 15.09.18 से 02.10.18 एवं 01.12.18 से 08.01.19 तक विभिन्न स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। दिनांक 15.08.18 को महाविद्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें महाविद्यालय प्रांगण एवं आसपास के क्षेत्रों में साफ-सफाई कार्यक्रम भी किया गया। साथ ही, लगभग 150 वृक्षों का रोपण किया गया।

दिनांक 01.12.18 को एडस दिवस के उपलक्ष्य में "रक्तदान शिविर" का आयोजन भगवान बुद्ध चैरिटेबल ब्लड बैंक के सौजन्य से किया गया। इस अवसर पर स्वयं सेवी छात्राओं, शिक्षकों एवं अभिभावकों ने बड़ी मात्रा में स्वेच्छा से रक्तदान किया। दिनांक 12.01.19 को "युवा दिवस" के उपलक्ष्य में पोस्टर प्रतियोगिता एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

दिनांक 16.01.19, 19.01.19, 28.01.19 एवं 18.02.19 को राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत एकदिवसीय शिविरों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में प्रथम सत्र में स्वयं सेवी छात्राओं ने अधिगृहीत ग्राम डेरी मच्छा,

महाविद्यालय, प्रांगण एवं आस पास के क्षेत्रों में श्रमदान दिया। द्वितीय सत्र में विषय-विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न सामाजिक विषयों पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

दिनांक 29.01.19 से 04.02.19 तक सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन ग्राम डेरी मच्छा में किया गया। शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि, आदरणीय प्राचार्या, डॉ. दिव्या नाथ के कर-कमलों द्वारा किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना की प्रथम यूनिट ने अधिकृत क्षेत्र डेरी मच्छा में "स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत" के लक्ष्य को सार्थक करने की भरपूर कोशिश की। इसी लक्ष्य को केन्द्रित करते हुए सात दिवसीय योजना तैयार कर, उसका क्रियान्वयन किया गया।

दिनांक 29.01.19 को शिविर के उद्घाटन के उपरान्त प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा "परीक्षा पर चर्चा" स्वयं सेवी छात्राओं को दिखाया गया। द्वितीय सत्र में पूर्व कार्यक्रम अधिकारी डॉ. दीप्ति वाजपेयी द्वारा "समाज सेवा के विभिन्न आयाम" पर व्याख्यान आयोजित किया गया। दिवस के अन्त में कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती शिल्पी द्वारा विशेष शिविर में "अनुशासन एवं कार्ययोजना" के बारे में छात्राओं को विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई गयी।

दिनांक 30.01.19 को प्रथम इकाई द्वारा ग्राम डेरी मच्छा में प्रथम सत्र में शिविरार्थियों द्वारा व्यापक स्तर पर श्रमदान कार्यक्रम चलाया गया, जिसके अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालय, डेरी मच्छा एवं मंदिर की साफ सफाई के साथ-साथ गाँव के विशिष्ट स्थानों में स्वच्छता अभियान चलाया गया। द्वितीय सत्र में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, बादलपुर से डॉ. प्रीति एवं डॉ. साइदा हसन ने समस्त स्वयं सेवी छात्रों को पोषण एवं पौष्टिकता के समस्त आयामों सहित किशोरावस्था की समस्याओं एवं समाधान विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया। तृतीय सत्र में शिविरार्थियों द्वारा अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी वस्तुओं का निर्माण प्रतियोगिता आयोजित की गई।

दिनांक 31.01.19 को प्रथम सत्र में ग्राम डेरी मच्छा में "पौष्टिक भोजन अनिवार्यता, आवश्यकता एवं कुपोषण अभिशाप" शीर्षक पर मुक्त-परिचर्चा आयोजित की गई जहाँ शिविरार्थी द्वारा चर्चा विधि से ग्रामीण महिलाओं को स्वास्थ्य एवं भोजन के परस्पर सम्बन्धों से अवगत कराया गया। द्वितीय सत्र में प्राचार्या, डॉ. दिव्या नाथ एवं अन्य प्राध्यापकगण द्वारा डेरी मच्छा ग्राम के वृक्षारोपण कार्य सम्पन्न कराया गया। इसके उपरान्त डॉ. दिनेश चन्द शर्मा, एसो. प्रो. जन्तु विज्ञान, द्वारा "अंधविश्वास एवं विज्ञान" विषय पर विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई गई। शिविर के तृतीय सत्र में "लोक नृत्य" प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 01.02.19 को प्रथम सत्र में दिव्य दर्शन योग संस्थान, बादलपुर के योगगुरु स्वामी श्री योगीराज करन देव द्वारा शिविराथियों को महर्षि पंतजलि के योग सिद्धान्त एवं योग सूत्र का सैद्धान्तिक ज्ञान दिया, साथ ही छात्र जीवन में शैक्षिक उपलब्धि की वृद्धि हेतु योगिक क्रियाओं के महत्व को समझाया गया। द्वितीय सत्र में श्री योगी करन देव द्वारा यौगिक आसनों एवं प्राणायाम का प्रस्तुतिकरण किया गया। इसी सत्र में बादलपुर के एस.एच.ओ. श्री नागेश्वर द्वारा "महिला सुरक्षा एवं कानून" पर विस्तृत व्याख्यान आयोजित किया गया। साथ ही डॉ. अनीता मिश्रा एवं डॉ. कमलेश जी.डी.सी नोयडा द्वारा छात्राओं के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ दी गई। तृतीय सत्र के पोस्टर एवं कूड़ेदान निर्माण प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई।

दिनांक 02.02.19 को प्रथम सत्र में ग्राम डेरी मच्छा में ग्रामीण डेरी मच्छा में स्वास्थ्य सम्बन्धित जागरूकता रैली निकाली गई, जहाँ ग्रामीण के सहयोग और उद्घोष ने रैली को सार्थक बना दिया। द्वितीय सत्र में अंबुजा सीमेन्ट फाउन्डेशन के सौजन्य से स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर लगाया गया, जहाँ डॉ. मोहसिन के नेतृत्व में ग्रामीणों को चिकित्सीय निर्देशन एवं उपचार प्रदान किया गया, साथ ही मुफ्त दवाईयाँ भी बाँटी गई। इसी सत्र में खण्ड शिक्षा

अधिकारी, जेवर श्री सुनील दन्त मुद्गल ने उत्तर प्रदेश में बेसिक शिक्षा में अवसर, उपलब्धियाँ एवं सरकारी योजनाओं से स्वयं सेवी छात्राओं को अवगत कराया। तृतीय सत्र में डॉ. शिवानी वर्मा द्वारा "राजस्थानी कलाबंधेज एवं ब्लाक प्रिटिंग का प्रशिक्षण दिया गया। इस सत्र के द्वितीय चरण में "अनुपयोगी वस्त्रों द्वारा थैले बनाने की प्रतियोगिता आयोजित की गई।

दिनांक 03.02.19, ग्राम डेरी मच्छा में शिविर के प्रथम सत्र में मेट्रो अस्पताल के चर्म रोग विशेषज्ञ डॉ. ए. के माथुर द्वारा चिकित्सा शिविर लगाया गया। इस शिविर में लगभग 70 मरीजों को चर्म रोग सम्बन्धित उपचारात्मक परामर्श प्रदान किया गया। द्वितीय सत्र में डेरी मच्छा में स्नेह-छाँव फाउन्डेशन के संस्थापक श्री प्रकाश सिंह द्वारा "सामुदायिक विकास में गैर सरकारी संस्थान की भूमिका शीर्षक पर अपने तथ्यात्मक विचार रखे। शिविर के तृतीय सत्र में डॉ. बलराम सिंह एवं श्रीमती विद्या सिंह द्वारा "शिक्षा एवम् समाज" पर अपने विचार, स्वयं सेवी छात्राओं के सम्मुख रखे। समापन सत्र में सभी शिविरार्थियों को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान के अन्तर्गत आठ नए महाविद्यालय के लोकार्पण का प्रसारण दिखाया गया।

दिनांक 04.02.19 को ग्राम डेरी मच्छा में "महिला उद्यमिता एवं स्वरोजगार" सम्बन्धित परिचर्चा की गई। द्वितीय सत्र में कु. मायावती राजकीय महिला स्ना. महावि. बादलपुर की प्राचार्य की अध्यक्षता एवं मुख्य अतिथि श्री आनन्द कुमार सिंह, जिला समाज कल्याण अधिकारी, गौतम बुद्ध नगर द्वारा विशेष शिविर का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना के विभिन्न कायक्रमों में राष्ट्रीय सेवा योजना समिति एवं प्रेस समिति डॉ. अर्चना सिंह डॉ. दीप्ति वाजपेयी, डॉ. मिन्तु, डॉ. विनीता सिंह, श्रीमती माधुरी पाल एवं डॉ. अरविन्द सिंह एवं डॉ. संजीव कुमार का सहयोग सराहनीय रहा।

राष्ट्रीय सेवा योजना

(द्वितीय इकाई)

श्रीमती नेहा त्रिपाठी
कार्यक्रम अधिकारी

राष्ट्रीय सेवा योजना देश सेवा एवं समाज सेवा की भावना को प्रेरित करने वाला एक ऐसा कार्यक्रम है, जो व्यक्ति को व्यक्तिगत सुख से पहले दूसरों के कल्याण करने के लिए तैयार करता है। इसका लोगो नॉट मी बट यू भी इसकी इसी भावना को प्रदर्शित करता है।

कुमारी मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना की दो इकाइयाँ संचालित हैं जिनके अंतर्गत 100-100 स्वयं सेवक 2 वर्ष की अवधि में 240 घंटे का सामुदायिक कार्य करना सुनिश्चित करते हैं। महाविद्यालय में द्वितीय इकाई वर्ष 2017-18 में प्रारंभ हुई। तथा इस वर्ष 2018-19 में छात्राओं ने 120 घंटे के सामुदायिक कार्य के अंतर्गत विभिन्न प्रकार से समाज सेवा करने का प्रयास किया यथा मतदाता जागरूकता, स्वच्छ भारत, अंधविश्वास निवारण, सर्व शिक्षा अभियान, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, जच्चा-बच्चा आहार एवं पोषण, वृक्षारोपण इत्यादि के संबंध में छात्राओं द्वारा वृहद स्तरीय प्रयास किए गए।

इस सत्र में द्वितीय इकाई के अंतर्गत 4 एक दिवसीय शिविर एवं एक विशेष शिविर आयोजित किया गया। विशेष

शिविर का आयोजन दिनांक 29 जनवरी, 19 से 4 फरवरी, 19 तक किया गया। शिविर में समस्त 50 स्वयंसेवी छात्राएं उपस्थित रही एवं उन्होंने समस्त गतिविधियों को सुचारू ढंग से पूर्ण किया।

विशेष शिविर दिनांक 29 जनवरी 2019 को ग्राम साधोपुर के प्राथमिक विद्यालय से प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षा एवं मुख्य अतिथि प्राचार्य डॉ. दिव्या नाथ रही। प्रथम दिवस सर्वप्रथम सर्वधर्म प्रार्थना के साथ मुख्य अतिथि द्वारा फीता काटकर एवं दीप प्रज्वलन कर शिविर का उद्घाटन किया गया तथा छात्राओं द्वारा सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात श्रीमती शिल्पी द्वारा शिविर की रूपरेखा का प्रस्तुतीकरण किया गया। प्राचार्य महोदया द्वारा अपने उद्बोधन में शिविरार्थियों को समाज सेवा के प्रति प्रेरित करते हुए सात दिवसीय शिविर हेतु शुभकामनाएं दी गई। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम अधिकारी नेहा त्रिपाठी द्वारा किया गया।

द्वितीय सत्र में कार्यक्रम अधिकारी द्वारा शिविरार्थियों को 7 दिन तक चलने वाले विशेष शिविर के आचार संहिता परिचित कराया गया तथा कार्यक्रम सलाहकार डॉ. दीप्ति वाजपेयी द्वारा छात्राओं को समाज सेवा के विभिन्न आयाम पर संक्षिप्त व्याख्यान दिया गया। तत्पश्चात छात्राओं ने अधिकृत ग्राम सादोपुर का सर्वेक्षण कार्य किया एवं यहां की समस्याओं से अवगत होने का प्रयास किया। छात्राओं द्वारा पाया गया कि यहाँ की शिक्षा का स्तर बेहतर है जबकि कुछ अन्य समस्याएं संज्ञान में ली गई जैसे कि लोगों में मतदान के प्रति जागरूकता का अभाव है। कूड़े का निस्तारण की समुचित व्यवस्था नहीं है, साथ ही बिजली की आपूर्ति में भी थोड़ी बाधा है। छात्राओं द्वारा लोगों को इसी क्रम में मतदान करने हेतु प्रेरित करने एवं उनकी संबंधित समस्याओं का निराकरण करने का प्रयास किया गया।

शिविर में प्रत्येक दिवस को तीन सत्रों में बांटा गया। इसी क्रम में द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में योग वेदांत सेवा समिति गाजियाबाद से आयी श्रीमती रीना ने शिविरार्थियों को भारतीय मूल्यों एवं संस्कृति के महत्व के विषय में व्याख्यान देते हुए इसे अक्षुण्ण रखने का आह्वान किया। तत्पश्चात शिविरार्थियों ने ग्राम सादोपुर में वृहद् स्तरीय स्वच्छता अभियान चला कर अपने ग्राम, घर एवं आस पास के क्षेत्र को साफ रखने हेतु ग्रामवासियों को प्रेरित करने का प्रयास किया।

द्वितीय सत्र में सिंडिकेट बैंक, बादलपुर, की शाखा मैनेजर श्रीमती रीना सिंह द्वारा छात्राओं को उनके लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं एवं सुविधाओं के विषय में जानकारी प्रदान की गई। साथ ही महाविद्यालय के शिक्षा विभाग की डॉ. सोनम शर्मा द्वारा शिविरार्थियों को व्यवसाय के विभिन्न अवसरों के विषय में जानकारी प्रदान की गयी। उक्त दिवस के तृतीय सत्र में एक लोक नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें शिविरार्थियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

शिविर के तृतीय दिवस पर महाविद्यालय के गृह विज्ञान विभाग की प्रभारी डॉ. शिवानी वर्मा द्वारा शिविरार्थियों में उद्यमिता जागरूकता हेतु ब्लॉक प्रिंटिंग एवं राजस्थानी कला बंधेज का प्रशिक्षण दिया गया, साथ ही सामाजिक कार्यकर्ता श्री जगवीर नम्बरदार द्वारा राष्ट्र सेवा एवं समाज सेवा की भावना को सभी में विकसित करने पर जोर दिया गया एवं मौजीराम नागर ने महिला सुरक्षा एक चुनौती विषय पर व्याख्यान दिया।

द्वितीय सत्र में एस आर एफ फाउंडेशन के कोऑर्डिनेटर मोहम्मद अकरम सिद्धकी द्वारा प्राथमिक विद्यालयों के उत्थान हेतु प्रयास की आवश्यकता तथा तरीकों पर प्रकाश डाला गया। तृतीय सत्र में तख्ती/प्लाकार्ड प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छात्राओं द्वारा मतदाता जागरूकता एवं स्वच्छ भारत विषयों पर जोर देते हुए प्रेरणास्पद तख्तियों का निर्माण किया गया। तृतीय दिवस पर ही शिविरार्थियों द्वारा स्वेच्छा से विभिन्न सामग्री यथा मोजे, कॉपी, बिस्कुट, पेंसिल, रबड़, रेवड़ी इत्यादि लाकर प्राथमिक विद्यालय के बच्चों में बांटकर दान उत्सव कार्यक्रम मनाया गया

एवं निस्वार्थ समर्पण की भावना से मिलने वाले सुख की अनुभूति की गई।

शिविर के चतुर्थ दिवस पर दिव्य दर्शन योग सेवा संस्थान के संयोजक योग गुरु करण देव द्वारा छात्राओं के लिए योग शिविर का आयोजन कर विभिन्न आसनों के विषय में जानकारी प्रदान की गई। द्वितीय सत्र में राष्ट्रीय सेवा योजना सलाहकार डॉ. अर्चना सिंह द्वारा छात्रों को समाज सेवा के प्रति उन्मुख करने का सबल प्रयास किया गया एवं इससे संबंधित अपने अनुभव बांटते हुए समाज सेवा से प्राप्त होने वाली सुखद अनुभूति के विषय में छात्राओं को बताया गया, साथ ही हिंदी विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. मिंतू द्वारा महिलाओं की स्थिति पर व्याख्यान देते हुए शिक्षा को ही महिलाओं के उत्थान का एकमात्र साधन बताया गया एवं ग्रामीण महिलाओं में शिक्षा के महत्त्व एवं शिक्षित गृहणी एवं सुसंस्कृत परिवार के संबंधों पर प्रकाश डाला गया। तृतीय सत्र में छात्राओं के मध्य लोकगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छात्राओं द्वारा मनमोहक प्रस्तुति कर ग्रामवासियों एवं पड़ोसी महिलाओं का को बरबस ही शिविर की ओर खींच लिया।

शिविर के पंचम दिवस पर छात्राओं द्वारा मतदाता जागरूकता रैली निकाली गई तथा नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया। साथ ही महाविद्यालय की प्राध्यापिका डॉ. रमाकांति द्वारा छात्राओं को विभिन्न योगासनों का अभ्यास करा कर स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन के निवास करने के विषय में जानकारी प्रदान की गयी उपरोक्त योग शिविर में महाविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग के प्रभारी डॉ. धीरज द्वारा जल नीति एवं सूतनीति का प्रदर्शन कर शरीर एवं मन की स्वच्छता पर जोर दिया गया। तदुपरांत महाविद्यालय के हिंदी विभाग प्रभारी डॉ. रश्मि द्वारा छात्राओं को सकारात्मक सोच का महत्व बताया गया एवं डॉ. डी. सी. शर्मा, प्रभारी विज्ञान संकाय द्वारा अंत में छात्राओं का उत्साहवर्धन किया गया। द्वितीय सत्र में जेवर के बी. ई. ओ. श्री सुनील दत्त मुद्गल द्वारा भारत में शिक्षा की स्थिति पर व्याख्यान दिया गया साथ ही डॉ रूपेश वर्मा एडवोकेट द्वारा महिला सुरक्षा संबंधी कानूनों पर परिचर्चा की गई। इसी सत्र में कवि श्री विकास द्वारा कविता पाठ किया गया एवं किसान सभा के महासचिव डॉक्टर हरेंद्र खारी द्वारा व्याख्यान दिया गया। तृतीय सत्र में ही लघु नाटिका प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

शिविर के छठे दिवस पर छात्राओं ने विद्यालय परिसर एवं सामुदायिक केंद्रों पर साफ सफाई एवं पौधारोपण कर अपने ग्राम वासियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास किया साथ ही ग्राम डेरी मच्छा के प्राथमिक विद्यालय में स्नेह छांव फाउंडेशन के सौजन्य से त्वचा रोग विशेषज्ञ डॉ. एम. के. राव एवं ए.के. माथुर द्वारा ग्रामीण महिलाओं एवं छात्राओं में त्वचा रोगों की निशुल्क जांच कर उपचार बताया गया तथा स्वास्थ्य शिविर लगाया गया साथ ही इसी फाउंडेशन के श्री प्रकाश द्वारा छात्राओं को समाज में वृद्ध पिछड़े एवं त्यक्त लोगों की मदद करने का आह्वान किया गया। साथ ही डॉ. बलराम एवं डॉक्टर विद्या सिंह द्वारा अध्यापन एवं प्रशासन से संबंधित विभिन्न कैरियर एवं उनकी तैयारी के तरीकों पर प्रकाश डाला गया। द्वितीय सत्र में थाना बादलपुर से आए एस. एस. आई. श्री राजवीर सिंह द्वारा महिला सुरक्षा में पुलिस की भूमिका पर प्रकाश डाला गया। साथ ही भारत सरकार के ऐप 112 के विषय में जानकारी प्रदान की गई। तृतीय सत्र में हैंडीक्राफ्ट प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें छात्राओं द्वारा कच्ची मिट्टी से मूर्तियां, कागज की लुगदी के विभिन्न समान तथा इको फ्रेंडली बैग इत्यादि तैयार किए गए।

शिविर के अंतिम दिवस पर प्रथम सत्र में छात्राओं को स्वरोजगार प्रारंभ हेतु प्रेरित करते हुए विषय में जानकारी प्रदान की गई। द्वितीय सत्र में पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि श्री आनंद कुमार सिंह, समाज कल्याण अधिकारी गौतम बुद्ध नगर रहे। तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. दिव्या नाथ द्वारा की गई। मुख्य अतिथि द्वारा छात्राओं में आत्मबल की आवश्यकता पर जोर दिया गया एवं समाज कल्याण से

संबंधित अग्रणी सेवाओं के विषय में जानकारी दी गई। प्राचार्य द्वारा अग्रणी देशों के नागरिकों का उदाहरण देते हुए स्वच्छ भारत की परिकल्पना को छात्राओं द्वारा अपने जीवन में उतारने एवं अपनाने पर जोर दिया गया। प्राचार्य ने अपने उद्बोधन में कहा की दृढ़ इच्छा शक्ति एवं अनुशासन से हम अपने साथ साथ अपने समाज, गांव, शहर एवं देश का भी भविष्य सुधार सकते हैं एवं एक सुंदर एवं सबल देश का निर्माण कर सकते हैं।

तदुपरांत प्राचार्य एवं मुख्य अतिथि द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी छात्राओं को पुरस्कृत किया गया तदुपरांत कार्यक्रम अधिकारी द्वारा शिविर की आख्या का वाचन किया गया एवं श्रीमती शिल्पी द्वारा कार्यक्रम-का संचालन किया गया। उपरोक्त कार्यक्रम में शिविरार्थियों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ मतदाता जागरूकता संबंधी लघु नाटिका प्रस्तुत की गई एवं सभी द्वारा निश्चित रूप से वोट डालने की अपील की गई, साथ ही शिविरार्थियों द्वारा अपने शिविर के अपने अनुभव बांटे गए। अंत में प्राचार्य द्वारा सभी शिविरार्थियों को आशीर्वचन देकर उनके सुंदर भविष्य की कामना की गई।

राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर के संचालन में विश्वविद्यालय प्रशासन ग्राम सादोपुर के निवासियों, प्राथमिक विद्यालय के प्राचार्य श्री जगवीर शर्मा एवं संयोजक श्री भूपेंद्र नागर सहित समस्त प्रशासन का विशेष सहयोग रहा।

राष्ट्रीय सेवा योजना की सम्पूर्ण समिति डॉ. अर्चना सिंह, डॉ. दीप्ति वाजपेयी, डॉ. अरविन्द यादव, डॉ. मिंतू एवं डॉ. सोनम शर्मा सहित प्रथम इकाई की कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती शिल्पी ने शिविर संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की जिससे समस्त कार्यक्रम सुचारू रूप से संपन्न हो सके। महाविद्यालय की प्राचार्या ने डॉ. दिव्या नाथ के कुशल निर्देशन एवं मार्गदर्शन एवं तत्परता से समस्याओं के समाधान करने तथा महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक गण एवं कर्मचारी वर्ग के उल्लेखनीय सहयोग से यह शिविर अपने उद्देश्यों की पूर्ति रूप से सफल रहा।

रेंजर्स

डॉ. सुशीला
प्रभारी रेंजर

महाविद्यालय में 24 अक्टूबर, 2018 से 29 अक्टूबर, 2018 तक महाविद्यालय की समस्त संकाय की छात्राओं (बी. ए., बी.एस.सी., बी.कॉम, एम.ए. व बी.एड.) हेतु रेंजर अहिल्याबाई यूनिट ने महिला प्रकोष्ठ और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के संयुक्त तत्वावधान में नि:शुल्क साप्ताहिक आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। सम्पूर्ण शिविर महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. दिव्या नाथ जी के संरक्षण एवं रेंजर प्रभारी डॉ. सुशीला के निर्देशन में सफल पूर्वक सम्पन्न हुआ। उक्त शिविर में महिला प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ. अर्चना सिंह व सहप्रभारी डॉ. दीप्ति वाजपेयी एवं रेंजर यूनिट की सदस्या डॉ. ऋचा तथा श्रीमती माधुरी पाल ने अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया। आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर के अन्तर्गत अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् मेरठ की ओर से "सशक्त नारी सशक्त भारत" अभियान के तहत छात्राओं को आत्मरक्षा गुर सिखाये गये।

नवम्बर माह के अन्तर्गत दिनांक 20 नवम्बर, 2018 से 22 नवम्बर, 2018 तक महाविद्यालय प्रागण में त्रिदिवसीय रेंजर मूल्यांकन शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. दिव्या नाथ जी के कर कमलों के माध्यम से हुआ। प्रशिक्षण शिविर के अन्तर्गत रेंजर्स को गाठे, बंधन पुल निर्माण प्राथमिक चिकित्सा

गैजेट्स व तम्बू निर्माण संबधी प्रशिक्षण रेंजर प्रभारी डॉ. सुशीला व डी.ओ.सी. भारत स्काउट एवं गाइड जिला गौतम बुद्ध नगर सुश्री शिफाली गौतम द्वारा प्रदान किया गया।

शिविर के अन्तर्गत समसामयिक सामाजिक मुद्दो जैसे कन्या भ्रूण हत्या, पर्यावरण संरक्षण एवं महिला सशक्तीकरण इत्यादि पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

रेंजर्स से हस्तशिल्प कला कौशल को बढ़ावा देने व उनके इस हुनर को परखने हेतु प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें छात्राओं ने घरेलू अनुपयोगी वस्तुओं को पुनः प्रयोग में लाकर अनूठी प्रतिभा का परिचय दिया।

पर्यावरण संरक्षण अभियान को बढ़ावा देने और महाविद्यालय प्रांगण में इसे आगे बढ़ाते हुए इको-रेस्टोरेशन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा समसामयिक सामाजिक मुद्दो पर एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन भी प्रशिक्षण शिविर के अन्तर्गत किया गया।

छात्राओं की अभिनय कला को परखने और निखारने हेतु रेंजर्स छात्राओं ने शिविर के अन्तर्गत भारतीय महापुरूषों एवं वीरांगनाओं पर अपनी अभिनय कला का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया।

प्रशिक्षण शिविर के अन्तर्गत रेंजर्स ने पृथक-पृथक राज्यों का प्रतिनिधित्व करते हुए तम्बू निर्माण प्रतियोगिता में शिविर के दौरान गाठे एवं बंधन संबधी प्रशिक्षण को उजागर किया।

प्रशिक्षण शिविर के समापन के अवसर पर कु. मायावती राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय की पूर्व प्राचार्या डॉ. ज्योत्स्ना गर्ग, एवं डॉ. करूणा सिंह जी ने समापन सत्र की अध्यक्षता की और कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि डॉ. मोनिका सिंह, प्राचार्या चौधरी चरण सिंह राजकीय महाविद्यालय, छपरौली बागपत एवं डॉ. अनीता रानी राठौर प्राचार्या राजकीय महाविद्यालय गभाना, अलीगढ़ (उ.प्र.) रही। शिविर के अन्तर्गत आयोजित समस्त प्रतियोगिताओ में प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली रेंजर्स को अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया तथा सत्र 2018-2019 की सर्वश्रेष्ठ रेंजर का खिताब कु. आरती, बी.ए. तृतीय वर्ष ने लगातार तीसरी बार अपने नाम किया। सम्पूर्ण प्रशिक्षण शिविर महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. दिव्या नाथ जी के संरक्षण एवं रेंजर प्रभारी डॉ. सुशीला के निर्देशन में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। शिविर के सफलता पूर्वक संचालन में रेंजर यूनिट की सहप्रभारी सुश्री भावना यादव एवं सदस्य डॉ. ऋचा तथा श्रीमती माधुरी पाल ने अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया।

दिनांक 25 जनवरी, 2019 को समाजशास्त्र व रेंजर यूनिट के संयुक्त तत्वाधान में राष्ट्रीय मतदाता जागरूकता सप्ताह का आयोजन दिनांक 21 जनवरी, 2019 से 26 जनवरी, 2019 तक आयोजित किया गया।

NCC ANNUAL REPORT

Dr. Vineeta Singh
NCC Care Taker

Dr. Meenakshi Lohani
Associate NCC Officer

It is a fact that for all round development of personalities, a formal classroom education is not enough. NCC is an organization, which fulfills this void in our education structure. The N.C.C. provides a pool of disciplined and trained human resource that could be of service to the country in the event of any emergency like war and natural disaster. The motto of N.C.C. is “UNITY &

DISCIPLINE".

The aim of NCC is to develop qualities of character, courage, discipline and leadership and to inculcate the spirit of National Integration among the youth. Best of all, it teaches self confidence and patriotism. These two weapons are greatest assets. These two assets in the youth can see India achieve the zenith of glory. If a cadet is determined she can change the mind of people and heal the hearts of the society. NCC brings about positive changes in a cadets personality.

The role of NCC is of immense value in this modern society. The NCC training provides many important facets of learning and improves quality of life and personality. With these aims in mind and idea of all round development of girls of Km Mayawati Govt Girls P.C. College, Badalpur, is running a coy of 53 cadets.

In August the registration/enrollment process started with tree plantation symbolizing that the NCC will flourish with the floura and fauna of college. The unflinching will, determination, untiring efforts and hard work by the cadets. Several activities like slogan and paining competition, Swatchta Abhiyaan, tree plantation, Anti - Plastic ralley, Card making competition, Blood Donation Camp, AIDS awareness camp were organized in the college.

In the session 2017-18 :22 Cadets passed the 'C' Certificate Examination. This year 18 Cadets appeared in 'C' and 6 Cadets in 'B' Certificate Examination. Chief Ministers Scholarship was awarded to 02 cadets .

NCC builds up physical, mental and moral sinews of Cadets and open to them colorful vistas of life. Cadets of our college attended various camps and got certificate of excellence and medals in various events. Some of the camps were

- yoga day camp in June 2018
- CATC 129 16-25 Aug 2018 @NOIDA
- CATC 130 05-14 Sep 2018@ DASNA
- CATC131/ PRE IGC CAMP 19-28 Sep2018@ DASNA
- EBSBII- SPECIAL NIC, 1-12 Jan 2019@ Tezpur Assam
- NCC social service activity by cadets @ Morta Village Ghaziabad on 7th March 2019

We welcome all the student of K.M.G.G.P.G.College Badalpur to get enrolled in NCC and explore the untouched aspects of life with unity and discipline.

महिला प्रकोष्ठ

डॉ. अर्चना सिंह
प्रभारी

भारतीय समाज में उन्नति और प्रगति के साथ महिलाओं को पारिवारिक आर्थिक स्थिति के उत्थान में भागीदारी का अवसर मिलने लगा है। देखा जाये तो दुनिया की आधी आबादी घर की चार दीवारी से लेकर राजनीति तक का सफर तय कर रही है। महिलाएँ घर में व कार्यक्षेत्र में पूर्ण तत्परता व कर्मठता से अपने उत्तरदायित्व का वहन कर रही

हैं। हम इसे महिला सशक्तिकरण का एक रूप कह सकते हैं। परन्तु जब हम वास्तविकता के धरातल पर उतरते हैं तो पाते हैं कि तथा कथित आधुनिक युग में महिलाऐं घर और कार्यक्षेत्र दोनों स्थानों पर मानसिक व शारीरिक उत्पीड़न का शिकार हैं। महिला उत्थान के इस पक्ष के साथ एक दुखद पक्ष यह भी है कि जैसे-जैसे महिलायें शिक्षित हो कर पुरुषों के वर्चस्व माने जाने वाले कार्य क्षेत्र का भाग बन रही हैं, वैसे वैसे महिलायें उत्पीड़न व शोषण का शिकार हो रही है। आधुनिक युग में भी महिलाओं को हर स्तर और स्थान पर संरक्षण, कानूनी प्रावधानों की आवश्यकता है। भारत सरकार द्वारा घर से बाहर निकलकर कार्य करने वाली महिलाओं एवं शिक्षा प्राप्त करने वाली छात्राओं को शोषण मुक्त परिवेश देने के लिए सभी सरकारी व गैर सरकारी कार्यालयों में महिला प्रकोष्ठ के गठन के नियम को आवश्यक किया गया। कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में वर्ष 2007 में महिला प्रकोष्ठ की स्थापना की गयी। शैक्षिक सत्र 2018-19 में महिला प्रकोष्ठ का पुनः गठन किया गया जिसका उद्देश्य महाविद्यालय परिसर में लैगिंक भेदभाव एवं महिलाओं व छात्राओं की हर प्रकार की समस्या का समाधान करना है। इस सत्र के महिला प्रकोष्ठ के सदस्य इस प्रकार हैं–

संयोजिका- डॉ. अर्चना सिंह

सह संयोजिका- डॉ. दीप्ति वाजपेयी

सदस्य- डॉ. सुशीला

सदस्य- डॉ. प्रतिभा तोमर

सदस्य- डॉ. विनीता सिंह

प्रकोष्ठ की गतिविधियों का आरंभ दिनांक 12.9.2018 को प्रकोष्ठ के (अभिविन्यास कार्यक्रम) में हुआ। प्रकोष्ठ प्रभारी द्वारा छात्राओं को प्रकोष्ठ के सदस्यों से परिचय कराते हुए महिला प्रकोष्ठ के अन्तर्गत वर्ष भर संचालित होने वाले कार्यक्रमों व प्रकोष्ठ की कार्य प्रणाली से अवगत कराया। छात्राओं को "डरे नहीं सहे नहीं" व "चुप्पी तोड़ो, खुलकर बोलो" आदि मूल वाक्यों व महिला हेल्पलाइन नंबरो से अवगत कराया गया। इसी दिन महिला प्रकोष्ठ की छात्रा प्रतिनिधियों का चुनाव किया गया जो निम्न प्रकार है–

शिक्षा संकाय- कु. पायल, कु. सपना

कला संकाय- कु. निशा खान, कु. शालू, कु. शोभा बंसल, कु. निशा रावल

वाणिज्य संकाय- कु. सोनिका, कु. कोमल

विज्ञान संकाय- कु. नेहा, कु. प्रिया

दिनांक 1-10-2018 को नारी आंतरिक परिवाद समिति के व महिला प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्षेत्र में महिला उत्पीड़न समस्या व समाधान विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें प्रथम वक्ता श्रीमती ऊषा वत्स सदस्य महिला शक्ति सामाजिक संस्था ग्रेटर नोएडा व मुख्य वक्ता श्रीमती साधना सिन्हा (अध्यक्ष महिला शक्ति सामाजिक संस्था ग्रेटर नोयडा) ने महिला उत्पीड़न के सामाजिक घटकों व कारकों से अवगत कराते हुए उनके निस्तारण के उपाय बताये।

दिनांक 24 अक्टूबर, 2018 से 29 अक्टूबर, 2018 तक अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् व रेंजर्स इकाई के सहयोग में आत्म रक्षा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में सशक्त नारी सशक्त भारत के लक्ष्य के साधने का प्रयास किया गया। दिनांक 19-11-2018 को दैनिक जागरण समाचार पत्र के सहयोग से महिला सुरक्षा हमारा दायित्व विषय पर पुलिस संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में डॉ. अजयपाल शर्मा, आई.पी.एस, एस.एस. पी गौतम बुद्धनगर श्री पियूष सिंह, सी.ओ. ग्रेटर नोयडा देहात, श्री धर्मेन्द्र चन्देल ब्यूरी चीफ दैनिक जागरण का आगमन हुआ। एम.एस. पी महोदय ने छात्राओं को महिलाओं से संबधित कानून व अधिकारों की जानकारी दी व महाविद्यालय छात्राओं व प्राध्यापकों की कानूनी जिज्ञासाओं का समाधान किया। समस्त कार्यक्रम में एम.एस.पी. महोदय व छात्राओं के परस्पर सार्थक संवाद के माध्यम से कार्यक्रम को पूर्णता प्राप्त हुई।

दिनांक 14-12-2018 को नारी शक्ति अभियान के तहत नारी उत्पीड़न आंतरिक परिवाद प्रकोष्ठ व महिला प्रकोष्ठ से युक्त तत्वावधान में ग्राम बादलपुर, गौतम बुद्धनगर में स्कूल चलो अभियान का आयोजन किया गया। छात्राओं ने ग्राम में रैली निकालकर ग्रामीण महिलाओं को बालिका शिक्षा के लिए जागरूक किया व ग्राम प्रधान श्री विजय पाल जी की अध्यक्षता में संगोष्ठी का आयोजन कर महिलाओं व बालिकाओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया।

दिनांक 17.12.2018 को नेशनल कमीशन फॉर महिला के पत्रांक संख्या (एन.सी.डब्लू) फाईल न. 5-3-1 /2018 केपिसिटी बिलडिंग के अनुपालन में महिलाओं से संबधित क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में महाविद्यालय की 150 छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता में पुरस्कृत छात्राऐं निम्नवत् हैं-

प्रथम स्थान- पूजा शर्मा

द्वितीय स्थान- ज्योति राघव

द्वितीय स्थान- प्रियंका युद्गल

तृतीय स्थान- सोनम, मनीषा, शीतल चौधरी, मुनेश, अक्सा सैफी।

दिनांक 18-1-2019 को "भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका" विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विजेता छात्राऐं निम्नवत् है-

प्रथम स्थान मुर्सरत जहाँ, द्वितीय- स्मृति सचान तृतीय स्थान-राधा कुमारी

दिनांक 28.1.2019 को भारत की सशक्त महिलाएँ विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें निम्न छात्राओं ने स्थान प्राप्त किया।

प्रथम स्थान-प्रीति उपाध्यक्ष द्वितीय स्थान निधि मिश्रा, तृतीय स्थान-राधा कुमारी, सान्त्वना पुरस्कार-काजल कुमारी।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च 2019 को एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें प्रकोष्ठ सदस्य डॉ. विनीता सिंह द्वारा वर्तमान समय के स्त्री सुरक्षा विषय पर सारगर्भित व्याख्यान दिया गया।

इसके अतिरिक्त समय-समय पर छात्राओं की बैठक आहूत कर समिति सदस्यों द्वारा छात्राओं की समस्या एवं उनके निवारण हेतु प्रयास किया गया। उक्त सभी गतिविधियों का उद्देश्य छात्राओं किसी प्रकार के शोषण के प्रति जागरूक करना है।

पुरातन छात्रा सम्मेलन

डॉ. मिन्तु
प्रभारी

शिक्षण संस्थानों की स्थापना का उद्देश्य विद्यार्थियों को ज्ञान के प्रसार के साथ-साथ उनके जीवन का सर्वांगीण विकास करना है। जीवन में सफलता के उच्च शिखर पर पहुँचने के पश्चात् समय-समय पर आकर अपने प्राध्यापकों से मिलना इस बात का संकेत होता है कि महाविद्यालय अपने विद्यार्थियों को व्यवहारिकता भी सिखाता है। पुरातन छात्राओं को इस सम्मेलन द्वारा एक ऐसा मंच प्राप्त होता है जिससे वे अपने विचारों एवं प्रतिक्रियाओं को व्यक्त कर सकते हैं। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु दिनांक 13/02/2019 को पुरातन छात्रा सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें कार्यकारिणी सदस्यों के रूप में अध्यक्ष पूजा रानी, उपाध्यक्ष तनु भाटिया, सचिव चित्रा शर्मा तथा कार्यकारिणी सदस्यों के रूप में कंचन, मनीषा एवं सविता नियुक्त किए गए। सभी छात्राओं ने अपने-अपने अनुभव व्यक्त किए। काफी संख्या में छात्राओं ने इस सम्मेलन में सहभागिता की।

निःशुल्क प्रतियोगिता परीक्षा कोचिंग

श्री कनक कुमार
प्रभारी

वर्ष 2018-19 में 117 छात्राओं ने निःशुल्क प्रतियोगिता परीक्षा कोचिंग (I.A.S./P.C.S/SRF/NET/TET) में पंजीकरण कराया। जिसकी कक्षाएँ माह अगस्त 2018 से निरन्तर संचालित हैं। वर्ष 2017-18 में 10 JRF/NET एवं 24 UPTET/CTET छात्राओं ने सफलता प्राप्त की। छात्राओं के लिए निःशुल्क कक्षाएँ रोजगार दिलाने में अभूतपूर्व योगदान दे रही है। ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं को सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ। उक्त कक्षाएँ डॉ. जीत सिंह के मार्गदर्शन एवं श्री कनक कुमार के योगदान के साथ-साथ समिति के अन्य सदस्य डॉ. हरिन्द्र कुमार मो.वकार रजा, डॉ. सोनम शर्मा, डॉ. अरविन्द सिंह के सफल नेतृत्व में संचालित है।

छात्रवृत्ति

डॉ. हरिन्द्र कुमार
सहायक नोडल अधिकारी

वर्ष 2018-19 में पात्र 818 छात्राओं ने छात्रवृत्ति आवेदन पत्र प्रस्तुत किये जिसमें 720 छात्राओं को छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। इस वर्ष विगत वर्षो से अधिक छात्राओं को छात्रवृत्ति का लाभ प्राप्त हुआ। उक्त समिति के नोडल अधिकारी डॉ. जीत सिंह एवं सहायक नोडलधिकारी डॉ. हरिन्द्र कुमार के नेतृत्व में यह कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न हो पाया। इस सफलता का श्रेय छात्रवृत्ति समिति के समस्त पदाधिकारियों को जाता है।

राष्ट्रीय सेमिनार

"सूचना विस्फोट एवं 21वीं शताब्दी का युवाः सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ"

डॉ. शिवानी वर्मा
सेमिनार संयोजिका

"Information Explosion and the 21st century youth: Prospects and Challenges"

"सूचना विस्फोट और 21वीं शताब्दी का युवाः संभावनाएं एवं चुनौतियाँ" विषय पर महाविद्यालय में दिनांक 21 जनवरी 2019 को, उच्च शिक्षा विभाग, उ.प्र. द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ज्ञानात्मक मंथन की प्रक्रिया में भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों से आमन्त्रित 400 से अधिक विषय विशेषज्ञों एवं शोध छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

डॉ. प्रीति गौतम, निदेशक-उच्च शिक्षा, उ.प्र. ने मुख्य अतिथि के रूप में दीप प्रज्ज्वलित कर सेमिनार का उद्घाटन सत्र आरम्भ किया। गेस्ट ऑफ ऑनर प्रोफेसर भगवती प्रकाश शर्मा, कुलपति गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोयडा विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. प्रमोद कुमार वार्ष्णेय एवं प्रोफेसर अवनीश कुमार एवं विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. नसीब सिंह गिल की उपस्थिति ने आयोजन को भव्यता प्रदान की।

कार्यक्रम की अध्यक्ष एवं महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. दिव्या नाथ द्वारा मंच पर उपस्थित विद्वजनों का स्वागत शाल एवं पुष्पों द्वारा किया गया। डॉ. रश्मि कुमारी, एसोसिएट प्रोफेसर-हिन्दी द्वारा मंच संचालन किया गया। अपने स्वागत उद्बोधन में प्राचार्या-डॉ. दिव्या नाथ द्वारा सभी अतिथियों के स्वागत के साथ महाविद्यालय की रिपोर्ट भी प्रस्तुत की गई। डॉ. भगवती प्रकाश शर्मा ने आगे आने वाले समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स के प्रभावों एवम् भावी तकनीकी संभावनाओं से अवगत कराया। डॉ. नसीब सिंह गिल ने अपने संबोधन में युवाओं को तकनीकी को चुनौती के रूप में स्वीकार करने को कहा। साथ ही वैश्विक तकनीकी पटल पर भारतीय युवाओं के योगदान की चर्चा की। प्रोफेसर अवनीश कुमार द्वारा तकनीकी शब्दावली आयोग के कार्यों एवं उद्देश्यों की व्याख्या की। डॉ. पी. के. वार्ष्णेय ने अपने सरल और सहज शैली में तकनीकी के अनुशासनात्मक प्रयोग पर बल दिया। डॉ. प्रीति गौतम द्वारा युवाओं से ये अपेक्षा की गई कि वे ऐसी तकनीकी विकसित करें जो समाज के अन्तिम और अपेक्षित वर्ग के लिए सुलभ और लाभकारी हो।

सेमिनार संयोजिका डॉ. शिवानी वर्मा द्वारा सेमिनार के विषय पर प्रकाश डालते हुए, इस विषय से सम्बन्धित क्षेत्रों की व्याख्या की गई एवं सेमिनार विवरणिका (प्रोसीडिंग्स) के लिए प्राप्त शोध पत्रों एवं उनमें से प्रकाशन के लिए चयनित शोध पत्रों के बारे में बताया गया।

इस राष्ट्रीय सेमिनार के लिए लगभग 120 शोध पत्र प्राप्त हुए जिनमें से 40 शोधपत्रों का संकलन सेमिनार की विवरणिका में प्रकाशित किया गया। सेमिनार में उद्घाटन सत्र के अन्त में डॉ. शिवानी वर्मा द्वारा सभागार में उपस्थित सभी अतिथियों के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

तकनीकी सत्र के आरम्भ में मुख्य वक्ता के रूप में बरेली विश्वविद्यालय की शिक्षा विभाग की प्रोफेसर डॉ. सन्तोष अरोरा ने अपने शोध पत्र द्वारा सोशल मीडिया एवं महिलाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला। इस तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. जे. डी. सोनी एवं सह-अध्यक्षता डॉ. मीनाक्षी लोहनी द्वारा की गई जिसमें प्रतिवेदक की भूमिका डॉ. विनीता सिंह द्वारा की गई। मंच संचालन करते हुए डॉ. सुशीला ने सत्र को निरन्तरता प्रदान की।

सेमिनार के द्वितीय तकनीकी सत्र में डॉ. तनुप्रिय चौधरी ने अध्यक्षता करते हुए अपने शोध पत्र प्रस्तुत किया एवं अन्य वक्ताओं को अपने प्रस्तुतिकरण के लिए प्रोत्साहित किया। सह-अध्यक्षता श्री कनक कुमार ने एवं प्रतिवेदन डॉ. सोनम शर्मा ने किया। सेमिनार के तृतीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. नफीस हैदर नकवी ने सूचना विस्फोट से होने वाले

लाभों पर प्रकाश डाला एवं साथ में युवाओं को सचेत रहने भी कहा। सह-अध्यक्षता श्रीमती नेहा त्रिपाठी द्वारा की गई एवं डॉ. सीमा देवी द्वारा प्रतिवेदक की भूमिका का निर्वाह किया गया। मंच संचालन डॉ. मणि अरोड़ा द्वारा करते हुए सभी अतिथियों एवं वक्ताओं का स्वागत किया गया। भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों से आये शोध कर्ताओं ने अपने प्रस्तुतिकरण द्वारा सेमिनार के उद्देश्यों की पूर्ति की एवं सभागार में उपस्थित सभी अतिथियों एवं शोधार्थियों ने सेमिनार के विषय पर चर्चा करते हुए लाभान्वित हुए।

सेमिनार के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. आजाद कुमार छिल्लर, विशिष्ट अतिथि डॉ. पीयूष जुनेजा एवं श्रीमती प्रिया जिन्दल मंच पर उपस्थित रहे। वक्ता के रूप में रेडियो, जॉकी श्री सुशांत जी ने अपने विभिन्न अनुभवों से सभी को लाभान्वित किया मंच संचालन करते हुए श्री संजीव कुमार द्वारा अतिथियों का स्वागत किया गया। सेमिनार के आयोजन सचिव डॉ. सत्यन्त कुमार द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। अन्त में आयोजन सचिव डॉ. दीप्ति वाजपेयी द्वारा सेमिनार को सफल बनाने हेतु सभी शिक्षकों, छात्राओं, शोधार्थियों, विषय विशेषज्ञों एवं अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

प्रसार व्याख्यान

डॉ. सीमा देवी
प्रभारी

शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। महाविद्यालय में छात्राओं को पाठ्यक्रम शिक्षा से इतर प्रसार व्याख्यान का आयोजन किया गया ताकि वंचित महत्वपूर्ण विषय पर व्याख्यान आयोजित किया जा सके।

इसी क्रम में सर्वप्रथम दिनांक 14 सितम्बर, 2018 को डॉ. मीना शुक्ला जी द्वारा "वैदिक साहित्य में स्वास्थ्य चेतना" विषयक व्याख्यान हेतु व्याख्याता के रूप में आमन्त्रित किया गया। फीड बैक फार्म द्वारा जानकारी हुई कि छात्राओं को विषय रूचिकर व नवीन प्रतीत हुआ है। तत्पश्चात श्रीमती पूजा जैन, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष (एन.सी.ई.आर.टी) द्वारा ओपन एक्सेस इन्फॉरमेशन रिसोर्सेज विषय पर दिनांक 17 नवम्बर, 2018 को व्याख्यान दिया गया। फीड बैक फार्म में ज्ञात हुआ कि छात्राओं को लाइब्रेरी पुस्तक खोजने में व्याख्यान सहायक है और हम आगे भी इस प्रकार के व्याख्यानों की अपेक्षा करते हैं।

इसी क्रम में दिनांक 4-12-18 को नागरिकों में "कानूनों के पालन की आदत आवश्यकता एवं समस्या" विषय पर श्रीमती ममता गौतम, सहायक प्रो. राजनीति विज्ञान द्वारा व्याख्यान प्रदान किया गया। फीड बैक फार्म में छात्राओं ने सुझाव दिया कि संविधान विषयक व्याख्यान सभी छात्राओं के लिए अत्यन्त आवश्यक है। ये व्याख्यान हमारे व्यक्तित्व विकास में अत्यन्त सहायक है।

महाविद्यालय छात्राओं के व्यक्तित्व विकास को ध्यान में रखते निरन्तर इसी प्रकार के नवीनतम विषयों पर समयानुसार व्याख्यान आयोजित कराता रहेगा।

इकोरेस्टोरेशन एवं ग्रीन आडिट

डॉ. प्रतिभा तोमर
प्रभारी

वर्ष 2018 के सत्र आरम्भ में गठित नवीन इकोरेस्टोरेशन व ग्रीन आडिट कमेटी के तत्वाधान में महाविद्यालय में पर्यावरण संरक्षण एवं सुधार हेतु अनेक कार्य किये गये। कमेटी के तत्वाधान में ओजोन दिवस के अवसर पर महाविद्यालय की छात्राओं एवं स्टाफ में पर्यावरण संरक्षण हेतु एक व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में एम.एम.एच. कॉलेज की डॉ. डिम्पल विज द्वारा बहुत ही रोचक तरीके से कूड़े कचरे को किस प्रकार ग्रीन मेन्योर से परिवर्तित किया जा सकता है

तथा उसे एक रोजगार के रूप में किस प्रकार अपनाया जा सकता है, इसकी जानकारी दी गई। डॉ. डिम्पल विज द्वारा ही महाविद्यालय ई-वेस्ट कलेक्शन बॉक्स व कम्पोजपिट का उद्घाटन किया गया। महाविद्यालय में छात्राओं को जागरूक बनाने के लिए विभिन्न स्थानों पर वेस्ट पृथक्करण चार्ट्स लगाये गये तथा गीले व सूखे कूड़े के लिए नीले व हरे कूड़ेदानों को रखा गया। महाविद्यालय की जैव विविधता का निर्धारण करने के लिए उपस्थित विभिन्न वनस्पतियों पर नम्बरिंग की गई तथा उन पर वनस्पतिक व सामान्य नाम वाली पट्टियाँ भी लगाई गई। महाविद्यालय में बिजली के नवीनीकरण स्त्रोत के रूप में एक एस. के.वी. सोलर पेनल की स्थापना जन्तु विज्ञान विभाग में की गई। ऊर्जा की बचत के लिए विभिन्न स्थानों पर एल.ई.डी.लाइट्स लगाई गई। पानी के अतिरिक्त बहाव को रोकने के लिए विभिन्न जगहों पर पुशबाल्ब भी लगाई गई।

कैरियर काउन्सलिंग एवं रोजगार प्रकोष्ठ

डॉ. आशा रानी
प्रभारी

श्रीमती शिल्पी
सह-प्रभारी

महाविद्यालय की छात्राओं को उच्च शिक्षित कर आत्मनिर्भर बनाने तथा कैरियर के विभिन्न सम्भावनाओं से अवगत कराने के उद्देश्य से वर्तमान सत्र में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

दिनांक 29.08.18को महाविद्यालय द्वारा कैरियर काउन्सलिंग एंव रोजगार प्रकोष्ठ के सौजन्य से प्राचार्या महोदया की अध्यक्षता में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए उनके सफल भविष्य हेतु अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मेघा (स्वयं सेवी संस्थान) से आए श्री आदित्य कुमार एवं सिद्धार्थ तिवारी ने अपने सारगर्भित व्याख्यानों द्वारा छात्राओं को सॉफ्ट स्किल, प्रेजेन्टेशन स्किल, इन्टरव्यू स्किल, पब्लिक कम्यूनीकेशन, फ्यूचर प्लानिंग, लीडरशिप, बायोडाटा लेखन कला इत्यादि विभिन्न रोजगारोपयोगी व्यवहारिक बिंदुओं से अवगत कराया। उक्त समूह द्वारा 30 घंटे का एक कोर्स महाविद्यालय में चलाये जाने की योजना बनाई गई, जिसमें, एक बैच में 35 छात्राएँ नामांकित की जाना सुनिश्चित किया गया। कोर्स का शुल्क 2500 था, जो कि प्राचार्या महोदया के प्रयास स्वरूप नि:शुल्क कर दिया गया। इस क्रम में महाविद्यालय में 35 छात्राओं के दो बैच पंजीकृत कराकर 30 घंटों का "Short term course on personalty Development" पूर्ण किया गया। प्राचार्या महोदया के निर्देशन में Career counsilng & Placement का पृथक सूचना-पट लगाया गया, जिसपर समय-समय पर कौशल विकास, रोजगार सम्बन्धित समाचार एवं नोटिस चस्पा की गई। दिनांक 25.10.18 को IGIA Indira Gandhi Institute of Aeronantic) द्वारा महाविद्यालय में प्लेसमेंट कार्यक्रम आयोजन किया गया, जिसमें 100 से ज्यादा छात्राओं ने प्रतिभाग किया। यह कार्यक्रम दो चरणों में सम्पादित किया गया। प्रथम चरण में लगभग 110 छात्राओं ने एयर होस्टेस केबिन क्यू के साक्षात्कार के लिए प्रतिभाग किया। IGIA द्वारा चार छात्राओं को दूसरे चरण के साक्षात्कार के लिए चयनित किया गया।

दिनांक 02.11.18 को "प्रबन्धन कुशलता विकास एवं लाइफ स्किल डेवलपमेंट" पर एक व्याख्यान आयोजित किया गया। दिनांक 15 नवम्बर 2018 को Medha organisation द्वारा "कैरियर मोटिवेशन" पर व्याख्यान आयोजित किया गया। इसी क्रम में Medha organisation से आए विषय-विशेषज्ञों मिस शिवानी एवं श्री गौरव द्वारा "Different Job trend in today's time" पर व्याख्यान आयोजित किया गया। दिनांक 19.11.18 को NITRA गाजियाबाद द्वारा "Scope of Fashion designing in export house" पर प्रेजेन्टेशन आयोजित की गई। मुख्य वक्ता के रूप में NITRA के श्री एम.एम. तिवारी एवं श्री संजय कुमार ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया। दोनों ने छात्राओं को Fashion & Textile Industry में रोजगार के अवसर एवं कपड़ा निर्माण के विभिन्न चरणों की जानकारी उपलब्ध कराई। दिनांक 13.12.18 को "आयुर्वेद क्षेत्र में कैरियर के विभिन्न आयाम" शीर्षक पर व्याख्यान आयोजित किया गया। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. दिव्या नाथ ने छात्राओं को कैरियर के विभिन्न पहलुओं के बारें में जानकारी देते हुए छात्राओं को प्रेरित किया। इन्टरनेशनल मार्केटिंग कॉरपोरेशन (IMC) के उपस्थित मुख्य वक्ता आदित्य कुमार एवं श्री विक्रम सिंह जी उपस्थित थे। आदित्य कुमार ने अपने व्याख्यान में आयुर्वेद क्षेत्र में विभिन्न उद्योगों के बारे में जानकारी छात्राओं

को दी। श्री विक्रम सिंह ने तुलसी, ऐलोवीरा, नीम, आँवले, लहसुन इत्यादि के लाभकारी गुण बताएँ। आज के भागदौड़ भरे जीवन में आयुर्वेद एवं नैचुरोपैथी के लाभ बताते हुए इस क्षेत्र के रोजगार अवसरों की जानकारी छात्राओं को उपलब्ध कराई।

साथ ही महाविद्यालय के प्रत्येक संकाय एवं विभागों द्वारा कैरियर सम्बन्धित व्याख्यान आयोजित किए गये। इस व्याख्यानों में छात्राओं को विषय से सम्बन्धित रोजगार अवसरों एवं उनके विस्तृत क्षेत्रों की जानकारी उपलब्ध कराई गई।

दिनांक 20.02.19 को कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर एवं मेघा संस्थान द्वारा "प्लेसमेंट ड्राइव-2019" आयोजित किया गया। इस एक दिवसीय रोजगार मेले में महाविद्यालय की छात्राओं को रोजगार के विभिन्न और बहुआयामी अवसर उपलब्ध कराए गए। इस अवसर पर एच.डी.एफ.सी., लाइफ इंसोरेंस, पिकनारा, मिंडा ऑनक्यो एवं गाँधी फेलोशिप फाउंडेशन द्वारा छात्राओं को व्यवसायिक अवसर उपलब्ध करवाए गए। उपरोक्त कार्यक्रमों की प्रतिपुष्टि छात्राएँ से भरवाकर, उनका मूल्यांकन कराया गया।

महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. दिव्या नाथ के निर्देशन में कैरियर काउन्सलिंग समिति की संयोजिका डॉ. आशा रानी एवं समिति सह-प्रभारी श्रीमती शिल्पी, डॉ. सीमा देवी एवं सत्यन्त कुमार ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया एवं भविष्य में भी रोजगार प्रसार हेतु निरंतर क्रियाशील है।

साहित्यिक-सांस्कृतिक परिषद्

डॉ. दीप्ति वाजपेयी
प्रभारी

साहित्यसंगीतकला विहीनः, साक्षात्पशुः पुच्छविषाण हीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानस्तभागधेयं परमं पशुनाम्॥

साहित्य, संगीत एवं कला जीवन के सौन्दर्य को अनुप्रमाणित करने वाले तत्व है। इनके अभाव में मनुष्य, मानव कहलाने योग्य नहीं रहता। वस्तुतः संस्कृति मानव की साहित्य, संगीत एवं कलात्मक जीवन की समग्रता का नाम है। अतः छात्राओं के समग्र विकास हेतु प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी साहित्यिक-सांस्कृतिक परिषद् का गठन कर छात्राओं की साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रतिभाओं को निखारने के साथ-साथ उनके कौशल में वृद्धि करने का प्रयास किया गया।

साहित्यिक-सांस्कृतिक समिति के समस्त सदस्यों के सहयोग से महाविद्यालय में दिनांक 3 अक्टूबर से 09 अक्टूबर तक "साहित्यिक-सांस्कृतिक सप्ताह" का आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत डॉ. बबली अरूण के निर्देशन में सर्वप्रथम नृत्य एवं गायन प्रतियोगिता के माध्यम से सप्ताह का शुभारम्भ किया गया।

इसके पश्चात् श्रीमती शिल्पी के संयोजन में रंगोली एवं मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें सभी संकायों की छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। डॉ. अर्चना सिहं के नेतृत्व में स्वरचित कविता एवं कहानी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। स्वरचित कविता प्रतियोगिता के आयोजन अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कवि श्री सुरेश नीरव, डॉ. सतीश वर्धन, डॉ. राज चैतन्य एवं डॉ. राजवीर ने उपस्थित होकर स्वयं छात्राओं की कविताओं का निर्णय दिया एवं अपनी कविताओं के माध्यम से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

सप्ताह के चतुर्थ दिवस पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डॉ. ममता उपाध्याय के निर्देशन एवं संचालन में सम्पन्न हुई इस प्रतियोगिता का विषय था-धरती का बढ़ता तापमान एक वैश्विक समस्या। जिसमें बी.एड एवं बी.एस.सी. की छात्रायें विजयी रही।

इसके उपरान्त निबन्ध एवं पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डॉ. दीप्ति वाजपेयी द्वारा निर्देशित निबन्ध प्रतियोगिता

का विषय था- "सोशल मीडिया एवं युवा वर्ग"। इसके साथ ही डॉ. शालिनी तिवारी द्वारा पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें छात्राओं ने भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित हृदयाकर्षक पोस्टर विर्निमित किये।

साहित्यिक-सांस्कृतिक सप्ताह का समापन दिनांक 09/10/18 को लघु नाटिका प्रतियोगिता के माध्यम से हुआ। डॉ. सुशीला एवं श्रीमती नेहा त्रिपाठी के निर्देशन में आयोजित इस प्रतियोगिता में बी.एड. की छात्राओं ने प्रथम एवं बी.एस.सी. की छात्राओं ने द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर एमिटी विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने भी अपनी प्रस्तुति दी।

उपर्युक्त सभी प्रतियोगिताओं में स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को वार्षिकोत्सव में पुरस्कृत किया गया।

INTERNAL QUALITY ASSURANCE CELL

Dr. Kishor Kumar
Co-convener-IQAC

In order to monitor standards of the higher educational institutions the UGC has established the National Assessment and Accreditation Council (NAAC) as an autonomous body, under section 12CCC of its Act in September 1994. NAAC has been instilling a momentum of quality consciousness amongst Higher Educational Institutions, aiming for continuous improvement. The Km. Mayawati Government Girls Post Graduate, Badalpur, Gautambuddha Nagar has emerged as one of the premier government college of Uttar Pradesh with Under Graduate, Post Graduate, Ph.D., Post-Doctoraland Vocational Studies in different disciplines. The College has good infrastructure, well qualified faculty members, students with great potential and environment of teaching-learning & research by regular multidimensional interaction with internal and external experts. As an internal mechanism for sustenance, assurance and enhancement of the quality culture of education, Km. Mayawati Government Girls Post Graduate, Badalpur, Gautambuddha Nagar has established the Internal Quality Assurance Cell (IQAC) for maintaining the momentum of quality consciousness, which is conceived as a mechanism to build and ensure a quality culture at the college level to meet the diverse needs of the stakeholders. The IQAC is meant for planning, guiding and monitoring Quality Assurance and Quality Enhancement activities of the college. The IQAC channelizes and systematizes the efforts and measures of the college towards academic excellence and is a facilitative and participative organ of the college. The IQAC is a driving force for ushering in quality, by working out intervention strategies to remove deficiencies and enhance qualities.

To create a culture of excellence, three IQAC meetings have been held during this session.All the stakeholders including the Chairperson, academicians, students, alumni, parents & public- NGO-Industry representatives, participated and contributed enthusiastically with tangible and intangible efforts. IQAC with collective spirit of college proposed some new targets and goals to achieve in the coming future, specifically for every next quarter. IQAC regularly introspects & analyses its goals and achievements specially the gap between proposed target and outcome. With its collective spirit the institution achieved some new milestones in this session

1. Effective mentoring system has been implemented in the college wherein all the students have

been assigned to teachers for guidance. The mentors (teachers) have all the information related to their mentees (students) allocated to them so if the students have any challenges related to their studies they can resolve it through their mentors.

2. Ten Certificate courses have commenced in the college from November and all of these courses are approved by the Chaudhary Charan Singh University Meerut. All the conveners and team of particular course design curriculum/ content objectively, so it's become a prototype effort for rest of the colleges which come under the University.

3. Two Bachelor of Vocational Course entitled “Airline, Tourism and Hospitality Management (ATHM) & Medical Lab and Molecular Diagnostic Technology (MDMT)" has been introduced and commenced effectively. The college has got grants for the above courses from University Grants Commission, New Delhi.

4. Commencement of M.Sc.–Zoology with paperless teaching and internal examination facilities.

5. Organized a successful National Seminar on 'Information Explosions and the 21st Century Youth: Prospects and Challenges' on 21st January, 2019.

6. Renovation of 4 smart class rooms has been completed.

7. Two wheel chairs are available for differently abled persons in the college which were donated by Lions Club Noida.

8. Construction of three big rooms with temporary roof has been done and these rooms have been allocated to NCC, NSS & Rangers.

9. Thorough cleaning of college campus has been done to maintain Green and clean campus.

10. Compost pit has been created in college and is being utilized successfully.

11. Proper establishment of waste segregation, detailed green audit report has been published.

12. MOU has been signed for waste paper recycling with JAAGRUTI. 1,500 Kg of waste paper has been taken by them and in exchange of that paper rim has been given to college.

13. Various MoUs have been signed in the college which are mentioned below –

    a. Guatam Buddha University, Greater Noida

    b. Namo Gange

    c. ITS Engineering College

    d. Adon System

    e. QT Analytics

    f. IGIS New Delhi

    g. Clear Medi Hospital & Cancer Centre Delhi

14. Two days' workshop in textile was organized by NITRA Ghaziabad.

15. Four one day workshops have been organized on e-google, Intellectual Property Right, Investment Awareness, EmotionalIntelligence.

16. Blood donation camp was organized in college premises on 1st December, 2018 with the help of Bhagwan Buddha Charitable Blood Bank in which free hemoglobin checkup of students was done & blood was donated by students and staff of the college.

17. Establishment of sanitary pad vending & disposal of used sanitary napkins machine was done by a Noida based NGO.

18. Establishment of Day Care Centre (crèche)-institution provides supervision and care of infants and young children during the daytime.

19. Beautification of college premises by Department of Drawing and Painting & B.Ed. faculty.

20. Establishment of state of art Gym by Department of Physical Education.

21. Ten sewing machines have been donated to Home Science Department by Navratan Foundation.

22. A self-defense program was organized during 24th-29th Oct 2018 to give training to students.

23. A quiz competition was organized on 17th Dec 2018 on laws related to women on the instructions received by National Commission for Women and the winners were rewarded by cash prize.

24. Various industrial and educational tours were organized by several departments.

25. Parent Teacher Meet & Alumni meet were organized successfully with huge representation.

26. A demonstration was given by Wordsworth Company to improve the standards of Software English language lab.

27. Quarterly Publication of College Newsletter was started from this session 2018-19.

28. Establishment of CCTV camera with audio facility in most of the class room.

29. Fulfillment of institutional social responsibility- establishment the wall of welfare (नेकी की दीवार) where old cloths are hung for the use of people of locality.

30. Promotion of ethical values through display of motivational thoughts on all the college buildings.

31. Organized systematic placement drive and career fair with the help of 'Medha' NGO.

32. Entrepreneurship development activities and exhibition by Department of Home Science.

33. ISO 9001:2015 Quality Certification by Otabu Certification Limited (UK)- For Quality Education.

34. Expansion of research activities- More than 50 scholars are pursuing their research.

With all these achievement we would like to mention it's our collective effort by virtue of which the college is regularly moving towards excellence, for which we are thankful to all the stakeholders. The college has achieved so much but excellence is a process, so we have to keep moving towards the fulfilment of our vision and mission.

स्वामी विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र

डॉ. किशोर कुमार
समन्वयक

विभिन्न युग प्रवर्तक महान विभूतियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अकादमिक जगत तथा जन सामान्य को अवगत कराने और उनके सम्बन्ध में तर्क रहित अवधारणाओं के समूल शमन हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा "भारतीय युग प्रवर्तक सामाजिक विचारक" योजना के अन्तर्गत विभिन्न अध्ययन केन्द्रों की स्थापना की गई।

वस्तुतः दार्शनिकों का दर्शन, परिकल्पना और प्रतिभा सदैव वैश्विक होती है और साथ ही उनकी दृष्टि किसी एक क्षेत्र तक सीमित न रहकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को समृद्ध करती है। स्वामी विवेकानन्द एक युग प्रवर्तक विचारक के रूप में अपने जन्म के 151 वर्ष पश्चात एवं अपने शरीर त्याग के 112 वर्ष पश्चात् मानवतावाद, धर्म-आध्यात्म, योग, कर्म, समाज एवं राष्ट्र आदि समस्त विषयों पर पूर्ण प्रांसगिक है। वर्तमान भारत में विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक नैतिक, आर्थिक, एवं राजनैतिक चुनौतियाँ विद्यमान है यथा धर्म के सम्बन्ध में एकान्तिक दृष्टिकोण ने साम्प्रदायिकता के प्रसार में बढ़ावा दिया है। सामान्यतः धर्म जीवन की अलौकिक आस्था एवं सर्वोच्च सत्य को जानने की अभीप्सा है। जब से मानव ने शब्द संरचना का ज्ञान अर्जित करना आरम्भ किया, सभ्यता व संस्कृति के नये-नये सोपान रचना और आचरण संहिता का सृजन कर समाज को सभ्य तरीके से संचालित करने का क्रम आरम्भ हुआ। भौतिक उपलब्धियों का सुख मानव को लम्बे समय तक बांधे नहीं रख सका फलतः भौतिकता से भिन्न परमार्थ के धरातल पर आध्यात्मिक चिंतन की धारा फूटी और विस्तृत हुई। इस आध्यात्मिक चिंतन का लक्ष्य था शाश्वत सुख की प्राप्ति। धर्म और आध्यात्मिकता का यह सच्चा स्वरूप विश्व के सभी धर्मों का आधार है। स्वामी विवेकानन्द धर्म के इसी स्वरूप को स्वीकार करते है। उनकी पुस्तक "धर्म रहस्य" के अनुसार धर्म मानव को बन्धनों से मुक्त करने का सशक्त माध्यम है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब धर्म को राजनीति, सत्ता और शक्ति पाने के लोभ से जोड़ दिया जाता है तथा धर्म के प्रति संकीर्ण प्रवृत्ति अपनाई जाती है तो इन परिस्थितियों में स्वामी विवेकानन्द के विचार अधिक प्रासंगिक हो जाते है।

स्वामी विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र स्वामी विवेकानन्द के उपर्युक्त जीवन दर्शन का लाभ छात्राओं एवं उनके माध्यम से जन सामान्य तक पहुँचाने हेतु कृत संकल्प है। इस दृष्टि से छात्राओं हेतु सम्पूर्ण सत्र में व्याख्यान आयोजित किए गये एवं साथ ही साथ "स्वामी विवेकानन्द के आध्यात्मिक एवं शैक्षिक विचार" पर निबन्ध प्रतियोगिता भी आयोजित की गई।

दिनांक 12 जनवरी, 2019 को स्वामी विवेकानन्द के जन्म दिवस पर अध्ययन केन्द्र के तत्त्वावधान में राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया गया। इस अवसर पर डॉ. अरूण मोहन शैरी-वरिष्ठ उपाध्यक्ष एच. सी. एल. टेलेंट केयर ने महाविद्यालय में उपस्थित होकर स्वामी विवेकानन्द के प्रेरक विचारों के आलोक में छात्राओं को सम्बोधित करते हुए आत्मसम्मान के साथ किस प्रकार आत्म निर्भर बनकर अपनी व राष्ट्र की उन्नति कर सकते है, इस विषय पर विस्तार से प्रभावशाली व्याख्यान दिया। प्राचार्या द्वारा उनके उद्बोधन को व्यवहारिक और प्रेरणादायी बताते हुए उनका धन्यवाद ज्ञापन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन एवं संचालन स्वामी विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र के समन्वयक डॉ. किशोर कुमार द्वारा किया गया, जिसमें महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकों एवं छात्राओं ने प्रतिभाग किया। स्वामी विवेकानन्द के विचारों से प्रभावित होकर शोध-छात्रा कु. रश्मि डॉ. किशोर कुमार के निर्देशन में "धर्म, अध्यात्म एवं मानवतावाद के परिप्रेक्ष्य स्वामी विवेकानन्द के कार्यों का मूल्यांकन एवं प्रासंगिकता" विषय पर शोध कार्य (पी.एच.डी.) भी कर रही है। आगामी सत्रों में स्वामी विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार कराने हेतु कटिबद्ध है।

राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (रुसा)

डॉ. दिनेश चन्द शर्मा, समन्वयक
डॉ. मीनाक्षी लोहानी, सह-समन्वयक

उच्च शिक्षण संस्थाओं में आधारभूत सुविधाओं के विस्तार एवं विकास हेतु राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (रुसा) का आरम्भ किया गया है। रुसा के अनुदान में केन्द्र एवं राज्य सरकार का अंशदान 60:40 के अनुपात में है। रुसा के अर्न्तगत महाविद्यालय को विभिन्न कार्यों हेतु कुल 2 करोड़ का अनुदान स्वीकृत किया गया, जिसके सापेक्ष वर्ष 2016 से अद्धतन कुल 1.80 करोड़ की धनराशि निम्नवत् अवमुक्त की गयी है। अवमुक्त धनराशि में से महाविद्यालय द्वारा 98.78 प्रतिशय का उपभोग महाविद्यालय द्वारा रुसा द्वारा निर्धारित कार्यों में किया गया है।

महाविद्यालय एवं छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु रुसा के माध्यम से अनेक कार्य किये है जैसे कि कम्प्यूटर लैब, भाषा लैब की स्थापना, 15 लैपटॉप, 10 प्रोजैक्टर, कल्चर लैब, सोलर पैनल आदि।

रुसा अनुदान से महाविद्यालय में प्रथम बार एम.एस.सी. (जन्तु विज्ञान) आरम्भ की गई साथ ही एम.एस.सी. (जन्तु विज्ञान) में अभिनव प्रयोग के तौर पर देश में पहली बार पेपर विहीन/पर्यावरण अनुकूल कक्षायें आरम्भ की गई, जिसके लिये एम.एस.सी. की समस्त छात्राओं को एप्पल कम्पनी के आई-पेड एवं पेन दिये गये। छात्राओं द्वारा नोट्स, असाईनमेंन्ट, आंतरिक परीक्षा, फाईल आदि समस्त कार्य उक्त के माध्यम से किये जा रहे हैं तथा विश्वविद्यालय परीक्षा उक्त के माध्यम से कराने हेतु कुलपति महोदय से अनुरोध किया गया है।

Main Head	Sub-Head	Sanctioned Grant	Utilized Grant	Balance	Mode of Purchase
Construction	M.Sc. Class Room	2500000	2500000	0	Govt. Agency-RNN
Construction	M.Sc. Lab	3952000	3952000	0	Govt. Agency-RNN
Construction	Toilet Block	600000	600000	0	Govt. Agency-RNN
Renovation and Upgradation	Library	420000	0	420000	
Renovation and Upgradation	Seminar/MP Hall	2500000	2500000	0	eTender
Renovation and Upgradation	Toilet	500000	499978	22	Tender (after eTender)
Renovation and Upgradation	Admin Block	200000	200000	0	Tender (after eTender)
Renovation and Upgradation	Laboratory	1500000	1499950	50	eTender
Renovation and Upgradation	Campus Development	780000	780000	0	eTender
Renovation and Upgradation	Smart Class-2	1188000	0	1188000	
New Equipment	Computer Lab	2774000	2202625	571375	eTender/GEM
New Equipment	Laboratory (M.Sc.)	2000000	2000000	0	eTender
New Equipment	Other Equipment	200000	173232	26768	eTender
New Equipment	Sports	500000	500000	0	Tender (after eTender)
New Equipment	Books	386000	373002	12998	Tender (after eTender)
Total		20000000	17780787	2219213	98.78 % utilization

महाविद्यालय परिवार

प्राचार्या-डॉ. दिव्या नाथ

कला संकाय

हिन्दी विभाग

1. डॉ. रश्मि कुमारी — एसो. प्रो.
2. डॉ. अर्चना सिंह — एसो. प्रो.
3. डॉ. जीत सिंह — एसो. प्रो.
4. डॉ. मिन्तू — असि. प्रो.

अंग्रेजी विभाग

1. श्रीमती जूही बिरला — असि. प्रो.
2. श्रीमती दीक्षा — असि. प्रो.
3. डॉ. विजेता गौतम — असि. प्रो.
4. डॉ. श्वेता सिंह — असि. प्रो.

संस्कृत विभाग

1. डॉ. दीप्ति वाजपेयी — एसो. प्रो.
2. डॉ. नीलम शर्मा — असि. प्रो.
3. डॉ. कनकलता यादव — असि. प्रो.

समाजशास्त्र विभाग

1. डॉ. सुशीला — असि. प्रो.
2. डॉ. हरेन्द्र कुमार — असि. प्रो.
3. डॉ. विनीता सिंह — असि. प्रो.

इतिहास विभाग

1. डॉ. आशा रानी — एसो. प्रो.
2. डॉ. किशोर कुमार — एसो. प्रो.
3. डॉ. निधि रायजादा — एसो. प्रो.
4. डॉ. अनीता सिंह — एसो. प्रो.
5. श्री अरविन्द सिंह — असि. प्रो.

गृहविज्ञान विभाग

1. डॉ. शिवानी वर्मा — एसो.प्रो.
2. श्रीमती शिल्पी — असि. प्रो.
3. डॉ. माधुरी पाल — असि. प्रो.

राजनीति शास्त्र विभाग

1. डॉ. आभा सिंह — एसो. प्रो.
2. डॉ. ममता उपाध्याय — एसो. प्रो.
3. डॉ. सीमा देवी — असि. प्रो.

भूगोल विभाग

1. डॉ. मीनाक्षी लोहानी — असि. प्रो.
2. श्री कनक कुमार — असि. प्रो.
3. श्रीमती निशा यादव — असि. प्रो.

अर्थशास्त्र विभाग

1. श्रीमती भावना यादव — असि. प्रो.
2. श्रीमती पवन कुमारी — असि. प्रो.

संगीत विभाग

1. डॉ. बबली अरुण — असि. प्रो.

शिक्षा विभाग

1. डॉ. सोनम शर्मा — असि. प्रो.

शारीरिक शिक्षा विभाग

1. डॉ. सत्यन्त कुमार — असि. प्रो.
2. श्री धीरज कुमार — असि. प्रो.

चित्रकला विभाग

1. डॉ. शालिनी तिवारी — असि. प्रो.

विज्ञान संकाय

जन्तु विज्ञान विभाग

1. डॉ. दिनेश चंद्र वर्मा — एसो. प्रो.

रसायन विज्ञान विभाग

1. श्रीमती नेहा त्रिपाठी — असि. प्रो.

वनस्पति विज्ञान विभाग

1. डॉ. प्रतिभा तोमर — असि. प्रो.

भौतिक विज्ञान विभाग

1. डॉ. ऋचा — असि. प्रो.

गणित विभाग

1. पद रिक्त

वाणिज्य संकाय

1. डॉ. अरविन्द कुमार यादव — असि. प्रो.
2. डॉ. मणि अरोड़ा — असि. प्रो.

शिक्षा संकाय

1. श्री बलराम सिंह — असि. प्रो.
2. डॉ. संजीव कुमार — असि. प्रो.
3. डॉ. रतन सिंह — असि. प्रो.
4. मो. वकार रजा — असि. प्रो.
5. श्रीमती रमाकान्ति — असि. प्रो.
6. डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार — असि. प्रो.
7. डॉ. सतीश चन्द — असि. प्रो.

महाविद्यालय में संचालित बी. वॉक पाठ्यक्रमों की विभिन्न गतिविधियाँ

CERTIFICATE OF RECYCLING

This certificate is issued to

Km. Mayawati Government Girls P.G. College
Badalpur, Sadopur ki Jhal, Uttar Pradesh 203207

in recognition of their association and commitment towards environmental sustainability in getting 1595.61 kgs of waste paper recycled* in January 2019.

**One tonne of recycled paper saves:*
- *17 Trees*
- *26,281 litres of water*
- *264 kgs of air pollution*
- *1,752 litres of oil*
- *4077 KW hours of Energy*
- *82.62 cubic feet of landfill space*

Authorised Signatories

Vasudha Vivek Mehta

For JAAGRUTI Waste Paper Recycling Services
Inform. Share. Inspire.

Works Address: F-3, Shopping Centre-1, Mansarover Garden, Delhi -110015
www.we-recycle.org; T: +91- 98101 91625, +91-99589 80909; e-mail: paper@we-recycle.org

अनुशास्ता मण्डल

प्रथम पंक्ति में दांए से बांए : डॉ. दिनेश चन्द शर्मा, डॉ. किशोर कुमार, डॉ. रश्मि कुमारी, डॉ. दिव्या नाथ (प्राचार्या), डॉ. दीप्ति वाजपेयी, डॉ. अर्चना सिंह, डॉ. आशा रानी
द्वितीय पंक्ति में दांए से बांए : डॉ. सत्यन्त कुमार, डॉ. अरविन्द यादव, डॉ. बलराम सिंह

सम्पादक मण्डल

प्रथम पंक्ति में दांए से बांए : डॉ. मीनाक्षी लोहनी, डॉ. निधि रायजादा, डॉ. दिव्या नाथ (प्राचार्या), डॉ. दीप्ति वाजपेयी (प्रधान सम्पादिका), श्रीमती नेहा त्रिपाठी
द्वितीय पंक्ति दांए से बांए : डॉ. नीलम शर्मा, डॉ. अरविन्द कुमार यादव, डॉ. दीक्षा

रेंजर्स, एन.सी.सी., एन.एस.एस. समिति

प्रथम पंक्ति में दांए से बांए : डॉ. मीनाक्षी लोहनी, डॉ. दीप्ति वाजपेयी, डॉ. दिव्या नाथ (प्राचार्या), डॉ. अर्चना सिंह, श्रीमती शिल्पी
द्वितीय पंक्ति में दांए से बांए : डॉ. बलराम, श्रीमती नेहा त्रिपाठी, श्रीमती रमाकान्ति, डॉ. ऋचा, डॉ. भावना यादव, डॉ. विनीता सिंह, डॉ. माधुरी पाल, डॉ. सुशीला, डॉ. अरविन्द यादव

Certificate

Otabu

Certificate of Registration

This is to certify that

KM. MAYAWATI GOVERNMENT GIRLS P.G. COLLEGE

BADALPUR, GAUTAM BUDHA NAGAR - 203207, (U.P.), INDIA

has been assessed and certified by Otabu Certification Limited as meeting the requirements of

ISO 9001: 2015

Quality Management System

For the following activities

PROVISION OF QUALITY EDUCATION FOR UNDER GRADUATE, POST GRADUATE, VOCATIONAL COURSES & PH.D

Date of Registration	: 15 May 2019
1st Surveillance Due	: 14 May 2020
2nd Surveillance Due	: 14 May 2021
Recertification Due(subject to the company maintaining its system to the required standard)	: 14 May 2022

Certificate No:- 190515609

To Verify this certificate please visit at www.otabucert.co.uk

OTABU CERTIFICATION LIMITED (UK) Otabu

SCOTLAND ACCREDITATION FORUM SAF

Authorised Signatory

Otabu Certification Limited (UK)

Validity of this Certificate is subject to Annual Surveillance audits done successfully

This Certificate of Registration remains the Property of Otabu Certification Limited and shall be returned immediately upon request.

Email:- info@otabucert.co.uk Website:- www.otabucert.co.uk

Suite 48, 88-90 Hatton Garden, London, EC1N 8PN, UK

Scanned with